भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड

कार्पोरेट कार्यालय की छमाही पत्रिका

अंक 20 (अक्टूबर 2025 से मार्च 2026)

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

राजभाषा दृष्टि
RAJBHASHA VISION

संस्थान के कार्यकलाप के हर क्षेत्र में राजभाषा हिंदी को सरल रूप में अपनाना।

To adopt Official Language Hindi in every sphere of activity of the Company in its simple form.

राजभाषा ध्येय
RAJBHASHA MISSION

प्रतिबद्धता, प्रेरणा और प्रोत्साहन द्वारा हिंदी में मूल कार्य करने की संस्कृति को आत्मसात करना और राजभाषा हिंदी को मौखिक, लिखित और इलेक्ट्रॉनिक सम्प्रेषण के माध्यम के रूप में अपनाना ।

To imbibe a culture of doing original work in Hindi through Commitment, Motivation and Incentive and to adopt Rajbhasha Hindi as the spoken, written and electronic medium of communication.

विषय–सूची

राजभाषा कार्यान्वयन मनसा...वाचा...कर्मणा...

1. साथी एवं भारती 2
2. प्रमुख प्रशासनिक शब्दावली जानें.. 4
3. महत्वपूर्ण रक्षा–इलेक्ट्रॉनिकी शब्दावली जानें.... 5
4. प्रमुख द्विभाषी टिप्पणियाँ 6
5. अखिल भारतीय बीईएल राजभाषा सम्मेलन 7
6. वार्षिक कार्यक्रम 2026–27 8
7. प्रोत्साहन योजना 10
8. प्रकाशन 12

नागार्जुन पुरस्कार योजना के तहत पुरस्कृत तकनीकी लेख

9. मानव–मशीन इंटरफेस में जनरेटिव एआई, शिवानी कपूर, सीआरएल–गाज़ियाबाद 14
10. इलेक्ट्रॉनिक युद्ध में कृत्रिम बुद्धिमत्ता–लाभ, जोखिम और चुनौतियाँ, चेरुकुरि फणि माधुरी, हैदराबाद 18

कर्मचारियों की सृजनशीलता

11. दशहरा–बुराई पर अच्छाई की विजय का पर्व, यादवेन्द्र, सीआरएल गाजियाबाद 24
12. शक्ति, संस्कृति और आंतरिक जागृति का महापर्व–दुर्गा पूजा, पूजा गोस्वामी, सीआरएल गाजियाबाद 27
13. दीपावली के दीप सा बन जाऊँ मैं, सत्यप्रकाश राय, बेंगलुरु कॉमप्लेक्स 29
14. नाग पंचमी–प्रकृति और आस्था का अद्भुत संगम, सोनल यादव, नवी मुंबई 30
15. पंजाब की माटी और अध्यात्म का संगम–लोहड़ी व गुरुपर्व के सांस्कृतिक आयाम, डॉ. अक्षय लोहट, पंचकुला 31
16. छठ का ये त्योहार, अंकिता कुमारी, सीआरएल गाजियाबाद 33
17. गणगौर पूजा, आभा श्रीवास्तव माथुर, राष्ट्रीय विपणन–दिल्ली 34
18. ओणम एकता समृद्धि और परंपरा का महापर्व, सुरेश हजाम, मचिलीपट्णम 36
19. तमिलनाडु में पोंगल, मकर संक्रांति और महाशिवरात्रि का उत्सव, श्यामलाल दास, चेन्नई 38
20. हरित दीपावली, सुनील कुमार सिंह, बेंगलूरु कॉम्पलेक्स 40
21. त्याग, करुणा और मानवता का संदेश–गुड फ्राइडे, नवजोत पीटर, गाज़ियाबाद कॉमप्लेक्स 41
22. गुड़ी पाड़वा, गोंजारे विनोद लक्ष्मन, नवी मुंबई 44
23. ईद का त्योहार, संगेपल्ली सुरेंदर रेड्डी, हैदराबाद 45
24. विषु, के हिमा बिंदु, सीआरएल, बेंगलुरु 47
25. हमारी पहचान हमारे पर्व, वी सुरेश कुमार, हैदराबाद 48
26. युगादि–नव वर्ष का मंगल पर्व, डॉ गोपालकृष्ण एच एल, निम्मलूरु 49
27. रंग–बिरंगा भारत, निकिता कुमारी, कार्पोरेट कार्यालय, बेंगलूर 51
28. अभी शेष है, अवधेश कुमार सिंह, कार्पोरेट कार्यालय, बेंगलूर 52
29. गौरी पूजा, मनोगरन, बेंगलूर कॉमप्लेक्स 53
30. वरलक्ष्मी व्रतम, पिंटु सिंह, हैदराबाद 54
31. श्री गणेश चतुर्थी, संजय बबन बोहाडे, पुणे 56
32. गणेश चतुर्थी–भारत की जीवंत संस्कृति, सतीश गुंजाळ, पुणे 57
33. उत्तराखण्ड का लोकपर्व–फूलदेई, माधुरी रावत, कोटद्वार 58
34. कर्नाटक के प्रमुख त्योहार, रेखा एस हेरेंजाल, कार्पोरेट कार्यालय 59
35. होली खुशियों और रंगों का त्योहार, अर्चना सिंह मलिक, गाज़ियाबाद कॉमप्लेक्स 64
36. बीईएल राजभाषा गतिविधियां 67
37. आइए हिंदी माध्यम से कन्नड़ा सीखें... 83
38. वर्ग पहेली भरें, शब्द ज्ञान बढ़ाएं... 84
39. नवप्रभा – हर अंक विशेषांक 85
40. हमारे हिंदी साहित्यकार 86

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

कार्पोरेट राजभाषा कार्यान्वयन समिति

श्री मनोज जैन
सीएमडी, अध्यक्ष

श्री विक्रमन एन
निदेशक (मानव संसाधन)
उपाध्यक्ष

श्री दामोदर भट्टड एस
निदेशक (वित्त)
विशेष आमंत्रिती

श्री सुरेश कुमार के वी
निदेशक (विपणन)
विशेष आमंत्रिती

श्री हरि कुमार आर
निदेशक (अनु. व वि.)
विशेष आमंत्रिती

श्री कामेश कसाना
निदेशक (अन्य यूनिटें)
विशेष आमंत्रिती

श्रीमती रमा एस
महाप्रबंधक (वित्त), सदस्य

श्रीमती नीति पंडित
महाप्रबंधक (एस.पी.),
सदस्य

श्री रामकुमार बी
महाप्रबंधक (एच.आर.),
सदस्य

श्री प्रदीप कुमार सेठिया
महाप्रबंधक (आई.ए.),
सदस्य

श्रीमती रुचि पंत
महाप्रबंधक (टी.पी.),
सदस्य

चेतन जयसिंग पाटील औटी
अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

श्री राजशेखर टी एस
अपर महाप्रबंधक (सतर्कता)
सदस्य

श्री के रवि
अपर महाप्रबंधक (सी.सी.)
सदस्य

श्री अशोक कुमार के
अपर महाप्रबंधक (एम.एस.)
सदस्य

श्री श्रीनिवास एस
कंपनी सचिव
सदस्य

श्री नीरज कुमार चड्ढा
उप महाप्रबंधक (लाइसेंसिंग)
सदस्य

श्री श्रीनिवास राव
उप प्रबंधक (राजभाषा)
सदस्य सचिव

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक का संदेश

हमारे देश की एक बहुत बड़ी विशेषता, जो उसे अन्य अधिकांश देशों से अलग चरित्र प्रदान करती है, भाषाई समन्वय या भाषाई अनेकता में एकता है। वास्तव में भारत की अनेक भाषाओं को भाषा–परिवार के रूप में देखा जाना चाहिए और समन्वयवादी भाव से उन्हें एक पारिवारिक व्यवस्था के तहत स्वीकार करना चाहिए। भाषाई समन्वय देश को मज़बूत बनाता है। यही बात हमारी राजभाषा और हमारी संपर्क भाषा हिंदी पर सटीक रूप से लागू होती है। हिंदी का केंद्रीय महत्व इस रूप में सिद्ध हो चुका है। आजादी से पहले से ही हिंदी देश को जोड़ने का काम सफलतापूर्वक करती आ रही है। इसमें कोई संदेह नहीं कि व्यापार, जनसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी के इस जमाने में हिंदी ने संपर्क भाषा का पद बखूबी पा लिया है। हमारा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय अब हमारी सभी समृद्ध भारतीय भाषाओं से असंख्य शब्दों को आत्मसात् कर यानी अपनी प्रकृति में ढालकर इसे और भी समृद्ध बनाने का महती कार्य कर रहा है। वह हमारी क्षेत्रीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्द रूप, शैली और पदों को आत्मसात कर, शब्द भंडार को समृद्ध कर रहा है, यह अत्यंत सराहनीय प्रयास है। इतना ही नहीं, विभाग हिंदी के मानकीकरण और उसके पारिभाषिक शब्द भंडार पर भी सम्यक ध्यान दे रहा है। राजभाषा विभाग और सीडैक द्वारा विकसित बहुभाषी अनुवाद सारथी उपकरण से हिंदी को काफ़ी बढ़ावा मिल रहा है। भारतीय भाषाओं की मूलभूत एकता का कारण देश की संस्कृति की एकता है। भाषाई सौहार्द के संबंध में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपनी इन पंक्तियों में क्या सही बात कही है–

एक भाषा, एक जीव, इक मति के सब लोग,
तबे बनत है सबन सों, मिटत मूढ़ता सोग।

हमारी कार्पोरेट हिंदी पत्रिका **नवप्रभा** का यह 20 वां अंक भी भाषाई सौहार्द्र का अनुपम उदाहरण है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए ढेर सारी शुभकामनाएँ...

जयहिंद...

श्री मनोज जैन
अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

निदेशक (मानव संसाधन) का संदेश

देश के संविधान में हिंदी भाषा को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है किंतु केवल संवैधानिक दिशा–निर्देशों से ही राजभाषा हिंदी का पूरा विकास नहीं हो सकता है। हम सभी को राजभाषा हिंदी के साथ मानसिक और आत्मीय रूप से जुड़ना होगा और हिंदी की प्रगति के लिए ठोस कदम उठाते हुए उसकी समय–समय पर समीक्षा भी करनी होगी। इसलिए, सभी कार्मिकों को अपने कामकाज के हिस्से के रूप में राजभाषा हिंदी के कार्य में हुई प्रगति की समीक्षा कर, नित नवीन पहल करनी होगी ताकि संगठन में राजभाषा कार्यान्वयन सही ढंग से और सही दिशा में हो सके और एक स्वाभिमानी राष्ट्र के नागरिक होने के नाते हम दुनिया को दिखा सकें कि हमारी राजभाषा हिंदी है, हमारी संपर्क भाषा हिंदी है और लोगों के दिलों की भाषा भी हिंदी है।

भारत के धार्मिक जीवन के चारों धाम यानी बद्रीनाथ, रामेश्वरम, जगन्नाथपुरी और द्वारिकापुरी के बीच संपर्क प्रारंभ से ही हिंदी के माध्यम से होता रहा है। हिंदी में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक विषयों से समृद्ध गूढ़तम विचारों की अभिव्यक्ति सफलतापूर्वक की जा सकती है। हिंदी सरलता से सीखी जा सकती है। इसीलिए हमारे संविधान निर्माताओं का दूरदर्शितापूर्ण विचार था कि जनतंत्र में वही भाषा राजभाषा होती है जो अधिकांश लोगों की भाषा और संपूर्ण देश की संपर्क भाषा हो।

मुझे आशा है कि हमारी छमाही हिंदी पत्रिका **नवप्रभा** का यह अंक संगठन में राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में कारगर सिद्ध होगा और पाठकों को रुचिकर और उपयोगी लगेगा। आप सभी का सहयोग और प्रतिक्रिया पत्रिका को और अधिक उपयोगी बनाने में अपनी अहम भूमिका निभाते आ रहे हैं, इसलिए, हमें आपसे इस अंक की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी साथियों को मेरी शुभकामनाएं...

श्री दामोदर भट्टड एस
निदेशक (मानव संसाधन)

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

महाप्रबंधक (मानव संसाधन) का संदेश

हिंदी की क्षमता और शक्ति आज किसी से छिपी नहीं है। जो भाषा लोगों द्वारा अंगीकृत और स्वीकार्य होती है, वही स्थायी और दीर्घजीवी होती है। हिंदी एक स्वतंत्र और सक्षम भाषा है। इसीलिए हम देख रहे हैं कि आज हिंदी को अधिक से अधिक प्रौद्योगिकी से सफलतापूर्वक जोड़ा जा रहा है। आज के युग में यह आवश्यक हो गया है कि हम एक-दूसरे की भाषाओं और संस्कृतियों को सीखें और समझें। जब यह भाव दृढ़ होगा कि हम एक-दूसरे की भाषाओं को जानते व समझते हैं तो स्वत: ही हिंदी सबकी संपर्क भाषा बन जाएगी। इस प्रयास में क्षेत्रीय भाषाओं का भी प्रयोग निश्चित रूप से बढ़ेगा। आज हिंदी विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है, ज़रूरत इस बात की है कि हिंदी में अधिकाधिक मौलिक, रचनात्मक और सृजनात्मक कार्य हों। सरकारी कार्यालयों में प्रकाशित की जा रही पत्र-पत्रिकाएं इस प्रयोजन के लिए अच्छी माध्यम सिद्ध हो रही हैं। हमारे कार्पोरेट कार्यालय की छमाही हिंदी पत्रिका नवप्रभा भी इस ओर अच्छी भूमिका निभाती आ रही है। वह इसलिए कि एक ओर जहां इससे हमारे कर्मचारियों का मौलिक रचना कौशल बढ़ता है, वहीं उनकी सृजनशीलता को भी उड़ान मिलती है।

हमारी छमाही हिंदी पत्रिका **नवप्रभा** का 20वां अंक आपके सामने प्रस्तुत है। आप जानते हैं कि **नवप्रभा** का हर अंक अलग आभा लिए होता है, विषय-विशिष्ट होता है। यह अंक भारतीय त्योहारों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है। त्योहार हमारे जीवन में खुशियाँ लाते हैं और समाज में भाईचारे को बढ़ावा देते हैं, जीवन में नया रंग भर देते हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि त्योहारों के उमंग की याद दिलाता यह अंक आपके ज़रूर पसंद आएगा। पत्रिका को साकार बनाने वाले सभी कार्मिकों को बधाइयां...

श्री रामकुमार बी
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

संपादकीय

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड
कार्पोरेट कार्यालय

नव प्रभा अंक–20
छमाही पत्रिका
(केवल निजी वितरण के लिए)

मार्गदर्शन
श्री मनोज जैन
अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक

संरक्षण
श्री दामोदर भट्टड एस
निदेशक (मानव संसाधन)

परामर्श
श्री रामकुमार बी
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

श्री चेतन जयसिंग पाटील औटी
अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादन
श्री श्रीनिवास राव
उप प्रबंधक (राजभाषा)

डॉ. रहिला राज के.एम.
अनुवादक

(पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं लेखकों के निजी विचार हैं, बीईएल से इसकी सहमति अनिवार्य नहीं है)

बहुत ही ख़ुशी में गुज़री है इस बरस होली,
गिला है तुझ से कि गीला नहीं किया मुझ को।

भारत में उत्पन्न हुए विभिन्न धर्म और परंपराओं ने दुनिया के अलग–अलग हिस्सों को काफी प्रभावित किया है, और यह कहा जाए कि यह सब कुछ हिंदी की विकासमान यात्रा के सांस्कृतिक परिवेश में ही संभव हुआ है, तो अतिशयोक्ति न होगी। जो भाषा परंपराओं, मान्यताओं, पर्वों, कलाओं, विचारों इत्यादि में मूर्त और अमूर्त रूप में व्यक्ति से लेकर समस्त समाज में परिलक्षित होती है, वही संस्कृति और सभ्यता की संवाहक होती है। भाषा और संस्कृति का परस्पर गहरा संबंध माना जाता है। एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है, बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है।

भारत त्योहारों का देश है जहां हर धर्म के लोग अपने–अपने त्योहार पूरे उत्साह और भाईचारी के साथ मनाते हैं। त्योहार हमें अपनी संस्कृति और परंपरा को समझने और सम्मान करने का अवसर प्रदान करते हैं। ये हमें अपने पूर्वजों की परंपराओं और मूल्यों की याद दिलाते हैं और हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित भी करते हैं। ये हमें उमंग, उत्साह और आशा की भावना से भर देते हैं। असल में भारत के पर्व इस तरह ढले हुए हैं कि जब त्योहारों का समय आता है तो मौसम में भी उसी तरह बहार नज़र आती है और बाज़ार गुलज़ार दिखाई देते हैं। जब राजभाषा हिंदी को देश की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनना हो तो उसमें हमारे तीज–त्योहार भला कैसे पीछे रह सकेंगे? त्योहारों के इसी महत्व को अभिलक्षित करने के प्रयोजन से हमने यह विचार किया कि नवप्रभा का यह अंक भारतीय त्योहारों को समर्पित किया जाए। आशा है यह प्रयास सुधी पाठकों को पसंद आएगा।

आपके विचारों और सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी...

जय हिंद, जय हिंदी...

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

राजभाषा कार्यान्वयन
मनसा...वाचा...कर्मणा...

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

बीईएल के वैज्ञानिकों द्वारा अभिकल्पित और विकसित हिंदी अनुवाद टूल साथी (सिस्टम असिस्टेंट फार ट्रांसलेशन इन हिंदी–SATHI)

अनुप्रयोग...

- अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद के लिए वेब आधारित अनुप्रयोग केंद्रीकृत सर्वर पर लोड किया गया है और इसे ब्राउज़र इंटरफेस के माध्यम से संगठन के भीतर कहीं भी इंट्रानेट पर एक्सेस किया जा सकता है।
- इस मॉडल का परीक्षण बीएलईयू स्कोर का प्रयोग कर किया गया।

साफ्टवेयर की विशेषता...

- सरकारी पत्राचार के अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद का एआई आधारित टूल।
- इस टूल में एक बार में 25000 कैरेक्टर का अनुवाद करने की क्षमता है जबकि गूगल अनुवाद 5000 कैरेक्टर तक सीमित।
- टूल में द्विभाषी प्रारूप में दस्तावेज डाउनलोड करने की क्षमता।
- अनुवादित डेटा की गोपनीयता बरकरार।
- उपयोगकर्ताओं को सुझाव का विकल्प, जिसके आधार पर अनुवाद की सटीकता में निरंतर सुधार संभव।
- पुनर्प्रशिक्षण/अनुकूली ज्ञानार्जन–यह सुनिश्चित करने के लिए कि मॉड्यूल अद्यतन रहता है और समय के साथ सुधार करता है, समय–समय पर नए एकत्र किए गए डेटा के साथ मॉडल को पुन: प्रशिक्षित करने की सुविधा।
- कंपनी की सभी यूनिटों और कार्यालयों में इंट्रानेट और इंटरनेट दोनों पर उपलब्ध अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद के इस टूल का व्यापक प्रयोग किया जा रहा है इससे द्विभाषी दस्तावेज तैयार करने में उल्लेखनीय बढ़ोत्तरी हुई है।

नराकास (उपक्रम), बेंगलूरु के सदस्य कार्यालयों के लिए बीईएल द्वारा विकसित हिंदी अनुवाद टूल साथी पर वेबिनार आयोजित

एचएएल के तत्वावधान में नराकास (उपक्रम), बेंगलूरु के सदस्य कार्यालयों के लिए बीईएल के वैज्ञानिकों द्वारा अभिकल्पित और विकसित हिंदी अनुवाद टूल साथी (सिस्टम असिस्टेंट फार ट्रांसलेशन इन हिंदी–SATHI) पर वेबिनार का आयोजन किया गया। यह टूल बिना इंटरनेट के इंट्रानेट पीसी पर त्वरित हिंदी अनुवाद की सुविधा प्रदान करता है। संकाय सदस्य के रूप में साथी टूल विकासकर्ता टीम प्रमुख श्रीमती राजश्री के पी, वरिष्ठ उप महाप्रबंधक, श्रीमती कल्पना ए, प्रबंधक और श्रीमती अंजू जॉन, सदस्य (वरिष्ठ अनुसंधान स्टाफ)/बीईएल ने हिंदी अनुवाद टूल साथी के विकास, तकनीकी विनिर्देश, आवश्यकता और अनुवाद विशेषताओं पर प्रकाश डाला। इस अनुवाद टूल की विशेषताएं बताते हुए उन्होंने कहा कि यह ए.आई. आधारित अनुवाद टूल है। गूगल ट्रांसलेट जहां 5000 कैरेक्टर तक सीमित है, वहीं साथी 25000 कैरेक्टर की अनुवाद क्षमता रखता है। इस टूल में द्विभाषी रूप में दस्तावेज को डाउनलोड किया जा सकता है और डेटा की गोपनीयता भी बनी रहती है। अनुवाद की सटीकता में सुधार करने के लिए इसमें सुझाव का भी विकल्प है। वेबिनार में नराकास (उपक्रम) के विभिन्न सदस्य कार्यालयों के 47 अधिकारियों ने भाग लिया और इस टूल को बहुत उपयोगी बताया।

बहुभाषी अनुवाद सारथी

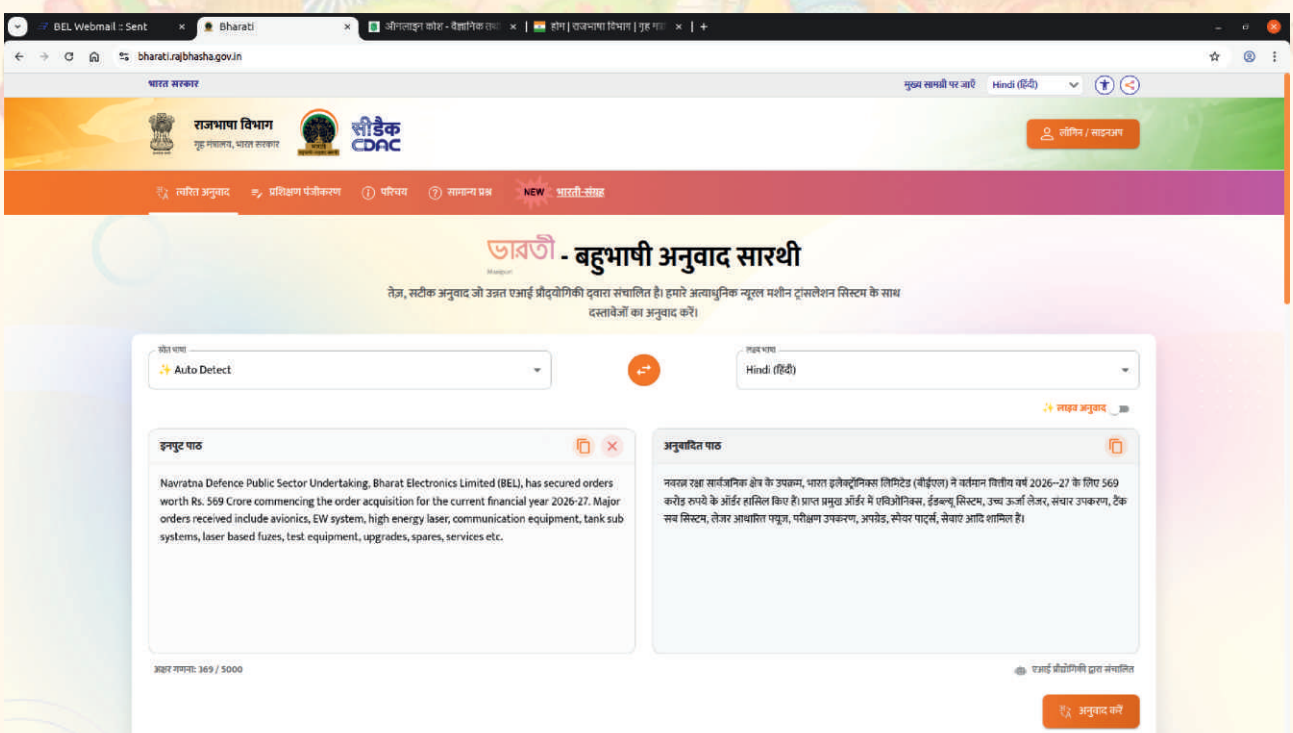

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय और सीडैक द्वारा संयुक्त रूप से विकसित बहुभाषी अनुवाद साफ्टवेयर सारथी का कंपनी की सभी यूनिटों और कार्यालयों में व्यापक प्रयोग किया जा रहा है। विशेष रूप से अनुवाद कार्यों के लिए फ़ाइलें अपलोड करने और उन्हें व्यवस्थित करने, फ़ाइल स्वरूपों को अनुकूलित और पुनर्निर्मित करने की खूबी से द्विभाषी दस्तावेजों की संख्या में उल्लेखनीय बढ़ोत्तरी हुई।

प्रमुख प्रशासनिक शब्दावली जानें..

अंग्रेजी शब्द	हिंदी शब्द
Accordingly	तदनुसार
Active	सक्रिय/ क्रियाशील
Bill of Exchange	विनिमय पत्र
Borrower	उधारकर्ता
Citizenship	नागरिकता
Comparison	तुलना/ मिलान
Compliance	अनुपालन/ पालन
Detaile	विस्तृत
Direct Inspection	प्रत्यक्ष निरीक्षण
Establishment	स्थापना
Explosion	विस्फोट
Faculty	संकाय
Gross Revenue	सकल राजस्व
Guidance	मार्गदर्शन
Heavy Industry	भारी उद्योग
Honour	सम्मान / प्रतिष्ठा
Impartial	निष्पक्षता
Instructor	अनुदेशक
Joint Venture	संयुक्त उद्यम
Limited	सीमित
Membership	सदस्यता
Natural	प्राकृतिक / नैसर्गिक
Observer	प्रेक्षक
Priority	प्राथमिकता, अग्रता
Qualitative	गुणात्मक
Representative	प्रतिनिधि
Survey	सर्वेक्षण
Unity	एकता
Unlimited	असीमित
Vital	महत्वपूर्ण
Work Force	कार्यबल

महत्वपूर्ण रक्षा–इलेक्ट्रॉनिकी शब्दावली जानें....

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

अंग्रेजी शब्द	हिंदी शब्द
Aborted	विफलित
Abrasion resistance	अपघर्षण प्रतिरोध
Abrupt junction	आकस्मिक जंक्शन, अनपेक्षित जंक्शन
Absolute accuracy	पूर्ण सटीकता, निरपेक्ष यथार्थता
Absolute encoder	परम एन्कोडर
Back echo	पश्च प्रतिध्वनि
Back lobe	पश्च पालि/पश्च लोब
Back mounted	पश्च आरोपित/पश्च आरुढ़
Back porch	चित्र पश्च/पश्च पोर्च
Back porch effect	चित्र पश्च प्रभाव
Cable harness	केबल सज्जा
Cable jacket	केबल जैकेट, केबल आवरण
Cable lug	केबल लग
Cable routing	केबल मार्गन
Cable splice	केबल जोड़
Damped loudspeaker	अवमंदित लाउडस्पीकर
Damped meter	अवमंदित मीटर
Damped natural frequency	अवमंदित प्राकृतिक आवृत्ति
Damped oscillation	अवमंदित दोलन
Dampen	अवमंदन/आर्द्रन
Earth station antenna	भू–केंद्र ऐंटेना
Earthing	भूसंपर्कन
Earthing connection	भूसंपर्कन
Earthling	पृथवीवासी
Eavesdropping	सूचना जासूसी
Factory acceptance test	फैक्टरी स्वीकृति परीक्षण
Fader	अवतिव्रक, मंदक
Fading	क्षीणन
Fail–soft transmitter	फेल–सॉफ्ट ट्रांसमीटर
Failure analysis	विफलता विश्लेषण

प्रमुख द्विभाषी टिप्पणियाँ

बैठक की कार्यसूची पेश की जाती है।	Agenda For The Meeting Is Put Up.
सर्वसंबंधितों को सूचित किया जाए।	All Concerned May Please Be Advised.
पिछले कागजात पेश करें।	Connect Previous Papers.
देरी के लिए खेद है।	Delay Regretted.
विचार–विमर्श किया गया / चर्चा की गई।	Discussed.
अनुमोदन के लिए मसौदा पेश किया जाता है।	Draft Put Up For Approval, Please.
अनुमोदन के लिए।	For Approval, Please.
सहमति के लिए।	For Concurrence
विचारार्थ प्रस्तुत।	For Kind Consideration.
अवलोकन के लिए।	For Perusal, Please.
हस्ताक्षर के लिए।	For Signature.
विवरण प्रस्तुत करें / ब्यौरे पेश करें।	Furnish Details.
मैं सहमत हूँ।	I Agree.
तत्काल कार्रवाई करें।	Immediate Action, Please.
अंतरिम उत्तर भेज दें।	Interim Reply May Be Sent.
कृपया पावती दें।	Kindly Acknowledge.
यूनिटों/क्षेत्रीय कार्यालयों को अग्रेषित करें।	May Be Forwarded To Units/ Regional Offices.
आवश्यक कार्रवाई के लिए।	For Necessary Action.
आगे कोई कार्रवाई नहीं।	No Further Action.
कागजात पेश करें।	Papers, Please.
फिलहाल रोक रखा जाए।	Keep Pending For The Present.
चर्चा करें / बात करें।	Please Discuss/Please Speak.
शीघ्र अनुपालन करें।	Please Expedite Compliance.
संशोधित रूप में जारी करें।	Please Issue As Amended.
कार्योत्तर मंजूरी दी जाती है।	Post–Facto Sanction Is Accorded
प्रस्ताव अनुमोदित।	Proposal Is Approved.
संबंधित कागजात प्रस्तुत किए जाएँ।	Relevant Papers May Be Put Up.
अपेक्षित सूचना पहले ही भेजी जा चुकी है।	Required Information Has Already Been Sent.
देख लिया, धन्यवाद।	Seen, Thanks.
सूचना के लिए प्रस्तुत किया जाता है।	Submitted For Information, Please.
देरी क्यों?	What Is Holding?
स्पष्ट करें।	Explain.

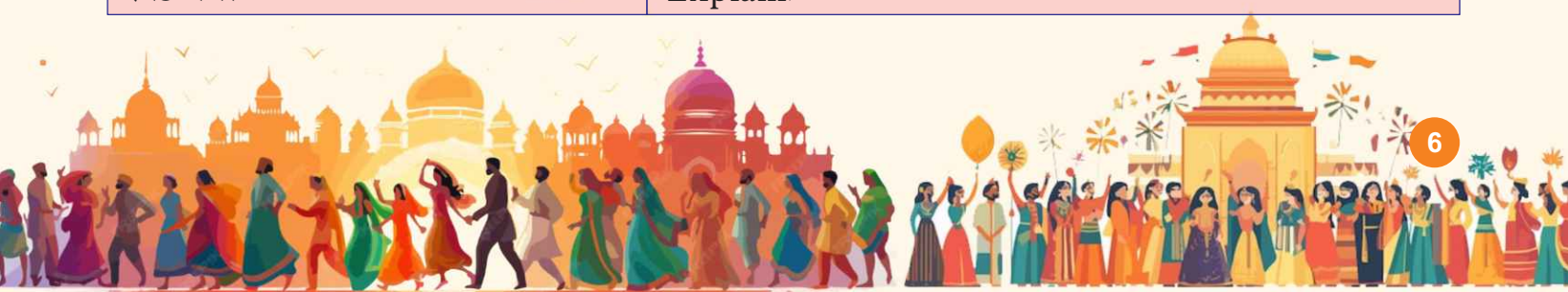

अखिल भारतीय बीईएल राजभाषा सम्मेलन

दिनांक 07 नवंबर, 2025 को बीईएल नवी मुंबई में एक दिवसीय अखिल भारतीय बीईएल राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस बार सम्मेलन का विषय "राजभाषा–संवैधानिक प्रावधानों से बढ़कर" रखा गया। सम्मेलन के मुख्य अतिथि श्री विक्रमन एन, निदेशक (मानव संसाधन), बीईएल थे। उद्घाटन सत्र में श्री मनोज जैन, अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक का संदेश पढ़कर सुनाया। अध्यक्ष महोदय ने अपने संदेश में कहा कि कंपनी की हर यूनिट और कार्यालय में हम न सिर्फ राजभाषा के लक्ष्यों को प्राप्त करते रहें, बल्कि उनसे बढ़कर काम करें। इस अवसर पर श्री प्रभाकर राव जे, महाप्रबंधक (मानव संसाधन), नवी मुंबई यूनिट, श्री त्रिभुवन नारायण सिंह, माहप्रबंधक (मानव संसाधन), बेंगलूरु कॉमप्लेक्स और श्री रामकुमार बी, महाप्रबंधक (मानव संसाधन), बीईएल कार्पोरेट कार्यालय उपस्थित थे। निदेशक (मानव संसाधन) सम्मेलन की सार्थकता बताते हुए कहा कि बीईएल की सभी यूनिटों और कार्यालयों में अच्छा काम हो रहा है। उन्होंने आगे कहा कि राजभाषा के काम को मिशन मानकर करना होगा, तभी हम सच्चे अर्थों में सफल होंगे। इस अवसर पर मंचासीन अधिकारियों द्वारा कार्पोरेट गृह पत्रिका "नवप्रभा" के 19वें अंक का विमोचन किया। बीईएल की सभी यूनिटों और कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों ने प्रस्तुतीकरण दिया।

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2026-27 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 70% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 100%	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4.ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 90%	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 60% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 60% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 60%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	80%	55%	35%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	75%	65%	35%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	45%

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
6.	हिंदी में डिक्टेशन/ की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	70%	60%	35%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात हिंदी ई-पुस्तक, ई-हिंदी समाचार पत्र, सीडी / डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के डिज़िटल उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/ उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (छमाही में एक) वर्ष में 4 बैठकें (तिमाही में एक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%		
16.	संपूर्ण कार्य हिंदी में करने के लिए निर्दिष्ट अनुभाग	45%	35%	25%

विदेश में स्थित भारतीय कार्यालयों के लक्ष्य / Targets for Foreign based Indian Offices

1.	हिंदी में पत्राचार (भारत/विदेश स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों के साथ) Correspondence in Hindi (Including Central Govt. Offices located in India/Abroad)	50%
2.	फाइलों पर हिंदी में टिप्पण File noting in Hindi	50%
3.	विराकास की बैठक DOLIC Meeting	तिमाही Quarterly
4.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी Employees knowing Hindi Typing	कम से कम एक Minimum one

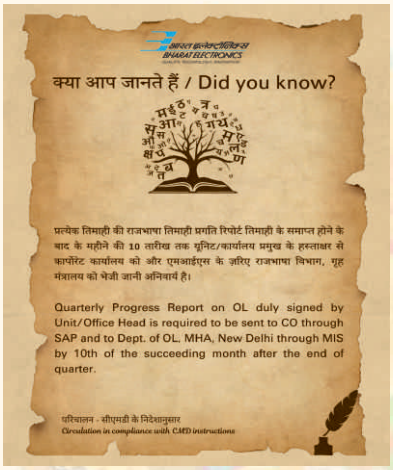

भाषाई सौहार्द कार्यक्रम के तहत कार्पोरेट सभागार में माह के अंतिम कार्य दिवस दूरदर्शन के प्रसिद्ध धारावाहिकों का प्रदर्शन

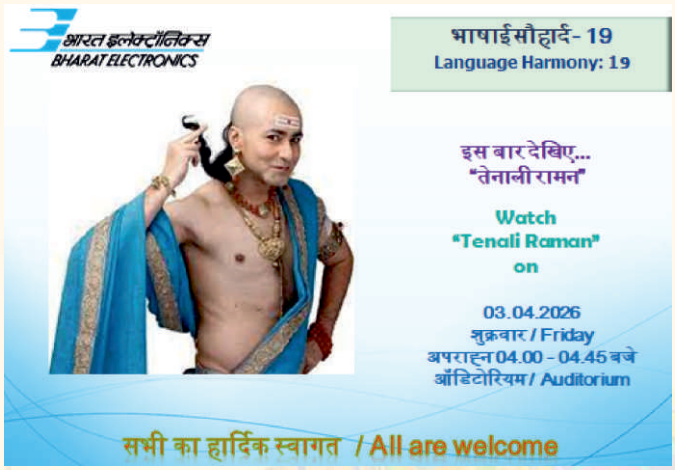

कंपनी भर के उच्चाधिकारियों (सीएमडी और निदेशकों सहित) को राजभाषा नीति–नियमों के बारे में जागरूक बनाने हेतु प्रत्येक महीने की 14 तारीख (हिंदी दिवस यानी 14 सितंबर की याद दिलाते हुए) को ईमेल का अग्रेषण।

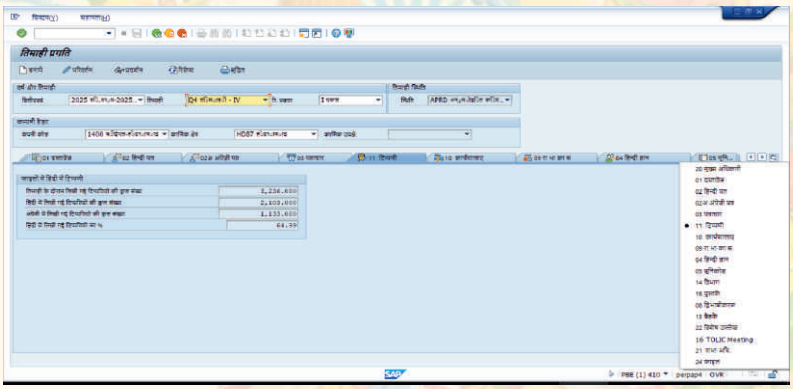

सभी अधीनस्थ कार्यालयों से तिमाही प्रगति रिपोर्ट ऑनलाइन एसएपी में भरने और प्राप्त करने का प्रावधान

वर्षपर्यंत राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी विभिन्न कार्यकलापों को व्यवस्थित बनाने, किसी भी प्रकार के विलंब से बचने और कंपनी भर में एकरूपता लाने के लिए कार्पोरेट राजभाषा द्वारा यूनिटों / सीआरएल / कार्यालयों के लिए राजभाषा वार्षिक कैलेंडर तैयार कर वितरित किया गया।

वर्ष 2025–26 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु सीएमडी राजभाषा गरिमा पुरस्कार

हैदराबाद यूनिट, गाज़ियाबाद कॉमप्लेक्स और क्षेत्रीय कार्यालय, वैजाग

कंपनी में मूल रूप से हिंदी में कार्य करने के लिए विद्यमान विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं तथा हिंदी प्रतियोगिताओं की पुरस्कार राशि में बढ़ोत्तरी और नई आकर्षक योजनाएं...

तुलसीदास पुरस्कार योजना (पूर्ण कार्य हिंदी में करने के लिए)	
पहले...	अब...
10, 000.00	**15, 000.00**
प्रेमचंद पुरस्कार योजना (हिंदी में कार्य करने के लिए)	
पहले...	अब...
7, 000.00	**10, 000.00 (2)**
6, 000.00	**8, 000.00 (2)**
5, 000.00	**7, 000.00 (2)**
जयशंकर प्रसाद प्रोत्साहन योजना (हिंदी में कार्य करने के लिए)	
पहले...	अब...
4, 000.00	**6, 000.00**
3, 500.00	**5, 000.00**
3, 000.00	**4, 000.00**
2, 000.00	**3, 000.00**
कबीर पुरस्कार योजना (उच्चाधिकारियों के लिए)	
पहले...	अब...
10, 000.00	**15, 000.00**
माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार (कर्मचारियों के बच्चों के लिए–हिंदी माध्यम)	
पहले...	अब...
15, 000.00	**2, 500.00 (05)**

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

कंपनी में मूल रूप से हिंदी में कार्य करने के लिए विद्यमान विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं तथा हिंदी प्रतियोगिताओं की पुरस्कार राशि में बढ़ोत्तरी और नई आकर्षक योजनाएं...

हिंदी प्रतियोगिताएं

पहले...	अब...
2, 000.00	**5, 000.00**
1, 500.00	**3, 000.00**
1, 200.00	**2, 000.00**
800.00	**1, 000.00 (4)**

भास्कराचार्य पुरस्कार योजना (हिंदी में पुस्तक लिखने के लिए)

पहले...	अब...
15, 000.00	**25, 000.00**
10, 000.00	**20, 000.00**
8, 000.00	**15, 000.00**

नागार्जुन पुरस्कार योजना (हिंदी में तकनीकी लेख लिखने के लिए)

पहले...	अब...
5, 000.00	**7, 000.00**
3, 000.00	**5, 000.00**
2, 500.00	**4, 000.00**

मैथिलीशरण पुरस्कार (कर्मचारियों के बच्चों के लिए–हिंदी में सर्वोच्च अंक)

पहले...	अब...
1, 500.00	**2, 000.00 (05)**

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

प्रकाशन

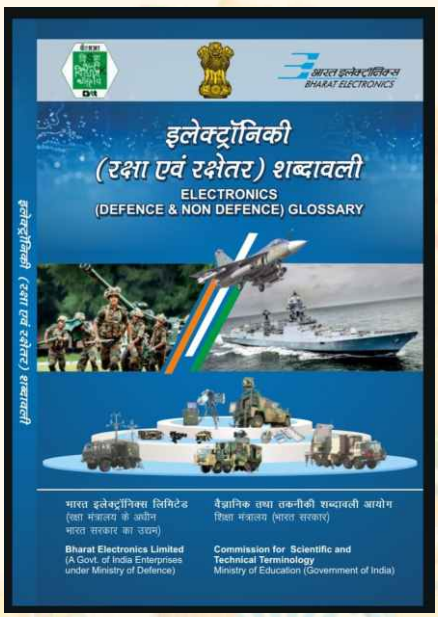

बीईएल की रक्षा इलेक्ट्रॉनिकी शब्दावली (सीएसटीटी, शिक्षा मंत्रालय के समन्वय से)

सीएसटीटी और बीईएल के विषय विशेषज्ञों द्वारा 7200 तकनीकी शब्दों का मानकीकरण। शब्दावली की पहली प्रति सीएमडी द्वारा सचिव (राजभाषा), भारत सरकार को प्रदान की गई

बीईएल राजभाषा ज्ञान कोश...

अधिकारियों और कर्मचारियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति और बीईएल की प्रोत्साहन योजनाओं के बारे में शिक्षित करने के लिए बीईएल कार्पोरेट राजभाषा की पहल राजभाषा हिंदी से संबंधित 501 प्रश्नोत्तरी का अद्भुत संग्रह

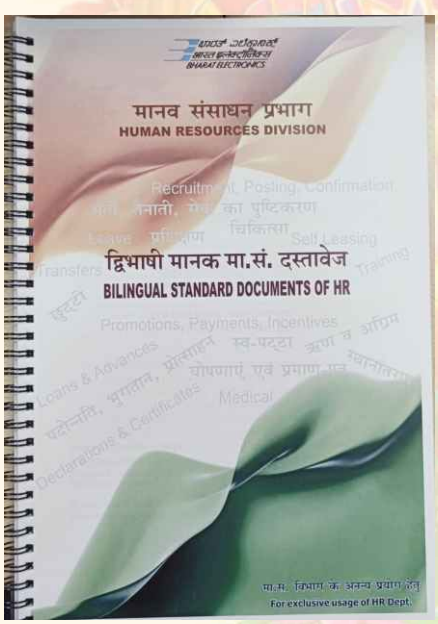

कंपनी भर की यूनिटों/कार्यालयों के लिए उपयोगी द्विभाषी मानक मा.सं. दस्तावेज जिसमें भर्ती से लेकर सेवानिवृत्ति तक के दस्तावेजों का संकलन

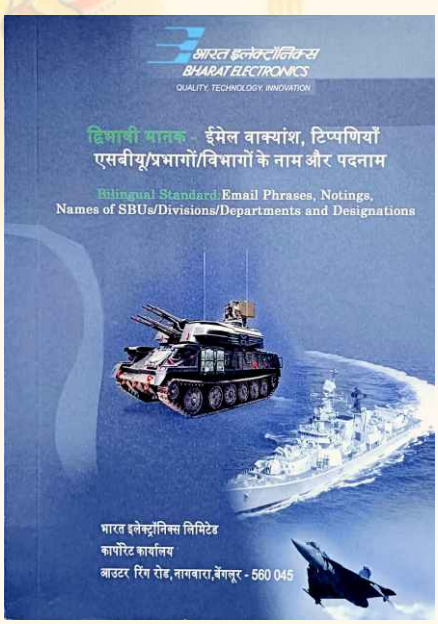

कंपनी भर में कंप्यूटरों पर हिंदी पत्राचार बढ़ाने के लिए की गई पहल, नेमी प्रकृति के 501 मानक द्विभाषी ईमेल का संकलन

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

नागार्जुन पुरस्कार योजना के तहत पुरस्कृत तकनीकी लेख

मानव–मशीन इंटरफेस में जनरेटिव एआई

शिवानी कपूर
सीआरएल–गाज़ियाबाद

मानव–मशीन इंटरफेस एक ऐसा माध्यम है, जो इंसानों को मशीनों या कंप्यूटर–आधारित सिस्टम के साथ बातचीत करने की सुविधा देता है। यह कोई स्क्रीन, बटन, स्विच, टच पैनल, या कोई सॉफ्टवेयर हो सकता है जिसके जरिए आप मशीन को आदेश देते हैं, उसकी जानकारी पढ़ते हैं, और उसे नियंत्रित करते हैं। मानव–मशीन इंटरफेस साधारण कमांड–लाइन इनपुट से विकसित होकर अब ऐसे उन्नत सिस्टम बन गए हैं जो इंसानों और मशीनों के बीच जटिल संवाद को संभव बनाते हैं। यह आधुनिक तकनीक का वह आधार है जो इंसानों और मशीनों के बीच सेतु का काम करता है।

मानव–मशीन इंटरफेस का मुख्य उद्देश्य मशीन की स्थिति और डेटा को दिखाना (जैसे तापमान, गति, दबाव आदि), उपयोगकर्ता से इनपुट लेना (जैसे बटन दबाना या स्क्रीन पर टच करना), आदेशों के अनुसार मशीन को नियंत्रित करना और फीडबैक देना (जैसे चेतावनी सिग्नल, अलार्म, या सूचनात्मक मैसेज) है। जनरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के आगमन ने इन इंटरफेस को और अधिक विकसित किया है, जिससे मशीनें अब स्वायत्त रूप से उत्तर, सामग्री और समाधान उत्पन्न कर सकती हैं। 'जेनरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' या 'उत्पादक कृत्रिम बुद्धिमत्ता' एक तेज़ी से विकसित हो रहा क्षेत्र है जिसमें प्रौद्योगिकी के सृजन एवं उससे अंत:क्रिया के तरीके में क्रांति लाने की क्षमता निहित है। नए डेटा या कंटेंट के सृजन की क्षमता के साथ जेनरेटिव ए.आई. मनोरंजन से लेकर वित्त तक विभिन्न प्रकार के उद्योगों में व्यापक अनुप्रयोगों की संभावना रखता है। जनरेटिव एआई पारंपरिक कमांड–आधारित प्रणालियों से आगे बढ़कर इंटरफेस को अधिक सहज, अनुकूलनीय और संदर्भ–प्राप्त बनाता है। इसका प्रभाव खासकर उद्योग, स्वास्थ्य सेवा और उपभोक्ता तकनीक जैसे क्षेत्रों में दिख रहा है, जहाँ यह उपयोगकर्ता अनुभव, संचालन की दक्षता और वैयक्तिकरण को बेहतर बनाता है।

मानव–मशीन इंटरफेस (एचएम आई) का विकास

प्रारंभिक एच ऍम आई टेक्स्ट–आधारित इनपुट और आउटपुट पर निर्भर थे। ग्राफिकल यूजर इंटरफेस के विकास से इंटरैक्शन अधिक सहज हुआ, जिससे उपयोगकर्ता आइकन और बटन जैसे विज़ुअल तत्वों के माध्यम से मशीन से जुड़ सके। टचस्क्रीन ने अनुभव को और अधिक संवेदनशील और सरल बना दिया। एआई के एच ऍम आई में सम्मिलन से मशीनें उपयोगकर्ता की पसंद से सीखने, अनुकूल होने और व्यक्तिगत उत्तर देने में सक्षम हुईं। यह बदलाव अधिक गतिशील और प्रतिक्रियाशील सिस्टम की दिशा में एक बड़ा कदम था। जनरेटिव एआई पारंपरिक एआई से अलग है क्योंकि यह केवल तयशुदा नियमों पर नहीं, बल्कि इनपुट के आधार पर नए उत्तर और समाधान उत्पन्न करने में सक्षम है। यह एच ऍम आई को अधिक लचीला और रचनात्मक बनाता है।

जनरेटिव एआई काम कैसे करता है, यह समझने के लिए हमें पहले यह जानना ज़रूरी है कि ये तकनीक किस प्रकार का डेटा लेती है, प्रोसेस करती है, और फिर नया कंटेंट (जैसे टेक्स्ट, इमेज, म्यूजिक आदि) जेनरेट करती है। जनरेटिव एआई एक मशीन लर्निंग तकनीक है जो बहुत बड़े मात्रा में डेटा (जैसे किताबें, वेबसाइट्स, इमेजेज आदि) पर ट्रेन होकर नया और उपयोगी आउटपुट बनाना सीखती है। यह आउटपुट कभी टेक्स्ट हो सकता है, कभी तस्वीर, म्यूजिक, कोड या वीडियो।

जनरेटिव एआई के मुख्य चरण

जनरेटिव एआई मुख्यतया चार चरणों में काम करता है–

1. ट्रेनिंग चरण–

इस चरण में एआई को लाखों–करोड़ों उदाहरण दिखाए जाते हैं–जैसे किताबों के पेज, कोड, चित्र आदि। यह न्यूरल नेटवर्क्स (विशेषकर ट्रांसफार्मर्स) की मदद से यह डेटा सीखता है।

उदाहरण–जीपीटी मॉडल को इंटरनेट के करोड़ों पन्नों पर ट्रेन किया गया है, जिससे उसे भाषा का ढांचा, व्याकरण और तथ्य समझ आते हैं।

2. प्रॉम्प्ट को समझना–

इस चरण में यूज़र जब कोई input देता है (जैसे सवाल पूछता है या कुछ बनाने को कहता है), तो एआई सबसे पहले उस इनपुट का अर्थ समझता है–इसे प्राकृतिक भाषा समझ कहते हैं।

उदाहरण–अगर आप कहते हैं "एक कविता लिखो बारिश पर", तो एआई समझता है कि आप हिंदी में कविता चाहते हैं, विषय "बारिश" है।

3. सामग्री बनाना–

इसके बाद एआई अपने सीखे हुए ज्ञान के आधार पर एक–एक शब्द (या इमेज के केस में पिक्सल) जोड़ते हुए नया आउटपुट बनाता है। यह हर बार नया और अलग होता है–इसीलिए इसे "जनरेटिव" कहा जाता है। टेक्स्ट जनरेशन में एआई अगला शब्द चुनने के लिए सांख्यिकीय संभावना का उपयोग करता है।

4. आउटपुट को सुधारना–

कुछ जनरेटिव एआई सिस्टम्स आउटपुट का सुधार भी करते हैं–जैसे व्याकरण ठीक करना, डुप्लिकेट कॉन्टेनट हटाना, या यूज़र के फीडबैक के हिसाब से बदलाव लाना।

जनरेटिव एआई का एचएमआई में उपयोग

वर्तमान में जनरेटिव एआई का एच ऍम आई में निम्नलिखित तरीकों से उपयोग हो रहा है–

1. प्राकृतिक भाषा इंटरफेस (Natural Language Interfaces)

जनरेटिव एआई मशीनों को इंसानी भाषा को समझने और जवाब देने में सक्षम बनाता है–

वॉइस असिस्टेंट्स (जैसे Alexa, Siri) LLMs (Large Language Models) का उपयोग करके इंसानों जैसी भाषा में जवाब देते हैं।

संवादी यूआई (Conversational UI)–चैटबॉट्स और वर्चुअल एजेंट्स यूज़र से बातचीत करते हैं और संदर्भ अनुसार सहायता प्रदान करते हैं।

बहुभाषी संवाद–रियल–टाइम अनुवाद की मदद से विभिन्न भाषाओं में बातचीत संभव होती है।

2. व्यक्तिगत अनुभव (Personalized Experiences)

जनरेटिव मॉडल यूज़र के व्यवहार का विश्लेषण करके इंटरफेस को कस्टमाइज करते हैं।

एडैप्टिव डैशबोर्ड–यूज़र की पसंद के अनुसार लेआउट और कंटेंट बदलते हैं।

स्मार्ट सुझाव–इंटरफेस, संदर्भ के आधार पर अगला एक्शन या आवश्यक जानकारी सुझाता है।

3. विज़ुअल एच ऍम आई डिज़ाइन ऑटोमेशन

एआई खुद–ब–खुद एच ऍम आई डिज़ाइन बना सकता है।

UI कंपोनेंट्स का ऑटो–जेनरेशन–आवश्यकताओं के अनुसार (जैसे इंडस्ट्रियल कंट्रोल पैनल के लिए) UI ऑटोमेटिक तैयार होता है।

टेक्स्ट प्रॉम्प्ट से डिजाइन–डिजाइनर केवल टेक्स्ट इनपुट देकर इंटरफ़ेस के मॉकअप्स बना सकते हैं।

4. मल्टीमोडल इंटरैक्शन

टेक्स्ट, वॉइस, इशारों और विज़ुअल इनपुट का संयोजन–

हैंड्स–फ्री कंट्रोल–विशेष रूप से गाड़ियों या मेडिकल वातावरण में उपयोगी।

इमेज + टेक्स्ट इनपुट–जैसे – मशीन के किसी पार्ट की ओर इशारा करके पूछना–"यह क्या करता है?

5. भविष्यवाणी और सक्रिय इंटरफेस

जनरेटिव एआई यूज़र की ज़रूरतों की भविष्यवाणी कर सकता है और पहले से ही आवश्यक कंट्रोल या जानकारी दिखा सकता है–

उदाहरण–इंडस्ट्रियल एच ऍम आईs में, संभावित खराबी की पूर्वानुमान लगाकर डायग्नोस्टिक्स पहले ही दिखा देना।

6. त्वरित प्रोटोटाइपिंग और टेस्टिंग

एआई टूल्स डिजाइनर्स को तेज़ी से विभिन्न एच ऍम आई वेरिएशंस बनाने और उनमें सुधार करने में मदद करते हैं। यह यूज़र एक्सपीरियंस (UX) और टेस्टिंग के लिए बेहद उपयोगी होता है। भविष्य में एच ऍम आई ऐसे होंगे जो भावनाओं को पहचान सकेंगे और सहानुभूतिपूर्ण प्रतिक्रियाएँ देंगे, जिससे उपयोगकर्ता, संतुष्टि और विश्वास बढ़ेगा। जनरेटिव एआई उपयोगकर्ता की ज़रूरतें पहले से भाँपकर सुझाव या स्वचालित कार्य कर सकेगा। इससे समय की बचत और दक्षता में वृद्धि होगी।

चुनौतियाँ और नैतिक विचार

हालाँकि एचएमआई में जीईएन एआई के उपयोग से संबंधित कुछ चुनौतियाँ और नैतिक विचार हैं।

डेटा गोपनीयता और सुरक्षा

जनरेटिव एआई का एच ऍम आई में एकीकरण डेटा गोपनीयता और सुरक्षा को लेकर चिंताएँ पैदा करता है। यह सुनिश्चित करना कि उपयोगकर्ता डेटा सुरक्षित है और एआई सिस्टम पारदर्शी और जवाबदेह हैं, विश्वास बनाए रखने और नियमों का अनुपालन करने के लिए महत्वपूर्ण है।

पूर्वाग्रह और निष्पक्षता

एआई मॉडल प्रशिक्षण डेटा में मौजूद पूर्वाग्रहों को अपना सकते हैं, जिससे अनुचित या भेदभावपूर्ण परिणाम सामने आ सकते हैं। समान एच ऍम आई अनुभव सुनिश्चित करने के लिए पूर्वाग्रहों का पता लगाने और उन्हें कम करने के तरीके विकसित करना आवश्यक है।

उपयोगकर्ता का विश्वास और स्वीकृति

जनरेटिव एआई–संचालित एच ऍम आई में उपयोगकर्ता का विश्वास बनाने के लिए एआई निर्णयों में पारदर्शिता और उपयोगकर्ताओं को सिस्टम के साथ अपनी बातचीत पर नियंत्रण प्रदान करना आवश्यक है। प्रभावी संचार और उपयोगकर्ता शिक्षा, एआई तकनीकों में स्वीकृति और विश्वास को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

केस अध्ययन–

1. औद्योगिक अनुप्रयोग

एक केस अध्ययन में, शोधकर्ताओं ने GPT–3.5 आधारित लेंगचेन एजेंट का उपयोग कर एक चैटबॉट एच ऍम आई बनाया। ऑपरेटर सीएसवी फाइल अपलोड करता है और जनरेटिव एआई सिस्टम मशीन की स्थिति जैसे "स्वस्थ", "छोटी खराबी" या "गंभीर खराबी" को वर्गीकृत करता है। इससे समस्या निवारण का काफी कम समय में हुआ और सुपरवाइजर की निर्भरता भी घटी।

2. मेट्रो सिग्नलिंग सिस्टम

समस्या विवरण–ऑपरेटरों को गंभीर परिस्थितियों (सिग्नल विफलता, ट्रेन देरी, मार्ग संघर्ष) के दौरान अधिभार का सामना करना पड़ता है। बिना जनरेटिव एआई–ऑपरेटर लॉग खंगालता है और ट्रेनों को मैन्युअली रीरूट करता है। जनरेटिव एआई के साथ–एआई खुद समस्या को पहचानता है, स्थान सुझाता है, ट्रेनें रीरूट करता है, निर्देश बनाता है और डिस्प्ले अपडेट करता है।

इन केस स्टडीज के विश्लेषण करने के पश्चात यह समझ में आता है की पारंपरिक एच ऍम आई की तुलना मे जनरेटिव एआई–सक्षम एच ऍम आई के अत्यंत लाभ है जैसे–

बेहतर दक्षता–त्वरित विश्लेषण और सुझावों से निर्णय जल्दी होते हैं।
उच्च सटीकता–जटिल डेटा को बेहतर तरीके से समझना।
स्केलेबिलिटी–बड़े सिस्टम पर भी लागू किया जा सकता है।
कम लागत–सक्रिय मेंटेनेंस और डाउनटाइम में कमी।

जनरेटिव एआई मानव–मशीन इंटरफेस की परिभाषा को पुन: परिभाषित कर रहा है–इन्हें अधिक अनुकूलनीय, सहज और मानव–केंद्रित बना रहा है। हालाँकि, डेटा सुरक्षा, पूर्वाग्रह और उपयोगकर्ता विश्वास जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। यदि इन्हें सही से संबोधित किया जाए, तो जनरेटिव एआई द्वारा सक्षम एच ऍम आई भविष्य में सभी क्षेत्रों में उपयोगकर्ता अनुभव और उत्पादकता में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकते हैं।

इलेक्ट्रॉनिक युद्ध में कृत्रिम बुद्धिमत्ता–लाभ, जोखिम और चुनौतियाँ

चेरुकुरि फणि माधुरी
हैदराबाद

आज की दुनिया तकनीकी क्रांति के युग में प्रवेश कर चुकी है। हर क्षेत्र; चाहे वह शिक्षा हो, चिकित्सा हो या रक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) से प्रभावित हो रहा है। आमतौर पर, रक्षा और युद्ध रणनीतियों में ए.आई. ने एक नया आयाम जोड़ दिया है। 'इलेक्ट्रॉनिक युद्ध' एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ ए.आई. की भूमिका दिन प्रति दिन अहम होती जा रही है। इलेक्ट्रॉनिक युद्ध का उद्देश्य दुश्मन की संचार प्रणाली को बाधित करना, उसकी गतिविधियों को भ्रमित करना और अपने सिस्टम को सुरक्षित रखना होता है। इसमें रेडियो तरंगें, रडार, सिग्नल जामिंग, और साइबर संचालन जैसी तकनीकों का उपयोग किया जाता है। अब जब ए.आई. इन सभी प्रणालियों में एकीकृत हो रहा है, तो युद्ध की दिशा और प्रभाव दोनों बदल रहे हैं।

ए.आई. कैसे बदल रहा है इलेक्ट्रॉनिक युद्ध

पूर्व युद्ध में जहाँ बंदूकें, तोपें और सैनिक आमने–सामने होते थे, वहीं आधुनिक युद्धों में सूचना, डेटा और इलेक्ट्रॉनिक्स सबसे बड़े हथियार बन गए हैं। इलेक्ट्रॉनिक युद्ध का उद्देश्य होता है–दुश्मन के संचार, रडार, नेविगेशन और नियंत्रण प्रणाली को जाम करना, भटकाना या निष्क्रिय करना। अब, जब इसमें ए.आई. को जोड़ा गया है, तो इसकी प्रभावशीलता, गति और स्वायत्तता कई गुना बढ़ गई है।

पूर्व–निर्धारित से स्वायत्त निर्णय तक

पहले एक रडार या जैमर को पहले से तय की गई सीमाओं में ही काम करना होता था। अब ए.आई. ऐसे सिस्टम को खुद स्थिति के अनुसार निर्णय लेने में सक्षम बना देता है। उदाहरण–यदि एक ए.आई.–सक्षम जैमिंग सिस्टम को कोई नया अनदेखा सिग्नल मिले, तो वह पहले से तय किए गए नियमों के बजाय स्वयं तय कर सकता है कि क्या उसे जाम करना है या नहीं?

परंपरागत से एडॉप्टिव सिस्टम तक

ए.आई. युद्ध प्रणालियों को "अनुकूलनशील" बनाता है। उदाहरण–एक ड्रोन् जिसे पहले केवल निरीक्षण के लिए बनाया गया था, ए.आई. से लैस होने पर जरूरत पड़ने पर निगरानी से हमला करने की भूमिका को भी बदल सकता है।

अकेली मशीन से नेटवर्क्ड सिस्टम तक

ए.आई. के ज़रिए सभी सैन्य प्रणालियाँ अब एक–दूसरे से जुड़ सकती हैं। जैसे, एक सैटेलाइट से मिलने वाली जानकारी तुरंत जमीन पर मौजूद टैंक तक पहुँचे, और ए.आई. उसे विश्लेषित करके निर्णय लेने में मदद करे।

ए.आई. के प्रमुख लाभ

तेज़ और सटीक निर्णय–युद्ध में समय सबसे बड़ा हथियार होता है। ए.आई. सेकंडों में डेटा का विश्लेषण करके निर्णय ले सकता है, जो किसी भी इंसान के लिए संभव नहीं है।

थ्रेट डिटेक्शन (खतरे की पहचान) –ए.आई. दुश्मन की चालों, संचार सिग्नलों और गतिविधियों को स्कैन करके खतरों की पहचान करता है और समय कार्रवाई के लिए सक्रिय रहता है।

सिग्नल प्रोसेसिंग और वर्गीकरण–सैकड़ों प्रकार के रेडियो और रडार सिग्नलों में से ए.आई. यह तय कर सकता है कि कौन सा सिग्नल खतरनाक है, कौन सा नकली है और किस पर ध्यान देना ज़रूरी है।

कम संसाधनों में अधिक परिणाम–ए.आई. की मदद से संसाधनों का बेहतर उपयोग होता है। यह तय करता है कि कब, कहां और कितनी ऊर्जा या बैंडविड्थ लगाई जाए।

अनुकूलन और लचीलापन–अगर कोई एक प्रणाली फेल हो जाए या दुश्मन द्वारा बाधित कर दी जाए, तो ए.आई. आधारित सिस्टम तुरंत दूसरा विकल्प चुन सकता है।

निर्णयों की निरंतरता–मानव निर्णय परिस्थिति, थकावट या भावनाओं से प्रभावित हो सकते हैं–लेकिन ए.आई. का निर्णय हर बार स्थिर

और सुसंगत रहता है। इससे एकीकृत रणनीति बनाए रखने में सहायता मिलती है।

रणनीतिक सोच में गहराई–ए.आई. बड़े स्तर पर "वार गेमिंग" और "प्रेडिक्टिव एनालिसिस" कर सकता है, जिससे वह दुश्मन की भावी चालों का अनुमान लगाकर पहले से रणनीति बना सकता है।

जटिल प्रणालियों का प्रबंधन–ए.आई. ऐसे सिस्टम को भी संभाल सकता है जो इंसान के लिए बहुत जटिल हों। जैसे, 50 ड्रोन एक साथ उड़ रहे हैं और सब अलग–अलग दिशाओं में निगरानी कर रहे हैं–ए.आई. इस नेटवर्क को सहजता से नियंत्रित कर सकता है। परंतु... हर तकनीक के साथ जोखिम भी जुड़ी होती है। ए.आई. जितनी बड़ी शक्ति है, उतनी ही गंभीर ज़िम्मेदारी भी है। अगर इसका इस्तेमाल समझदारी से न किया जाए, तो यह अपनी ही प्रणाली के खिलाफ काम कर सकता है। इलेक्ट्रॉनिक युद्ध जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में, ए.आई. के प्रयोग से निम्नलिखित गहरे और बहुस्तरीय खतरे उत्पन्न हो सकते हैं–

गलत निर्णय

ए.आई. यदि खतरे को गलत तरीके से पहचान ले तो गंभीर नुकसान हो सकता है। उदाहरण–अगर कोई नागरिक ड्रोन कैमरा या टेलीविजन सिग्नल को दुश्मन का संकेत मान लिया जाए, तो उस पर हमला हो सकता है। यह समस्या विशेष रूप से "सिग्नल प्रोसेसिंग" में आती है जहाँ ए.आई. को लगातार निर्णय लेना होता है–और एक छोटी सी चूक भी भारी पड़ सकती है। यह न केवल तकनीकी नुकसान करता है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय कानूनों का उल्लंघन और कूटनीतिक विवाद भी पैदा कर सकता है।

ए.आई. की निर्णय प्रक्रिया समझ में न आना

ए.आई. के निर्णय कैसे लिए गए, यह इंसान को स्पष्ट रूप से पता नहीं चलता। यही "ब्लैक बॉक्स" समस्या है। क सैन्य ऑपरेटर अगर किसी खतरे के जवाब में कार्रवाई करता है, लेकिन उसे यह पता नहीं कि ए.आई. ने उस खतरे की पहचान क्यों की, तो वह उस निर्णय पर भरोसा नहीं कर सकता। इससे दो बातें हो सकती हैं–या तो वह ए.आई. को पूरी तरह नजरअंदाज़ कर देगा। या बिना सोचे–समझे उस पर निर्भर हो जाएगा। दोनों ही स्थिति में सैनिक और सैन्य संगठन खतरे में आ सकते हैं।

गलत डेटा या 'डेटा पॉइज़निंग' का खतरा

ए.आई. मॉडल को प्रशिक्षित करने के लिए बहुत सारा डेटा चाहिए होता है। यदि उस डेटा में जानबूझकर झूठ या गलत जानकारी मिलाई गई हो, तो उसे "Data Poisoning" कहा जाता है। दुश्मन अगर ए.आई. को गुमराह करने वाला डेटा दे, तो वह गलत सिग्नल्स को असली मान सकता है। ए.आई. "नकली शत्रु" की पहचान करके संसाधनों की बर्बादी कर सकता है, या "असली शत्रु" को नज़रअंदाज़ कर सकता है। यह सबसे चुपचाप होने वाला हमला है , जो बिना गोली चले बड़ी क्षति कर सकता है।

छिपे हुए पक्षपात

ए.आई. के निर्णय उस डेटा पर आधारित होते हैं जिससे उसे प्रशिक्षित किया गया है। अगर वह डेटा पक्षपातपूर्ण है, तो ए.आई. का व्यवहार भी पक्षपातपूर्ण होगा। उदाहरण–यदि ए.आई. केवल पश्चिमी देशों के युद्ध डेटा पर प्रशिक्षित हुआ है, तो वह एशियाई या मध्य–पूर्वी युद्ध परिदृश्य को गलत तरीके से समझ सकता है। इससे सांस्कृतिक और भौगोलिक गलतफहमियाँ बढ़ सकती हैं। इससे निष्पक्षता खत्म हो सकती है और रणनीतिक निर्णय ग़लत दिशा में जा सकते हैं।

ए.आई. सिस्टम की तकनीकी विफलता या बाधा

ए.आई. आधारित सिस्टम भी मशीनें हैं, वे भी तकनीकी गड़बड़ियों का शिकार हो सकते हैं। उदाहरण–किसी सैटेलाइट आधारित ए.आई. सिस्टम को अगर GPS सिग्नल न मिले तो उसका निर्णय पूरी तरह बिगड़ सकता है। या फिर, अगर ए.आई. को ऑपरेट करने वाला सर्वर क्रैश हो जाए, तो पूरी प्रणाली ठप पड़ सकती है। युद्ध के दौरान ऐसी गड़बड़ियाँ पूरे मिशन को विफल कर सकती हैं।

उत्तरदायित्व का अस्पष्ट होना

अगर ए.आई. के कारण किसी निर्दोष नागरिक की मृत्यु होती है, तो कौन जिम्मेदार होगा? प्रोग्रामर? सैन्य कमांडर? ऑपरेटर? या खुद ए.आई.? ए.आई. को तो कोर्ट में नहीं बुलाया जा सकता, न उसे सजा दी जा सकती है। इससे "जवाबदेही" की अवधारणा संकट में पड़ सकती है, और इससे कानूनी और नैतिक विवाद बढ़ेंगे।

दुश्मन द्वारा ए.आई. का दुरुपयोग

ए.आई. का ज्ञान सिर्फ अच्छे हाथों में ही नहीं जाएगा। आतंकवादी, साइबर अपराधी और गैर-राज्यीय ताकतें भी इसका दुरुपयोग कर सकती हैं। उदाहरण-अगर कोई हैकर ए.आई. जैमिंग सिस्टम को हैक कर ले और उसे अपने फायदे के लिए चला दे। या फिर, खुद ए.आई. हथियार बनाकर जनसमूह पर हमला किया जाए। यह खतरा केवल युद्ध तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि समाज, नागरिकों और राष्ट्रीय सुरक्षा तक फैल सकता है।

रणनीतिक खतरे और संभावनाएँ

ए.आई. के कारण एक नई 'हथियारों की दौड़' शुरू हो सकती है। हर देश अपने-अपने ए.आई. युद्ध प्रणालियों को पहले और बेहतर बनाने की कोशिश करेगा। यह वैश्विक तनाव को बढ़ा सकता है। साथ ही, अगर कोई ए.आई. सिस्टम गलती से हमला कर दे, तो देशों के बीच संबंध टूट सकते हैं। वहीं दूसरी ओर, ए.आई. सीमित संसाधनों में अधिकतम प्रभाव देने की क्षमता भी रखता है। युद्ध की रणनीतियाँ पहले से अधिक वैज्ञानिक और तार्किक बन सकती हैं। यदि सही तरह से लागू किया जाए तो यह तकनीक युद्ध को छोटा, सटीक और कम जान-माल हानि वाला बना सकती है।

समाधान और सुधार के उपाय

ए.आई. आधारित इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणाली जितनी ताकतवर है, उतनी ही संवेदनशील भी है। अगर इसका सही उपयोग किया जाए, तो यह एक रक्षक बन सकती है। लेकिन यदि सावधानी न बरती जाए, तो यही प्रणाली अनजाने में खतरा भी बन सकती है। इसीलिए, इसे लागू करने से पहले कुछ विशेष उपायों और सुधारों की ज़रूरत है। नीचे हर समाधान को विस्तार से समझाया गया है-

व्याख्या करने योग्य ए.आई.

ए.आई. के निर्णय तभी उपयोगी हैं जब इंसान उन्हें समझ सके। यदि कोई ए.आई. मॉडल किसी निर्णय पर पहुँचता है, तो यह जरूरी है कि उस निर्णय के पीछे का कारण भी स्पष्ट हो। जैसे अगर ए.आई. कहता है कि "यह रडार सिग्नल खतरे का संकेत है", तो हमें यह भी जानना चाहिए कि किन विशेषताओं के आधार पर उसने यह निष्कर्ष निकाला। इससे सैन्य अधिकारी ज्यादा भरोसे के साथ निर्णय ले सकते हैं और जरूरत पड़ने पर उस निर्णय को चुनौती भी दे सकते हैं। इसके लिए एक्स.ए.आई. (Explainable Artificial Intelligence) तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है, जो ए.आई. के 'ब्लैक बॉक्स' को 'व्हाइट बॉक्स' में बदलने का काम करती हैं।

डेटा की गुणवत्ता और विविधता सुनिश्चित करना

ए.आई. को जितना अच्छा डेटा मिलेगा, वो उतना ही बेहतर और भरोसेमंद बनेगा। सैन्य क्षेत्र में डेटा गोपनीय होता है, लेकिन फिर भी प्रशिक्षण के लिए सुरक्षित और विविध डेटा की आवश्यकता होती है। इसका समाधान यह हो सकता है कि "सिंथेटिक डेटा" तैयार किया जाए-मतलब ऐसा डेटा जो वास्तविक जैसा हो, लेकिन किसी भी गोपनीयता का उल्लंघन न करे। इसके अलावा, ऐसे सिमुलेशन तैयार किए जाएँ जिनमें ए.आई. को विभिन्न प्रकार की युद्ध स्थितियों का अनुभव कराया जा सके। इससे वो अनजाने खतरों का सामना करने में भी सक्षम हो सकेगा।

मानव की भूमिका को प्राथमिकता देना

ए.आई. चाहे जितना भी तेज़ और सटीक हो, लेकिन आख़िरी निर्णय की ज़िम्मेदारी इंसान की होनी चाहिए। युद्ध जैसे गंभीर मामलों में मानव की अंतर्ज्ञान शक्ति, अनुभव और नैतिक सोच ए.आई. से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होती है। इसलिए 'Human-in-the-loop' व्यवस्था को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, जिसमें ए.आई. केवल सिफारिश देता है और अंतिम निर्णय मानव द्वारा लिया जाता है। इससे जवाबदेही भी तय रहती है और निर्णयों में मानवीय संवेदनशीलता भी बनी रहती है।

ए.आई. सिस्टम की साइबर सुरक्षा को मजबूत करना

जैसे सैनिकों को बॉडी आर्मर की ज़रूरत होती है, वैसे ही ए.आई. को 'साइबर कवच' की ज़रूरत है। ए.आई. सिस्टम को हैकिंग, स्पूफिंग (नकली सिग्नल), डेटा पॉइज़निंग और मालवेयर से बचाने के लिए विशेष साइबर सुरक्षा उपाय किए जाने चाहिए। उदाहरण के लिए, ए.आई. को इस तरह से प्रशिक्षित किया जाए कि अगर कोई संदिग्ध या विरोधाभासी डेटा आता है, तो वह तुरंत

अलर्ट दे और स्वत: निर्णय लेने के बजाय मानव से पुष्टि मांगे। सैन्य संचार प्रणाली को अलग–अलग स्तर पर एन्क्रिप्शन (कूटलेखन) के ज़रिए सुरक्षित किया जाना चाहिए।

अंतरराष्ट्रीय नियम और आचार संहिता विकसित करना

ए.आई. तकनीक पर अगर नियंत्रण न रखा जाए, तो यह वैश्विक असंतुलन पैदा कर सकती है। जैसे परमाणु हथियारों के लिए अंतरराष्ट्रीय संधियाँ बनी हैं, वैसे ही ए.आई. आधारित युद्ध प्रणालियों के लिए भी वैश्विक नियम, आचार संहिताएँ और पारदर्शिता आवश्यक है। उदाहरण के लिए, यह तय किया जाना चाहिए कि किन परिस्थितियों में ए.आई. आधारित हमला वैध माना जाएगा, और किन मामलों में यह प्रतिबंधित होगा। संयुक्त राष्ट्र जैसे वैश्विक मंचों पर देशों को साथ मिलकर "ए.आई. के शांतिपूर्ण उपयोग के लिए आचार संहिता" तैयार करनी चाहिए।

ए.आई. मॉडल का लगातार परीक्षण और मान्यता प्रणाली

ए.आई. कोई एक बार बनाकर छोड़ देने वाली चीज नहीं है। इसे लगातार वास्तविक परिस्थितियों में परीक्षण की आवश्यकता होती है–विभिन्न तरह की जटिल स्थितियों में, सीमित संसाधनों में, और विरोधी चालों के जवाब में। परीक्षण के बाद ए.आई. सिस्टम को प्रमाणित किया जाए कि वह सैन्य सेवा के लिए उपयुक्त है या नहीं। इस प्रक्रिया में 'रेड टीमिंग' जैसे उपाय किए जा सकते हैं, जहाँ विशेषज्ञ जानबूझकर ए.आई. में त्रुटियाँ खोजने की कोशिश करते हैं।

ए.आई. और इंसान की टीम वर्क को प्रोत्साहन देना

ए.आई. को इंसान के विकल्प के रूप में नहीं, बल्कि एक सहायक साथी के रूप में देखा जाना चाहिए। युद्ध क्षेत्र में ए.आई. तेजी से जानकारी देगा, संभावित खतरों की पहचान करेगा, लेकिन उसका काम केवल सुझाव देना हो। इंसान की भूमिका रहे कि वह उस सुझाव को मंजूरी दे या खारिज करे। इसके लिए ऑपरेटरों को ए.आई. तकनीक की अच्छी समझ और प्रशिक्षण देना भी बहुत आवश्यक है।

ऊर्जा कुशल और हल्के ए.आई. सिस्टम का विकास

युद्ध के मैदान में सीमित बैटरी और संसाधन होते हैं। इसलिए ए.आई. मॉडल ऐसे होने चाहिए जो कम ऊर्जा में, सीमित संसाधनों के साथ भी तेज़ी से काम कर सकें। इसके लिए 'मॉडल कम्प्रेशन', 'एज कंप्यूटिंग' और 'क्लाउड–बेस्ड बैकअप' जैसे तकनीकी उपाय उपयोग किए जा सकते हैं। इससे न केवल युद्ध प्रणाली हल्की और फुर्तीली होगी, बल्कि उसका संचालन भी अधिक टिकाऊ और भरोसेमंद बनेगा। इन सभी उपायों को अपनाकर ही हम ए.आई. आधारित युद्ध प्रणालियों को अधिक सुरक्षित, विश्वसनीय और नैतिक बना सकते हैं। यदि तकनीक को नियंत्रित और पारदर्शी ढंग से अपनाया जाए, तो यह मानवता के लिए वरदान साबित हो सकती है। लेकिन यदि इसे बिना सोचे–समझे अपनाया गया, तो यह हमारे ही खिलाफ एक अनदेखा खतरा बन सकता है।

मानव एआई टीमिंग

आज के तकनीकी युग में एक बड़ी बहस चल रही है–क्या ए.आई. इंसानों की जगह ले लेगा? क्या मशीनें पूरी तरह से युद्ध का संचालन करने लगेंगी? इसका सीधा और स्पष्ट उत्तर है–नहीं। ए.आई. का सबसे उपयुक्त और सुरक्षित उपयोग तब होता है जब वह इंसानों के साथ मिलकर काम करता है, न कि उन्हें पूरी तरह बदलने की कोशिश करता है। इसी को मानव एआई टीमिंग कहते हैं। ए.आई. और मानव के बीच टीम वर्क का मतलब है, एक ऐसा तंत्र बनाना जहाँ इंसान और मशीन दोनों अपनी–अपनी ताकतों का उपयोग करके मिलकर निर्णय लें। यह सहयोग युद्ध जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जहाँ एक भी गलती जान–माल की बड़ी क्षति का कारण बन सकती है।

ए.आई. की ताकत – गति और गणना

ए.आई. को बड़ी मात्रा में डेटा को तेजी से स्कैन करने, पैटर्न पहचानने, और संभावित खतरों की भविष्यवाणी करने में महारत हासिल है। उदाहरण के लिए–ए.आई. सेकेंडों में हजारों रडार सिग्नल्स को स्कैन कर सकता है और बता सकता है कि इनमें से कौन–सा खतरा बन सकता है। यह पुरानी घटनाओं के आधार पर यह अनुमान भी लगा सकता है कि दुश्मन अगला कदम क्या उठा सकता है। लेकिन यह केवल गणित और आँकड़ों के आधार पर काम करता है। इसमें संवेदना, अनुभव और अंतर्ज्ञान की क्षमता नहीं होती।

मानव की ताकत–अनुभव, विवेक और नैतिकता

मनुष्य में जो सबसे अनमोल गुण होते हैं–जैसे अनुभव, सोचने की गहराई, नैतिकता और स्थिति की समझ–वे ए.आई. में नहीं हो सकते। एक अनुभवी सैन्य अधिकारी यह समझ सकता है कि कोई सिग्नल खतरे से अधिक शायद छलावा हो। वह राजनीतिक, कूटनीतिक और मानवीय दृष्टिकोण से भी सोच सकता है कि किस कार्य का क्या प्रभाव पड़ेगा। यही गुण युद्ध जैसी अस्थिर परिस्थितियों में ए.आई. को पूरक बनाते हैं, विकल्प नहीं। क्यों ज़रूरी है मानव एआई टीम? निर्णय की गुणवत्ता बढ़ती है–जब ए.आई. और मानव मिलकर निर्णय लेते हैं, तो गणितीय तेज़ी और मानवीय विवेक दोनों मिलते हैं। इससे निर्णय तेज़, सटीक और संतुलित होते हैं। गलती की संभावना घटती है–ए.आई. गलती कर सकता है, खासकर जब उसे अज्ञात डेटा मिले। लेकिन यदि इंसान उसके निर्णय की समीक्षा करता है, तो गलती पकड़ में आ सकती है। उत्तरदायित्व स्पष्ट रहता है–ए.आई. यदि पूरी तरह से निर्णय लेता है, तो जवाबदेही तय करना मुश्किल हो जाता है। लेकिन यदि अंतिम निर्णय इंसान का होता है, तो ज़िम्मेदारी स्पष्ट रहती है। सैनिकों का आत्मविश्वास बढ़ता है–जब ऑपरेटर जानते हैं कि ए.आई. केवल सुझाव दे रहा है और अंतिम निर्णय उनकी जानकारी और विवेक पर आधारित है, तो उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। वे तकनीक को सहयोगी के रूप में देखते हैं, प्रतियोगी के रूप में नहीं। मानव एआई टीम? के लिए जरूरी पहलू इंटरफेस–ए.आई. सिस्टम का उपयोग करना आसान होना चाहिए। ऐसा डैशबोर्ड हो जहाँ ऑपरेटर को तुरंत खतरे, सुझाव और विकल्प दिखें, और वह उन पर कार्रवाई कर सके। प्रशिक्षण–सैनिकों और ऑपरेटरों को ए.आई. सिस्टम की कार्यप्रणाली, सीमाएँ और संभावनाएँ समझाई जानी चाहिए। उनका प्रशिक्षण केवल मशीन चलाने का नहीं, बल्कि उसकी सोच को समझने का होना चाहिए।

नियंत्रण बनाए रखना–ए.आई. को कभी भी "पूर्ण नियंत्रण" नहीं दिया जाना चाहिए। स्वशासी शस्त्र प्रणाली में भी एक "कटऑफ स्विच" होना चाहिए जिससे किसी भी आपात स्थिति में इंसान हस्तक्षेप कर सके।

फीडबैक सिस्टम–ए.आई. के निर्णयों का मूल्यांकन करने के लिए एक मजबूत फीडबैक सिस्टम होना चाहिए। इससे पता चलेगा कि किस निर्णय ने कितना लाभ या हानि पहुँचाई।

भविष्य की दिशा– "सहयोगी बुद्धिमत्ता" का मतलब है, इंसान और ए.आई. की ऐसी साझेदारी जिसमें दोनों एक–दूसरे को मजबूत बनाते हैं। इंसान ए.आई. को वास्तविक अनुभवों से बेहतर बनाता है, और ए.आई. इंसान को अधिक विकल्प और सूचनाएँ देकर निर्णय में सहायता करता है। भविष्य की युद्ध प्रणालियाँ इस मॉडल पर आधारित होंगी। जहाँ मशीनें केवल आदेश नहीं लेंगी, बल्कि सुझाव देंगी, और अंतिम निर्णय इंसान लेंगे।

अगर मानव एआई टीम नहीं हुआ तो?

यदि ए.आई. को पूरी तरह नियंत्रण दे दिया गया और इंसान केवल दर्शक बन गया, तो यह स्थिति बहुत ख़तरनाक हो सकती है– गलती से नागरिकों या मित्र सेनाओं पर हमला हो सकता है। युद्ध की शुरुआत किसी 'गलत पहचान' से हो सकती है। और सबसे बड़ी बात–किसी भी कार्रवाई की नैतिक या कानूनी ज़िम्मेदारी तय करना असंभव हो जाएगा। इसलिए यह स्पष्ट है कि ए.आई. का बुद्धिमान उपयोग केवल "संयुक्त सहभागिता" से ही संभव है।

निष्कर्ष

ए.आई. और इंसान दोनों की अपनी–अपनी ताकतें हैं। एक तेज़ और निष्कलंक गणना करता है, दूसरा सोचता, समझता और महसूस करता है। जब ये दोनों साथ काम करते हैं, तभी कोई तकनीक मानव हित में सशक्त रूप से उपयोग हो सकती है। ए.आई. को सहयोगी के रूप में देखें–एक ऐसा साथी जो कभी थकता नहीं, कभी चूकता नहीं, लेकिन जो हर निर्णय से पहले अपने इंसानी कमांडर की अनुमति लेता है। यही है सही रास्ता–इंसानी समझ + मशीन की गति = सुरक्षित, सशक्त और जिम्मेदार युद्ध प्रणाली। ए.आई. एक अद्भुत तकनीक है, लेकिन यह तभी फायदेमंद होगी जब इसे समझदारी, संयम और नियंत्रण के साथ लागू किया जाए। अगर इसे बिना नियम, बिना पारदर्शिता और बिना नैतिकता के लागू किया गया, तो यह लाभ के बजाय विनाश का कारण बन सकती है। ए.आई. को एक 'सहयोगी' बनाकर इस्तेमाल करें, निर्णायक' नहीं। मानव विवेक को सर्वोच्च प्राथमिकता दें। अगर ऐसा हुआ, तो ए.आई. आने वाले समय में युद्ध के क्षेत्र में शांति का साधन भी बन सकती है–तेज, सटीक और कम हानिकारक।

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

कर्मचारियों की सृजनशीलता

दशहरा–बुराई पर अच्छाई की विजय का पर्व

यादवेन्द्र
सीआरएल गाजियाबाद

दशहरा, जिसे विजयादशमी के नाम से भी जाना जाता है, भारत के प्रमुख और पवित्र त्योहारों में से एक है। यह पर्व आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को मनाया जाता है और पूरे देश में अत्यंत श्रद्धा, उत्साह और उमंग के साथ मनाया जाता है। यह त्योहार न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को भी सुदृढ़ करता है। दशहरा का मुख्य संदेश है– अच्छाई की बुराई पर विजय, सत्य की असत्य पर जीत और धर्म की अधर्म पर जीत।

अधर्मस्य विनाश:, धर्मस्य स्थापना च विजयादशम्या संदेश: अस्ति।

दशहरा का पौराणिक आधार–

दशहरा का संबंध मुख्यत: भगवान राम की, लंका के राक्षसराज रावण पर विजय से जुड़ा हुआ है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, जब रावण ने माता सीता का हरण किया, तब भगवान राम ने वानर सेना के साथ मिलकर लंका पर आक्रमण किया और दस दिन तक चले भीषण युद्ध के बाद दशमी के दिन रावण का वध किया। इसीलिए इस दिन को विजयादशमी कहा जाता है। यह घटना हमें सिखाती है कि चाहे बुराई कितनी ही शक्तिशाली क्यों न हो, अंतत: सत्य और धर्म की ही जीत होती है।

दशहरा का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू देवी दुर्गा से भी जुड़ा है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, महिषासुर नामक राक्षस ने अपनी शक्ति के बल पर देवताओं को पराजित कर दिया था। तब देवी दुर्गा ने नौ दिनों तक उससे युद्ध किया और दसवें दिन उसका वध किया। इस प्रकार दशहरा देवी दुर्गा की विजय का भी प्रतीक है। इसी कारण दशहरा से पहले नौ दिनों तक नवरात्रि का पर्व मनाया जाता है, जिसमें देवी की पूजा–अर्चना की जाती है।

विभिन्न रूपों में दशहरा पर्व का आयोजन

भारत के विभिन्न भागों में दशहरा अलग–अलग तरीकों से मनाया जाता है। उत्तर भारत में रामलीला का आयोजन किया जाता है, जिसमें भगवान राम के जीवन की घटनाओं का मंचन किया जाता है। दशमी के दिन रावण, मेघनाद और कुंभकर्ण के विशाल पुतलों का दहन किया जाता है, जो बुराई के अंत का प्रतीक होता है। यह दृश्य अत्यंत आकर्षक और प्रेरणादायक होता है, जिसे देखने के लिए हजारों लोग एकत्र होते हैं। कुल्लू (हिमाचल प्रदेश) का दशहरा बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ दशहरा रावण दहन से नहीं, बल्कि देवताओं की शोभायात्रा और रथ यात्रा से मनाया जाता है।

पश्चिम बंगाल में दशहरा दुर्गा पूजा के रूप में मनाया जाता है। यहां दस दिनों तक भव्य पंडाल सजाए जाते हैं और देवी दुर्गा की प्रतिमाओं की स्थापना की जाती है। दशमी के दिन इन प्रतिमाओं का विसर्जन किया जाता है, जिसे "विजया दशमी" कहा जाता है। यह उत्सव कला, संस्कृति और श्रद्धा का अद्भुत संगम होता है।

दक्षिण भारत में भी दशहरा बड़े उत्साह से मनाया जाता है। मैसूर का दशहरा विशेष रूप से प्रसिद्ध है, जहां भव्य जुलूस निकाले जाते हैं और महलों को सजाया जाता है। यहां यह पर्व राजसी ठाठ–बाट के साथ मनाया जाता है और देश–विदेश से पर्यटक इसे देखने आते हैं।

दशहरा का महत्व

दशहरा का सामाजिक महत्व अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह पर्व हमें सिखाता है कि हमें अपने भीतर की बुराइयों–जैसे अहंकार, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या आदि–का नाश करना चाहिए। यह पर्व समाज में एकता, भाईचारे और सद्भावना को बढ़ावा देता है। लोग मिलकर रामलीला, मेले और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं, जिससे सामाजिक मेल–जोल बढ़ता है। यह त्योहार बुराई पर अच्छाई की जीत का संदेश देकर समाज में नैतिक मूल्यों को मजबूत करता है।

"एकता सौहार्दस्य मूलं, समाजस्य बलं भवति।"

दशहरा का आर्थिक महत्व यह है कि, इस पर्व के दौरान बाजारों में खरीदारी बढ़ जाती है, जिससे व्यापार और उद्योग को बढ़ावा मिलता है। लोग नए कपड़े, वाहन, इलेक्ट्रॉनिक्स, सोना–चांदी और सजावटी वस्तुएँ खरीदते हैं, जिससे अर्थव्यवस्था में धन का प्रवाह बढ़ता है। मेले, रामलीला और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन से स्थानीय व्यवसायों, कारीगरों और छोटे व्यापारियों को रोजगार मिलता है। परिवहन, पर्यटन और खाद्य उद्योग को भी लाभ होता है। इस प्रकार दशहरा आर्थिक गतिविधियों को गति देकर रोजगार सृजन और बाजार विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

दशहरा का पर्यावरणीय महत्व आज के समय में विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो गया है। यह पर्व हमें प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी और संतुलन बनाए रखने का संदेश देता है। परंपरागत रूप से दशहरा सादगी और प्राकृतिक सामग्रियों के उपयोग के साथ मनाया जाता था, जिससे पर्यावरण को नुकसान नहीं होता था। आज के संदर्भ में, रावण दहन में प्रदूषण को कम करने के लिए इको–फ्रेंडली सामग्री का उपयोग करना आवश्यक है। यह त्योहार हमें वृक्षारोपण, स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करता है। यदि हम इस पर्व को पर्यावरण–अनुकूल तरीके से मनाएं, तो यह न केवल सांस्कृतिक परंपरा को बनाए रखेगा बल्कि प्रकृति की रक्षा में भी योगदान देगा।

"प्रकृतिः रक्षिता रक्षति।"

आज के आधुनिक युग में भी दशहरा का महत्व अत्यंत प्रासंगिक है। यह पर्व केवल धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि सत्य की असत्य पर विजय का प्रतीक है। रावण के दहन के माध्यम से यह संदेश दिया जाता है कि अहंकार, लोभ, क्रोध और अन्य बुराइयों का अंत अवश्य होता है। वर्तमान समय में, जब भौतिकवाद और प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है, दशहरा हमें नैतिक मूल्यों, सदाचार और आत्मसंयम की याद दिलाता है।

यह पर्व हमें अपने भीतर की नकारात्मकताओं को पहचानकर उन्हें समाप्त करने की प्रेरणा देता है। साथ ही, यह समाज में एकता, भाईचारे और सांस्कृतिक परंपराओं को मजबूत करता है। तकनीकी प्रगति के बावजूद, दशहरा हमें हमारी जड़ों से जोड़ता है और जीवन में सकारात्मकता लाने का संदेश देता है। इसलिए, आज भी दशहरा केवल परंपरा नहीं, बल्कि एक जीवन–दर्शन है।

"दुर्गुणानां दहनं, सद्गुणानां वर्धनम् एव विजयादशमी।"

अंत में, यह कहा जा सकता है कि दशहरा केवल एक त्योहार नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की एक प्रेरणा है। यह हमें सिखाता है कि हमें हमेशा सत्य, धर्म और न्याय के मार्ग पर चलना चाहिए और बुराई का साहसपूर्वक सामना करना चाहिए। जब हम इस पर्व को पूरे मन से मनाते हैं और इसके संदेश को अपने जीवन में उतारते हैं, तभी इसका वास्तविक महत्व सिद्ध होता है।

इस प्रकार दशहरा हमारे जीवन में सकारात्मकता, नैतिकता और आत्मविश्वास का संचार करता है। यह हमें याद दिलाता है कि चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों, यदि हम सच्चाई के साथ खड़े हैं, तो जीत निश्चित रूप से हमारी होगी।

शक्ति, संस्कृति और आंतरिक जागृति का महापर्व–दुर्गा पूजा

पूजा गोस्वामी
सीआरएल गाजियाबाद

दुर्गा पूजा भारत के सबसे जीवंत और सार्थक त्योहारों में से एक है, जो देश की गहरी आध्यात्मिक जड़ों और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है। भारत में, त्योहार केवल उत्सव मनाने के अवसर नहीं हैं, वे दर्शन, भक्ति और परंपराओं की निरंतरता की जीवंत अभिव्यक्ति हैं। इनमें से, दुर्गा पूजा एक भव्य समारोह के रूप में उभरती है जो आध्यात्मिक गहराई, कलात्मक रचनात्मकता और सामाजिक एकता को खूबसूरती से जोड़ती है। यह न केवल एक देवता की पूजा करने के बारे में है बल्कि शक्ति, दिव्य ऊर्जा को समझने के बारे में भी है जो ब्रह्मांड में और प्रत्येक व्यक्ति के भीतर मौजूद है।

दुर्गा पूजा, देवी दुर्गा की पूजा को समर्पित है, जिसे ब्रह्मांडीय शक्ति का सर्वोच्च अवतार माना जाता है। यह त्योहार मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल में मनाया जाता है, विशेष रूप से कोलकाता में, जहां भव्य पंडाल और खूबसूरती से तैयार की गई मूर्तियां लाखों भक्तों को आकर्षित करती हैं। हिंदू महीने अश्विन (सितंबर–अक्टूबर) के दौरान, यह नौ पवित्र दिनों तक मनाया जाता है, जिसे नवरात्रि के रूप में जाना जाता है और विजयदशमी के साथ समाप्त होता है, जो बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। भक्तों का मानना है कि इस समय, देवी मां अपने बच्चों की रक्षा, समृद्धि और खुशी के लिए धरती पर उतरती हैं।

दुर्गा पूजा का महत्व धर्म से परे सांस्कृतिक, सामाजिक और दार्शनिक आयामों में फैलता है। धार्मिक रूप से, यह महिलाओं की शक्ति और महत्व पर जोर देते हुए दिव्य स्त्री ऊर्जा की पूजा का प्रतिनिधित्व करता है। सांस्कृतिक रूप से, यह भव्य सजावट और प्रदर्शनों के माध्यम से कला, संगीत, नृत्य और शिल्प कौशल को प्रदर्शित करता है। सामाजिक रूप से, यह समुदायों को एक साथ लाती है, एकता और सद्भाव को बढ़ावा देती है। दार्शनिक रूप से, यह लोगों को इस शाश्वत सत्य की याद दिलाती है कि धार्मिकता अंततः बुराई पर विजय प्राप्त करती है, और उस शक्ति को हमेशा करुणा के साथ संतुलित किया जाना चाहिए।

दुर्गा पूजा की उत्पत्ति देवी महात्म्य जैसे प्राचीन ग्रंथों में देखी जा सकती है, जो मार्कण्डेय पुराण का एक हिस्सा है, जहां देवी दुर्गा को सर्वोच्च के रूप में वर्णित किया गया है। देवी महात्म्य के एक प्रसिद्ध श्लोक में कहा गया है –

"या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥"

इसका अर्थ यह है कि देवी शक्ति के रूप में सभी प्राणियों में निवास करती हैं और हम उन्हें बार–बार नमन करते हैं। यह पद एक गहन सत्य पर प्रकाश डालता है कि हम बाहरी रूप से जिस दिव्य ऊर्जा की पूजा करते हैं वह हमारे भीतर पहले से ही मौजूद है। ऐतिहासिक रूप(संदर्भ–कनाई एल. मुखर्जी द्वारा दुर्गा पूजा) से, दुर्गा पूजा प्रारंभिक वैदिक और पौराणिक परंपराओं में मौजूद थी और बाद में 16 वीं और 18 वीं शताब्दी के दौरान शाही संरक्षण में बंगाल में भव्य सार्वजनिक समारोहों में विकसित हुई, अंततः सभी के लिए सुलभ सामुदायिक–आधारित (सरबोजनीन) त्योहार बन गई।

दुर्गा पूजा की पौराणिक नींव राक्षस राजा महिषासुर के इर्द–गिर्द घूमती है, जिसने एक वरदान के माध्यम से अपार शक्ति प्राप्त की और उसे देवताओं और मनुष्यों के लिए अजेय बना दिया। उसकी क्रूरता ने ब्रह्मांड में अराजकता पैदा की, जिससे देवी दुर्गा (दस हाथ देवी) का निर्माण करने के लिए देवताओं को अपनी ऊर्जा को एकजुट करने के लिए मजबूर किया। नौ दिन और रात चलने वाली भीषण लड़ाई के बाद, दुर्गा ने दसवें दिन महिषासुर को हराया। इस प्रकार दुर्गा को महिषासुर मर्दिनी कहा जाता है। यह जीत अहंकार, अनुशासन और नकारात्मकता पर आत्म–जागरूकता, अनुशासन और साहस की जीत का प्रतीक है।

दुर्गा को नौ अलग–अलग रूपों में पूजा जाता है, जिसे नवदुर्गा के रूप में जाना जाता है, प्रत्येक आध्यात्मिक विकास के एक चरण का प्रतिनिधित्व करता है। दुर्गा के नौ रूप केवल धार्मिक प्रतीक नहीं हैं–वे व्यक्तिगत विकास के लिए एक चरण–दर–चरण ब्लूप्रिंट बनाते हैं।

1. शैलपुत्री–स्थिरता (मूल्यों पर आधारित रहें)
2. ब्रह्मचारिणी–विषय (ध्यान और संगतता)
3. चंद्रघंटा–आत्मविश्वास (दबाव में अनुग्रह)
4. कुष्मांडा–रचनात्मकता (सकारात्मक सोच)
5. स्कंदमाता–जिम्मेदारी (नेतृत्व और देखभाल)
6. कात्यायनी–साहस (सत्य के लिए खड़े हों)
7. कालरात्रि–निडरता (सीधे चुनौतियों का सामना करें)
8. महागौरी–शुद्धता (पिछली गलतियों को छोड़ दें)
9. सिद्धिदात्री–प्रज्ञा (उच्च उद्देश्य प्राप्त करें)

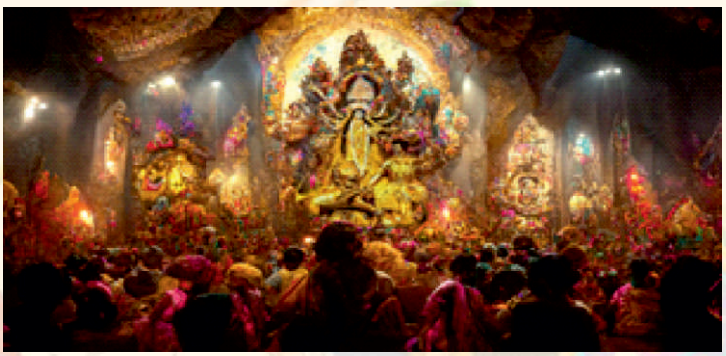

एक साथ, वे स्थिरता और अनुशासन से ज्ञान और आत्म–साक्षात्कार की यात्रा का प्रतीक हैं। इन रूपों के माध्यम से, दुर्गा पूजा व्यक्तिगत और आध्यात्मिक विकास के लिए एक पूरा मार्ग प्रस्तुत करती है।

त्योहार का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू गणेश (बाधाओं को दूर करते), कार्तिकेय (युद्ध के देवता), लक्ष्मी (संपदा और समृद्धि)और सरस्वती (ज्ञान और कला) सहित उनके दिव्य परिवार के साथ दुर्गा का चित्रण है। इनमें से प्रत्येक जीवन के आवश्यक पहलुओं–सफलता, शक्ति, धन और ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है–जो दर्शाता है कि एक संतुलित जीवन के लिए इन सभी तत्वों के बीच सामंजस्य की आवश्यकता है।

पूरे भारत में दुर्गा पूजा अलग–अलग तरीकों से मनाया जाता है, जो भारतीय संस्कृति की विविधता को दर्शाता है। बंगाल में, यह भव्य पंडाल, कलात्मक मूर्तियों और सांस्कृतिक प्रदर्शनों के साथ मनाया जाता है। दुर्गा पूजा के अनुष्ठान गहरे रूप से प्रतीकात्मक हैं और जहां दुर्गा पूजा मुख्यत–5 दिनों में मनाई जाती है–षष्ठी (आमंत्रण और बोधन)–मिट्टी से मूर्तियों का निर्माण सामान्य को दिव्य में बदलने का प्रतिनिधित्व करता है। प्रार्थना (बोधन) और प्राण प्रतिष्ठा के अनुष्ठान हमारे जीवन में दिव्य ऊर्जा को आमंत्रित करने का संकेत देते हैं। सप्तमी (मुख्य पूजा की शुरुआत), अष्टमी (सबसे पवित्र दिन), नवमी (अनुष्ठानों का समापन), दशमी (विसर्जन)। संधि पूजा (अष्टमी और नवमी के बीच किया जाता) बुराई पर विजय के क्षण को चिह्नित करती है, जबकि विसर्जन, पानी में मूर्तियों का विसर्जन, निर्माण और विसर्जन के चक्र और भौतिक अस्तित्व की अस्थायी प्रकृति का प्रतीक है। ये अनुष्ठान बताते हैं कि रूप अस्थायी, मूल्य और आध्यात्मिक सत्य शाश्वत हैं। उत्तर भारत में, यह नवरात्रि उपवास (व्रत), राम लीला और कन्या पूजन–जिसमें 9 लड़कियाँ नवदुर्गा का प्रतिनिधित्व करती हैं और 1 लड़का भैरव (शिव के रूप) का प्रतिनिधित्व करता है जो ऊर्जा और चेतना के संतुलन का प्रतीक है। दक्षिण भारत में, यह त्योहार नवरात्रि के रूप में मनाया जाता है जिसमें गुड़िया की व्यवस्था होती है जिसे गोलू के रूप में जाना जाता है और दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती की पूजा की जाती है। ये विभिन्न अभ्यास विविधता में एकता को उजागर करते हैं जो भारतीय परंपराओं को परिभाषित करती हैं।

आधुनिक जीवन में देवी दुर्गा का प्रतीकवाद बहुत प्रासंगिक है। उनकी दस भुजाएं कई जिम्मेदारियों को संभालने की क्षमता का प्रतिनिधित्व करती हैं, उनके हथियार ज्ञान और कौशल का प्रतीक हैं, उनका शेर इच्छाओं पर नियंत्रण का प्रतीक है, और उनकी शांत अभिव्यक्ति भावनात्मक संतुलन को दर्शाती है। एक अन्य श्लोक उनकी सुरक्षा प्रकृति को व्यक्त करता है–

"सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते॥"

इसका अर्थ यह है कि हे देवी, समस्त शुभता का स्रोत, हमें सुरक्षा और परिपूर्णता प्रदान करें। यह सिखाता है कि विश्वास और आंतरिक स्थिरता सार्थक जीवन के लिए आवश्यक हैं। दुर्गा पूजा भारतीय संस्कृति को संरक्षित करने में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह कलाकारों और शिल्पकारों का समर्थन करती है, सामुदायिक संबंधों को मजबूत करती है और शक्ति के अवतार के रूप में महिलाओं के प्रति सम्मान को बढ़ावा देती है। 2021 में दुर्गा पूजा को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में यूनेस्को द्वारा मान्यता दी गई है, यह भारत की समृद्ध और जीवित परंपराओं का एक साक्ष्य है।

अंत में, दुर्गा पूजा केवल एक त्योहार नहीं है बल्कि जीवन का एक संपूर्ण दर्शन है। यह भक्ति को संस्कृति, अर्थ के साथ अनुष्ठान और आधुनिक प्रासंगिकता के साथ परंपरा के साथ जोड़ती है। यह हमें याद दिलाती है कि हम जो दिव्य शक्ति चाहते हैं वह हमारे भीतर पहले से ही है। इस आंतरिक शक्ति को जागृत करने से हम ताकत, बुद्धि और सद्भाव से भरा जीवन जी सकते हैं।

"दीपावली के दीप सा बन जाऊँ मैं"

सत्यप्रकाश राय,
बेंगलुरु कॉमप्लेक्स

छोटा सा दीप बन जाऊँ मैं, अँधियारे में जगमगाऊँ मैं।
हवा चले तो भी न डरूँ, हर मुश्किल से टकराऊँ मैं।।

फूलों सी खुशबू बन बिखरूँ, जीवन में रंग सजाऊँ मैं।
दीपक बन हर अंधियारे में, प्रेम की लौ जलाऊँ मैं।।

स्नेह और करुणा के दीप जला कर , हर राह को उजियारा दूँ मैं।
अपनी छोटी सी दुनिया में, खुशियों का सागर भर दूँ मैं।।

राहों में काँटे भी मिलें, फिर भी मुस्कुराता जाऊँ मैं।
हर दिल में प्यार जगा कर, दुनिया में जगमगाऊँ मैं।।

सपनों को सच कर दिखाऊँ, हिम्मत से आगे बढ़ता जाऊँ मैं।
दीप नहीं, अब सूरज बनकर, हर दिशा में रोशनी फैलाऊँ मैं।।

नाग पंचमी–प्रकृति और आस्था का अद्भुत संगम

सोनल यादव
नवी मुंबई

नाग पंचमी भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण त्योहार है जो श्रावण मास मे मनाया जाता है। यह दिन सर्पों के प्रति श्रद्धा और प्रकृति के साथ हमारे गहरे संबंध को दर्शाता हैं। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में सर्पों सर्पो का विशेष महत्व रहा है, क्योंकि वे खेतों में चूहों जैसे हानिकारक जीवों को नियंत्रित करके फसलों की रक्षा करते हैं।

इस दिन लोग नाग देवता की पूजा करने के साथ दूध, फल और हल्दी अर्पित करते है। कई स्थानों पर मंदिरों में विशेष आयोजन होता है और घरों के द्वार पर नाग की आकृति बनाई जाती है। यह परंपरा केवल धार्मिक आस्था ही नहीं, बल्कि जीव–जंतुओं के प्रति सम्मान का प्रतीक भी हैं।

नाग पंचमी हमें ये सिखाती है की प्रकृति के हर जीव का अपना महत्व होता है। सर्प, जिन्हें अक्सर डर और खतरे का प्रतीक माना जाता है, लेकिन वास्तव में ये पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में अहम भूमिका निभाते है। इसलिए इस दिन नाग देवता को पूजा के माध्यम से सम्मान दिया जाता है।

आज के समय में जब पर्यावरण संरक्षण एक बड़ी चुनौती बन गयी है, नाग पंचमी का संदेश और भी प्रासंगिक हो जाता है। यह त्योहार हमें याद दिलाता है कि हमें प्रकृति के हर तत्व के साथ सामंजस्य बनाकर रहना चाहिए।

संक्षेप में नाग पंचमी केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि यह प्रकृति, परंपरा और मानव के बीच संतुलन बनाए रखने का संदेश देने वाला एक सुंदर पर्व है।

कविता–

श्रावण की फुहारों में ,
भक्ति का रंग छाए,
नाग देवता के चरणों में,
हर मन शीश झुकाए।
धरती के ये रक्षक हैं,
संतुलन के आधार,
इनसे ही हरियाली हैं,
इनसे ही संसार।
डर नहीं, सम्मान करें,
प्रकृति का ये रूप,
नाग पंचमी सिखाती है,
जीवन का अनूप।

पंजाब की माटी और अध्यात्म का संगम–लोहड़ी व गुरुपर्व के सांस्कृतिक आयाम

डॉ. अक्षय लोहट
पंचकुला

भारतीय उपमहाद्वीप की पहचान उसकी विविधतापूर्ण उत्सवधर्मिता में निहित है। यहाँ त्योहार केवल कैलेंडर की तिथियाँ नहीं, बल्कि सामूहिक चेतना का पुनरुद्धार हैं। उत्तर भारत, विशेषकर पंजाब की सांस्कृतिक विरासत में लोहड़ी और गुरुपर्व दो ऐसे प्रकाशपुंज हैं, जो क्रमशः भौतिक और आध्यात्मिक अंधकार को मिटाने का सामर्थ्य रखते हैं।

1. लोहड़ी–सौर चक्र और सामुदायिक ऊष्मा का दर्शन

लोहड़ी का पर्व मानवीय श्रम और प्रकृति के ऋतु–परिवर्तन के बीच एक सेतु है। यह उत्सव उस समय आता है जब शीत ऋतु अपने चरम को पार कर 'सूर्य' के उत्तरायण होने की प्रतीक्षा करती है।

- अग्नि का सामाजिक अनुष्ठान–लोहड़ी की 'धूनी' केवल सूखी लकड़ियों का जलना नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक यज्ञ है। प्राचीन काल से ही अग्नि को साक्षी मानकर प्रतिज्ञाएँ ली जाती रही हैं। जब पूरा समुदाय इस अग्नि के घेरे में बैठता है, तो वर्ग–भेद, ऊंच–नीच और व्यक्तिगत ईर्ष्या उस पवित्र ज्वाला में भस्म हो जाती है।
- लोक–गाथाओं का स्वर–दुल्ला भट्टी की कथा इस पर्व का प्राण है। यह कथा हमें याद दिलाती है कि त्योहार का वास्तविक अर्थ कमज़ोर की रक्षा और अन्याय का प्रतिरोध है। 'तिल–शक्कर' का दान दरअसल मिठास और लघुता के मेल का प्रतीक है।
- कृषि और कृतज्ञता–किसान के लिए यह अपनी मिट्टी से जुड़ने का क्षण है। नई फसल के आगमन की खुशी को 'तिलचौली' के रूप में अग्नि को समर्पित करना यह दर्शाता है कि मनुष्य जो भी प्राप्त करता है, उसका प्रथम अंश वह उस ब्रह्मांडीय शक्ति को लौटा देता है।

2. गुरुपर्व–आत्मिक ज्योति और मानवता का महाकुंभ

यदि लोहड़ी लोक–संस्कृति का उत्सव है, तो गुरुपर्व (प्रकाश उत्सव) आत्मा के परिष्कार का पर्व है। यह उस 'शब्द–गुरु' की आराधना है जिसने मनुष्य को मनुष्यता का पाठ पढ़ाया।

- अंधकार का विलोपन–गुरु नानक देव जी का आगमन 'सत्य के सूर्य' का उदय था। गुरुपर्व हमें याद दिलाता है कि सबसे बड़ा चमत्कार किसी मृत को जीवित करना नहीं, बल्कि सोई हुई मानवीय चेतना को जगाना है।
- संगत और पंगत का समाजशास्त्र–गुरुद्वारों में उमड़ने वाली 'संगत' और बिना किसी भेदभाव के सेवा करती 'पंगत', आधुनिक लोकतंत्र की सबसे प्राचीन और शुद्धतम इकाई है। यहाँ अहंकार की आहुति दी जाती है और सेवा को ही परम धर्म माना जाता है।
- शाश्वत शांति का मार्ग–कीर्तन और गुरबाणी के शब्द केवल कानों के लिए संगीत नहीं, बल्कि अशांत मन के लिए औषधि हैं। गुरुपर्व का संदेश 'सरबत दा भला' (सबका भला) में समाहित है, जो इसे किसी एक धर्म तक सीमित न रखकर वैश्विक मानवता का पर्व बना देता है।

3. सांस्कृतिक संश्लेषण–जहाँ धूनी और दीप मिलते हैं

इन दोनों पर्वों का आंतरिक संबंध 'प्रकाश' से है। एक ओर लोहड़ी की ऊँची उठती लपटें हैं जो बाहरी ठंड और आलस्य को भगाती हैं, दूसरी ओर गुरुपर्व के दीप हैं जो भीतर के अज्ञान को मिटाते हैं।

दृष्टिकोण	लोहड़ी (लोक तत्व)	गुरुपर्व (आध्यात्मिक तत्व)
प्रतीक	प्रज्वलित अग्नि (Fire)	ज्ञान की ज्योति (Light)
आधार	पृथ्वी और फसल (Nature)	परमात्मा और गुरु (Divinity)
ऊर्जा	उल्लास और नृत्य (Vigor)	शांति और सिमरन (Serenity)

4. समकालीन विश्व में इन पर्वों की अनिवार्यता

आज के उत्तर–आधुनिक और एकाकी युग में, यह त्योहार 'सामूहिकता' का अंतिम दुर्ग हैं। लोहड़ी हमें मोबाइल स्क्रीन से बाहर निकालकर पड़ोसियों के साथ बैठकर आग तापने और गीत गाने के लिए प्रेरित करती है। वहीं गुरुपर्व हमें सिखाता है कि आर्थिक समृद्धि तब–तक अधूरी है जब–तक उसमें परोपकार और वंद छकने (साझा करने) की भावना न हो।

उपसंहार–एक अविभाज्य विरासत

लोहड़ी और गुरुपर्व भारतीय संस्कृति के वे दो फेफड़े हैं, जिनसे यह देश अपनी जीवंतता की सांस लेता है। यह त्योहार हमें सिखाते हैं कि उत्सव केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि स्वयं को शुद्ध करने और समाज को जोड़ने की एक निरंतर प्रक्रिया है। जब तक खेतों में मक्के की बालियाँ झूमती रहेंगी और गुरु के शब्द गूँजते रहेंगे, भारतीय संस्कृति का यह गौरवशाली अध्याय विश्व को मार्ग दिखाता रहेगा।

- केंद्र सरकार के हर कार्यालय (पीएसयू और बैंक सहित) में राभाकास (राजभाषा कार्यान्वयन समिति) गठित होना अनिवार्य है। कार्यालय के प्रशासनिक प्रमुख (वरिष्ठतम अधिकारी) इस समिति के अध्यक्ष होते हैं और सभी विभाग / प्रभाग प्रमुख इसके सदस्य होते हैं। कार्यालय का राजभाषा का कामकाज देखने वाले अधिकारी इसके सदस्य सचिव होते हैं। समिति की प्रत्येक तिमाही में एक बैठक यानी वर्ष में 04 बैठकें होनी अनिवार्य है।

छठ का ये त्योहार

अंकिता कुमारी
सीआरएल गाजियाबाद

चार दिनों का है ये महापर्व निराला,
नहाय–खाय से शुरू, फिर खरना का खीर प्याला।
तीसरे दिन संध्या अर्घ्य में डूबते सूरज को नमन,
चौथे दिन उषा अर्घ्य में उगते सूरज को वंदन।

सूर्य देव हैं जग के दाता, प्रकाश की धारा,
उनकी एक किरण से जगमग हो जाए जग सारा।
छठी मैया हैं ब्रह्म की शक्ति, देवसेना अवतारी
संतान की रक्षक, ममता की मूरत–महिमा है भारी।

सूर्यपुत्र कर्ण ने जल में खड़े हो सूर्य को पुकारा,
तब से चली आ रही है ये पावन परंपरा।
पीढ़ी दर पीढ़ी बहता है आस्था का झरना,
छठी मैया की कृपा से महके हर घर का आँगन सारा।

बिहार, झारखंड, यूपी और नेपाल का ये त्योहार,
श्रद्धा और उल्लास से भर देता हर द्वार।
अब तो विदेशों में भी गूँजे ये नाम,
छठ माई की महिमा गूँजे सुबह–ओ–शाम।

मेरी मम्मी करती हैं ये पूजा हर साल,
दिवाली से ही शुरू हो जाती है तैयार।
घर में जैसे उतर आता है उजियारा,
छठ के आने से बदल जाता है नज़ारा।

रिश्तेदार सब आते हैं दूर–दूर से,
घर गूँजता है हँसी से, प्यार से, शोर से।
साल भर की दूरी पल में मिट जाती है,
छठ आए तो अपनों की महफ़िल सज जाती है।

छठ में पवित्रता का होता है विशेष ध्यान,
गंगा–यमुना के घाट करते हैं स्वच्छ और साफ।
पर पूजा के बाद भी हम यह प्रण लें साथ,
माँ प्रकृति को गंदा न करें–यही है सच्ची बात।

छत्तीस घंटे निर्जला व्रत रखती हैं माँ,
न खाना न पानी–बस सूरज की चाह।
हाथों में सूप, फल और दउरा सजाए,
कमर भर जल में खड़ी–छठी मैया को मनाए।

हर तरफ बजते हैं छठ के मीठे गाने,
"केलवा जे फरेला" की धुन पर झूमें हम भक्त सारे।
ठेकुआ और खीर से महकती है रसोई,
इस उत्सव की खुशबू नहीं जाती कोई।

वैसे तो सुबह उठना लगे जैसे पहाड़,
पर छठ में उत्साह खुद तोड़े नींद की दीवार।
गीतों की गूँज में आँखें खुद खुल जाती हैं,
रात से ही गलियाँ जागकर गुनगुनाती हैं।

हम नए कपड़े पहनकर जाते हैं घाट,
पटाखों से रोशन हो जाता है आकाश,
दीप जलते हैं घाट पर, फैलती है आस,
घाट पर बिखरती है खुशियों की मिठास।

सुबह के अर्घ्य के बाद घाट पर बँटे प्रसाद,
"माँगकर खाओ"–यही है इसकी रीत उस्ताद।
माँगकर खाने में ही है इसकी मिठास,
छठ माई देती हैं भरपूर आशीष और विश्वास।

ये व्रत सिर्फ नारी का नहीं–पुरुष भी झुकाते शीश,
घाट पर खड़े पुरुष भी माँगते मैया का आशीष।
जल में उतरे हाथ उठाए, सूरज को करें प्रणाम,
नर–नारी दोनों मिलकर करते हैं ये पुण्य काम।

भक्ति में कोई भेद नहीं–छठ है सबका धाम,
यहाँ न पूछे कोई जाति, न पूछे कोई नाम।
घाट पर न कोई छोटा, न कोई बड़ा–सब हैं एक,
छठी मैया की कृपा से मिटे हर भेद की रेख।

छठ कोई त्योहार नहीं–यह एक भावना होती है,
ये चार दिन रुक जाएँ–यही मन की कामना होती है।
पर आस रहती है–फिर आएगा ये पर्व प्यारा,
फिर मम्मी करेंगी व्रत, फिर घर होगा रोशनारा।

जय छठी माई! जय सूर्यदेव!

गणगौर पूजा

गणगौर का पर्व राजस्थान और देश के कुछ अन्य हिस्सों में मनाया जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण और रंगीन त्योहारों में से एक है। यह त्योहार मुख्य रूप से सौभाग्य, दाम्पत्य प्रेम और नारीत्व का उत्सव है।

आभा श्रीवास्तव माथुर
राष्ट्रीय विपणन–दिल्ली

गणगौर का अर्थ और स्वरूप

'गणगौर' शब्द दो शब्दों के मेल से बना है– 'गण' और 'गौर'। यहाँ 'गण' का तात्पर्य भगवान शिव से है और 'गौर' का अर्थ माता पार्वती (गौरी) से है। यह पर्व मुख्य रूप से महिलाओं का त्योहार है, जिसमें कुंवारी कन्याएं मनपसंद वर पाने के लिए और विवाहित महिलाएं अपने पति की दीर्घायु और सुखी वैवाहिक जीवन के लिए शिव–पार्वती की आराधना करती हैं।

गणगौर पूजा कब मनाई जाती है?

गणगौर का पर्व हिंदू कैलेंडर के अनुसार चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाया जाता है। यह त्योहार होली के अगले दिन (धुलंडी) से ही प्रारंभ हो जाता है और अगले 18 दिनों तक चलता है। विवाहित स्त्रियाँ और कुंवारी कन्याएँ इस दौरान माता पार्वती (गौरी) और भगवान शिव की पूजा करती हैं।

इसकी शुरुआत कैसे हुई? (पौराणिक कथा)

गणगौर की शुरुआत को लेकर कई पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं, जिनमें से सबसे प्रमुख इस प्रकार है–

- शिव–पार्वती का भ्रमण–माना जाता है कि एक बार भगवान शिव और माता पार्वती वन में भ्रमण पर निकले। चलते–चलते वे एक गांव में पहुंचे। जब वहां की महिलाओं को पता चला कि स्वयं शिव और पार्वती पधारे हैं, तो वे उनके स्वागत की तैयारी में जुट गईं।
- कुलीन और साधारण स्त्रियाँ–गाँव की जो स्त्रियाँ निम्न वर्ग से थीं, वे सबसे पहले अपना थाल सजाकर पहुंचीं और माता पार्वती की भक्ति भाव से पूजा की। पार्वती जी उनकी श्रद्धा से प्रसन्न हुईं और उन्होंने अपने पास का सारा 'सुहाग रस' उन पर छिड़क दिया।
- बाद में आई महिलाएं–इसके कुछ देर बाद गाँव की कुलीन (उच्च वर्ग) स्त्रियाँ स्वर्ण थाल में कीमती पकवान लेकर पहुंचीं। तब भगवान शिव ने पार्वती जी से पूछा कि आपने सारा सुहाग रस तो पहले वाली महिलाओं पर छिड़क दिया, अब इन्हें क्या देंगी?
- वरदान का स्वरूप–माता पार्वती ने शांत भाव से अपनी उंगली चीरी और अपने रक्त की कुछ बूंदें उन महिलाओं पर छिड़क दीं। वह रक्त सुहाग का प्रतीक बन गया। इसके बाद माता पार्वती ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि जो भी इस दिन नियम से पूजा करेगी, उसका सुहाग अखंड रहेगा।

तभी से सुहागिन महिलाएँ अपने पति की दीर्घायु के लिए और कुंवारी कन्याएँ योग्य वर प्राप्ति के लिए गणगौर का व्रत और पूजा करने लगीं।

कैसे मनाई जाती है गणगौर?

इस पूजा की विधि बहुत ही अनूठी और पारंपरिक होती है–

1. मिट्टी की प्रतिमाएँ–होली की राख और मिट्टी से 'गण' (शिव) और 'गौर' (पार्वती) की सुंदर प्रतिमाएँ बनाई जाती हैं। कुछ स्थानों पर लकड़ी के 'काष्ठ' के ईसर–गणगौर की पूजा भी होती है।
2. गीत और नृत्य–महिलाएं प्रतिदिन सुबह सज–धजकर लोकगीत गाती हैं और गौर की पूजा करती हैं। इन गीतों में पारिवारिक सुख और पति के प्रति प्रेम का वर्णन होता है।
3. ज्वारे बोना–पूजा के दौरान एक पात्र में जौ (ज्वारे) बोए जाते हैं, जिन्हें 'खेती' कहा जाता है। विसर्जन के दिन इन ज्वारों का विशेष महत्व होता है।
4. सिंजारा–तृतीया से एक दिन पहले 'सिंजारा' मनाया जाता है, जिसमें विवाहित बेटियों और बहुओं के लिए ससुराल या पीहर से गहने, कपड़े और मिठाई (विशेषकर घेवर) भेजे जाते हैं।
5. विसर्जन–अंतिम दिन गणगौर की भव्य शोभायात्रा निकाली जाती है और अंत में जलाशयों या बावड़ियों में प्रतिमाओं का विसर्जन किया जाता है।

यह कहाँ मनाया जाता है?

गणगौर का मुख्य केंद्र राजस्थान है। राजस्थान का हर शहर इसे अलग अंदाज में मनाता है–

- जयपुर–यहाँ की गणगौर की सवारी विश्व प्रसिद्ध है, जिसे देखने पर्यटक दूर–दूर से आते हैं।
- उदयपुर–पिछोला झील के किनारे गणगौर घाट पर भव्य आयोजन होता है।
- जोधपुर और बीकानेर–यहाँ भी पारंपरिक मेलों का आयोजन होता है।

राजस्थान के अलावा यह पर्व मध्य प्रदेश (मालवा और निमाड़ क्षेत्र), हरियाणा और गुजरात के कुछ सीमावर्ती हिस्सों में भी पूरी श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। प्रवासी राजस्थानी दुनिया के जिस भी कोने में हैं, वे आज भी इस परंपरा को जीवित रखे हुए हैं।

निष्कर्ष–गणगौर केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं है, बल्कि यह राजस्थान की समृद्ध संस्कृति, कला और लोक जीवन का दर्पण है। यह त्योहार विश्वास दिलाता है कि श्रद्धा और समर्पण से ही घर–परिवार में सुख–समृद्धि बनी रहती है।

ओणम एकता समृद्धि और परंपरा का महापर्व

सुरेश हजाम
मचिलीपट्णम

ओणम केरलम का एक प्रमुख त्योहार है। ओणम का उत्सव चिंगम (सिंघम/सिंहम्) मास में भगवान वामन की जयन्ती और राजा बलि के स्वागत में प्रति वर्ष आयोजित किया जाता है जो दस दिनों तक चलता है। यह उत्सव त्रिक्काकरा (कोच्ची के पास) केरलम के एक मात्र वामन मन्दिर से प्रारम्भ होता है। ओणम में प्रत्येक घर के आँगन में फूलों की पंखुड़ियों से सुन्दर सुन्दर रंगोलियाँ (पूक्कलम) बनायी जाती हैं। युवतियाँ उन रंगोलियों के चारों ओर वृत्त बनाकर उल्लास पूर्वक नृत्य (तिरुवातिरा कलि) करती हैं। इस पूक्कलम का प्रारम्भिक स्वरूप पहले (अत्तम के दिन) तो छोटा होता है परन्तु नित्य इसमें एक और वृत्त फूलों का बढ़ा दिया जाता है। ऐसे बढ़ते बढ़ते दसवें दिन (तिरुवोणम) यह पूक्कलम वृहत आकार धारण कर लेता है। इस पूक्कलम के बीच तृक्काक्करप्पन (वामन अवतार में विष्णु), राजा बलि तथा उसके

अंग–रक्षकों की प्रतिष्ठा होती है जो कच्ची मिट्टी से बनायीं जाती है। ओणम में नौका दौड़ जैसे खेलों का आयोजन भी होता है। ओणम एक सम्पूर्णता से भरा हुआ त्योहार है जो सभी के घरों को सुखों से भर देता है।

ओणम वामन और राजा महाबली का स्मरण करता है। हिंदू किंवदंतियों के अनुसार, ओणम केरलम में एक पौराणिक राजा दैत्य राजा महाबली के शासन के तहत सुशासन की याद में मनाया जाता है, जिन्होंने कभी केरलम पर शासन किया था। किंवदंती है कि महाबली की लोकप्रियता और महादानी होने का अभिमान की वजह से उनके अभिमान दहन करने के लिए भगवान श्री विष्णु ने वामन अवतार लिया। उन्होंने वामन का रूप वरन किया, एक बौने ब्राह्मण के रूप में पृथ्वी पर अवतारित हुए राजा बलि ने एक महा यज्ञ का आयोजन किया जिसमें घोषणा की कि वह सभी ब्राह्मणों को उनके मनचाहे उपहार देंगे, तत्पश्चात भगवान वामन ने उनके इस दंभ का मर्दन किया। वामन ने उदार महाबली से अपनी इच्छा के अनुसार महाबली से तीन पांव जमीन माँगी। चूँकि ब्राह्मण को उपहार देने से इनकार करना एक अपवित्र माना जाता है, महाबली वामन की इच्छा को पूरा करने के लिए तैयार हो गए। पहले दो चरणों में वामन ने तीनों ब्रह्माण्ड को अपने पैर के नीचे कर लिया और जब वह तीसरा पाव जमीन देने में असमर्थ हुए। तत्पश्चात उन्होंने अपना सिर अर्पण कर दिया। भगवान उन्हें आशीर्वाद प्रदान किया उसी दिवस के उपलक्ष्य में ओणम उत्सव मनाया जाता है। हालाँकि, महाबली की उदारता और उनके समर्पण को देखते हुए, भगवान श्री विष्णु ने राजा की एकमात्र इच्छा को हर साल एक बार अपनी भूमि और लोगों से मिलने की अनुमति दी। महाबली की इस दिवस को घर वापसी को हर साल केरलम में ओणम के रूप में मनाया जाता है।

ओणम मुख्य रूप से केरलम का एक प्रमुख फसल उत्सव है। यह दस दिनों तक चलने वाला त्योहार है, जिसमें लोग राजा बलि के न्यायप्रिय शासन को याद करते हैं और नई फसल की खुशी में घर–घर में उत्सव मनाते हैं।

ओणम मनाने के मुख्य कारण और कथा–

राजा महाबली की घर वापसी–मान्यता है कि असुर राजा महाबली (जिन्हें बलि भी कहा जाता है) बहुत उदार और न्यायप्रिय राजा थे, जिनके राज्य में प्रजा बहुत सुखी थी। भगवान विष्णु ने वामन अवतार लेकर बलि से तीन पग भूमि मांगी और उनके दानवीरता से प्रसन्न होकर उन्हें पाताल लोक भेज दिया, लेकिन वरदान दिया कि वे साल में एक बार अपनी प्रजा से मिलने आ सकते हैं।

नई फसल की खुशी–ओणम का त्योहार केरलम में चावल की फसल की कटाई के समय के साथ आता है, जो लोगों के घरों में समृद्धि और खुशी लाता है।

विष्णु पूजा (वामन अवतार)–इस त्योहार में वामन देव (भगवान विष्णु) की भी पूजा की जाती है, जिन्होंने राजा बलि को अहंकार से मुक्त किया था।

सामुदायिक एकता–ओणम लोगों को एकता, भाईचारे और समानता का संदेश देता है, जिसे केरलम के सभी समुदायों के लोग मिलकर मनाते हैं।

ओणम के उत्सव की झलक–

पूक्कलम (फूल रंगोली)–घर के आंगन में फूलों से सुंदर रंगोली बनाई जाती है।

ओणा सद्या (भोज)–यह दस दिनों का उत्सव है, जिसमें भव्य पारंपरिक भोज का आयोजन होता है, जिसमें स्वादिष्ट पायसम (खीर) शामिल होता है।

वल्लमकली (नाव दौड़)–ओणम के दौरान केरलम में प्रसिद्ध नाव दौड़ का आयोजन किया जाता है। यह त्योहार केरलम के मलयालम कैलेंडर के अनुसार 'चिंगम' महीने में आता है, जो अगस्त–सितंबर में पड़ता है।

तमिलनाडु में पोंगल, मकर संक्रांति और महाशिवरात्रि का उत्सव

श्यामलाल दास
चेन्नई

पोंगल त्योहार तमिलनाडु के साथ–साथ पूरे दक्षिण भारत में मनाया जाने वाला तथा हिन्दू धर्म में एक विख्यात त्योहार के रूप में जाना जाता है। यह खासकर (तमिळ–பொங்கல்) तमिल हिन्दुओं का एक प्रमुख त्योहार है। यह प्रति वर्ष 14–15 जनवरी को मनाया जाता है। इसकी तुलना नवान्न से की जा सकती है जो फसल की कटाई का उत्सव होता है (शस्योत्सव)। पारम्परिक रूप से ये सम्पन्नता को समर्पित त्यौहार है जिसमें समृद्धि लाने के लिए वर्षा, धूप तथा खेतिहर मवेशियों की आराधना की जाती है। इस पर्व का इतिहास कम से कम 1000 साल पुराना है तथा इसे तमिलनाडु के अलावा देश के अन्य भागों, तथा अन्य कई स्थानों पर रहने वाले तमिलों द्वारा उत्साह से मनाया जाता है। तमिलनाडु के प्राय: सभी सरकारी संस्थानों में इस दिन अवकाश रहता है।

14 जनवरी का दिन उत्तर भारत में मकर संक्रान्ति के नाम से मनाया जाता है जिसका महत्व सूर्य के मकर रेखा की तरफ़ प्रस्थान करने को लेकर है। उत्तर भारत में यह त्योहार इसलिए भी मनाया जाता है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि इस दिन लोगो को पवित्र स्नान जैसे गंगा नदी में जाकर स्नान करने से उनके अंतरआत्मा कि शुद्धि होती है तथा सभी पापों से मुक्ति मिलती है शरीर पवित्र हो जाता है। इस दिन दही एवं चूड़ा तथा खिचड़ी खाने का भी एक रिवाज है।

इसे गुजरात तथा महाराष्ट्र में उत्तरायन कहते हैं, जबकि यही दिन आंध्र प्रदेश, केरल तथा कर्नाटक (ये तीनों राज्य तमिल नाडु से जुड़े हैं) में संक्रान्ति के नाम से मनाया जाता है। पंजाब में इसे लोहड़ी के नाम से मनाया जाता है। दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य में पोंगल का त्यौहार सूर्य के मकर राशि में प्रवेश का स्वागत कुछ अलग ही अंदाज में किया जाता है।

चेन्नई में पोंगल (13–16 जनवरी) तक मनाया जाता है। घरों के आगे 'कोलम' (रंगोली) सजाकर, पारंपरिक मिट्टी के बर्तनों में नए चावल का पोंगल बनाकर, और मवेशियों (मट्टू पोंगल) की पूजा करके यह त्योहार हर्षोल्लास से मनाया जाता है।

- चेन्नई में पोंगल और तमिल संस्कृति के मुख्य पहलू–

चार दिवसीय उत्सव के रूप में मनाया जाने वाला यह त्योहार कुछ इस प्रकार है–

- ❖ भोगी पोंगल (पहला दिन)–पुराने सामानों को जलाकर नई शुरुआत का प्रतीक।
- ❖ थाई पोंगल (दूसरा दिन)–सूर्य देव को विशेष 'सक्कराई पोंगल' (गुड़ और चावल) अर्पित किया जाता है।
- ❖ माट्टू पोंगल (तीसरा दिन)–कृषि में योगदान देने वाले बैलों और मवेशियों की पूजा।
- ❖ कानुम पोंगल (चौथा दिन)–परिवार के साथ पिकनिक और भ्रमण का दिन।

यह उत्सव तमिलनाडु के लोगों के लिए प्रकृति और प्राणियों के प्रति कृतज्ञता जताने का तरीका है।

यह एक "ग्लोबल फेस्टिवल" बन चुका है, जिसमें परंपरा के साथ शहरी उल्लास का अद्भुत मिश्रण दिखता है। इस दौरान पारंपरिक संगीत, लोक नृत्य और विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होते हैं। पोंगल एक ऐसा त्योहार है जो हमें प्रकृति और हमारे आसपास के जीवों के प्रति आभार व्यक्त करना सिखाता है। यह त्योहार हमें साफ–सफाई, मेहनत और मिल–जुलकर रहने का महत्व भी बताता है। यह खुशियों का त्योहार है जो चार दिनों तक चलता है और हमें प्रकृति से जोड़ता है। इस त्योहार को एक पारिवारिक त्योहार के रूप में भी जाना जाता है। इस दिन लोग एक दूसरे से मिलते जुलते हैं एवं एक साथ कहीं बाहर जाणार यात्रा का आनंद लेते हैं। इस तरह कहा जाए तो कोई भी त्योहार हमारे जीवन को हर्षोल्लास से भर देने वाला एक महत्वपूर्ण आयोजन है।

चेन्नई में महाशिवरात्रि

महाशिवरात्रि तमिलनाडु के साथ–साथ पूरे भारत में मनाया जने वाला एल भव्य आयोजन है।

तमिल संस्कृति का शिव से जुड़ाव हजारों वर्षों पुराना है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि स्वयं शिव ने तमिल संगम में भाग लिया था और यहां तक कि एक पांड्य राजा के संदेह को दूर करने के लिए एक कविता भी लिखी थी। इसलिए तमिल लोग शिव को अपना आराध्य मानकर उनका सम्मान करते हैं। यहाँ भगवान शिव की उपासना कुछ इस प्रकार की जाती है–भक्त सुबह से उपवास रखते हैं, 'कपालेश्वर' जैसे शिव मंदिरों में जाते हैं, 'अभिषेक' करते हैं और रात भर जागरण कर चारों प्रहर पूजा व 'ॐ नमः शिवाय' का जाप करते हैं।

तमिलनाडु में महाशिवरात्रि के दिन मंदिरों में विशेष आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव किया जाता है और लोग अपने कुला देवम (कुल देवता) की पूजा भी करते हैं।

तमिलनाडु में महाशिवरात्रि मनाने के मुख्य तरीके–

- विशेष मंदिर यात्रा–लोग अपने पैतृक मंदिर (कुलदेवम) या प्रसिद्ध शिव मंदिरों (जैसे चिदंबरम, तिरुवन्नामलाई, रामेश्वरम) में जाते हैं।
- रात भर जागरण (शिवरात्रि)–भक्त रात भर मंदिरों में रुकते हैं और भगवान शिव की स्तुति में भजन और गीतों का गायन करते हैं।
- चार–काल पूजा–शिवरात्रि की रात चार विशेष पूजाएं (अभिषेक) की जाती हैं, जो रात 12 बजे से सुबह 4–30 बजे तक चलती हैं।
- अभिषेक और प्रसाद–शिवलिंग पर जल, दूध, दही, घी, शहद, विभूति (भस्म) और चंदन से अभिषेक किया जाता है।
- गिरिवालम (तिरुवन्नामलाई)–तिरुवन्नामलाई में अन्नामलैयार मंदिर में, भक्त पहाड़ी के चारों ओर 14 किमी नंगे पैर परिक्रमा (गिरी प्रदक्षिणा) करते हैं।
- शिवलय ओट्टम (कन्याकुमारी)–कन्याकुमारी में, भक्त 12 प्रमुख शिव मंदिरों की तीर्थयात्रा करते हैं, जिसे शिवलय ओट्टम कहा जाता है।
- उपवास (व्रत)–भक्त निराहार या फलाहार व्रत रखते हैं और अगले दिन सुबह पूजा के बाद ही व्रत तोड़ते हैं।

चेन्नई में महाशिवरात्रि उत्सव की मुख्य बातें–

- प्रमुख मंदिर–भक्त मयलापुर के कपालेश्वर मंदिर, पार्थसारथी मंदिर, और शहर के अन्य प्रसिद्ध शिव मंदिरों में दर्शन के लिए उमड़ते हैं।
- पूजा विधि–शिवलिंग का दूध, दही, शहद, जल और बेलपत्र से अभिषेक किया जाता है।
- जागरण और ध्यान–शिव भक्त रात भर जागकर (जागरण) ध्यान, भजन और पूजा करते हैं, विशेषकर चौथे प्रहर में।
- सांस्कृतिक कार्यक्रम–कई जगहों पर पारंपरिक नृत्य (नाट्यांजलि) और संगीत कार्यक्रम आयोजित होते हैं, जो भगवान शिव को समर्पित होते हैं।
- उपवास–भक्त 24 घंटे का उपवास रखते हैं, जो अगले दिन सुबह पूजा के बाद तोड़ा जाता है।

इस शुभ अवसर पर तमिलनाडु में मौजूद रामेश्वरम शहर के रामनाथस्वामी मंदिर पर प्रत्येक वर्ष 12 दिनों का जश्न मनाया जाता है। यह कार्यक्रम महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित होता है। महाशिवरात्रि। पौराणिक और धार्मिक मान्यताओं के अनुसार कई कारणों से महाशिवरात्रि का पर्व मनाया जाता है, जिसमें शिव–पार्वती का विवाह सबसे ज्यादा प्रचलित है। इस कारण महाशिवरात्रि को कई स्थानों पर रात्रि में शिव बारात भी निकाली जाती है।

इस पर्व पर कहा जाता है कि इसी दिन शिव–पार्वती का विवाह हुआ था। कहा जाता है कि इस दिन भगवान शिव की पूजा करने से वह जल्दी प्रसन्न होते हैं। इसके अलावा यह मान्यता है कि इस महाशिवरात्रि पर व्रत रखने पर विवाह में आने वाली अड़चने दूर हो जाती है। इसके अलावा कहा जाता है कि महाशिवरात्रि के दिन ही महोदव अपने शिवलिंग स्वरूप में प्रकट हुए थे। उस दौरान सबसे पहले ब्रह्मा जी और भगवान विष्णु ने उनकी विधिपूर्वक पूजा–अर्चना की थी। इस वजह से महाशिवरात्रि के दिन विशेष तौर पर शिवलिंग की पूजा की परंपरा है।

हरित दीपावली

दीप जलें पर धुआँ न हो,
खुशियों में कोई दूषण न हो।
धरती का श्रृंगार बने उजियारा,
साँसों में घुल जाए बस प्यारा नज़ारा।

रंगोली में फूलों की खुशबू हो,
मिठास में प्रकृति का जादू हो।
पेड़ लगाएँ, दीप सजाएँ,
हर दिल में हरियाली समाएँ।

पटाखों की गूँज नहीं, बस गीत हो,
स्नेह के सुर और प्रेम की प्रीत हो।
हरित दीपावली का यही पैग़ाम है,
स्वच्छ हवा और उजला धाम है।

सुनील कुमार सिंह
बेंगलूरु कॉम्पलेक्स

त्याग, करुणा और मानवता का संदेश–गुड फ्राइडे

नवजोत पीटर
गाज़ियाबाद कॉमप्लेक्स

हर दिन की तरह आज भी सुबह के समय, शहर धीरे–धीरे जाग रहा है। पक्षियों की चहचाहट, कहीं मंदिरों की घंटियां हैं, कहीं अज़ान की आवाज़। इसी शांति के बीच एक दिन आता है–गुड फ्राइडे, जो अन्य जातियों के लिए एक सामान्य छुट्टी का दिन है परंतु ईसाई समुदाय के लिए एक बहुत ही विशेष दिन।

सड़कें चल रही हैं, लोग अपने काम पर जा रहे हैं, जीवन अपनी गति से आगे बढ़ रहा है–पर कहीं भीतर एक ठहराव है। जैसे समय ने खुद से कहा हो– "आज थोड़ा धीमे चलो... आज एक कहानी याद करनी है।" यह कहानी है–यीशु मसीह की। पर अगर ध्यान से देखें, तो यह केवल एक व्यक्ति की कहानी नहीं है। यह हर उस इंसान की कहानी है, जिसने सच बोलने की कीमत चुकाई है... और हर उस समाज की कहानी है, जिसने सच को पहचानकर भी उससे मुंह मोड़ लिया।

हम अक्सर गुड फ्राइडे को एक धार्मिक घटना के रूप में देखते हैं। पर अगर धर्म के चश्मे को थोड़ी देर के लिए हटा दें, तो यह एक बेहद मानवीय कहानी बन जाती है। अभी पिछले रविवार को ही हमने खजूर के इतवार के रूप में मनाया था। ये वो दिन था जब ४० दिन भूखे प्यासे रहने के बाद यीशु येरूशलम में आए थे। उसी दिन की याद में हम अपने पूरे चर्च में खजूर की डालियाँ ले कर यीशु का स्तुति गान करते हुए घूमे थे और उस रविवार, प्रार्थना सभा भी उनके आने की खुशी में बेहद उत्साह भरी थी। हकीकत में आज वो दिन नहीं है जब यीशु सूली पर चढ़ाए गए थे। वो दिन तो करीब २००० वर्ष पूर्व आया था परंतु हर गुड फ्राइडे के दिन ईसाई समुदाय के हर जन की आँखों के सामने फिर से वह दिन जीवंत हो उठता है। एक अजीब–सी खामोशी। एक एक करके आँखों के सामने जीवंत होते दृश्य। एक इंसान अपने कंधों पर अपनी सलीब उठाए, उसे बेरहमी से कोड़ों से मारा जा रहा है। बुरी तरह से जख्मी शरीर, सर पर काँटों का ताज, दो डाकुओं के साथ सलीब पर लटका हुआ, लहूलुहान शरीर, पीड़ा से बेहाल, सूली पर लटका हुआ एक शरीर धीरे–धीरे निश्चल हो रहा था, और वह शरीर था–यीशु मसीह का। क्या कसूर था उनका। उन्होंने कोई युद्ध नहीं लड़ा, कोई सिंहासन नहीं चाहा, कोई सत्ता नहीं मांगी। उन्होंने सिर्फ इतना कहा "प्रेम करो, क्षमा करो, और सच्चाई के साथ जियो।"सुनने में यह कितना सरल लगता है ना? लेकिन इतिहास गवाह है सच अक्सर सरल होता है, पर स्वीकार करना सबसे कठिन।

जब समाज अपने ही बनाए नियमों में उलझ जाता है, जब धर्म दिखावे में बदल जाता है और जब सत्ता को सवालों से डर लगने लगता है तब सच बोलने वाला व्यक्ति खतरा बन जाता है। शायद इसी वजह से यीशु को भी खतरा समझा गया और आज वो सूली पर हमारे सामने है। यीशु चाहते तो इस घटनाक्रम को टाल सकते थे परंतु उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने हमारे पापों की क्षमा के लिए खुद सूली पर चढ़ने को वरीयता दी।

यह घटना, जिसे हम Crucifixion of Jesus के नाम से जानते हैं, केवल एक मृत्यु नहीं थी–यह प्रेम, क्षमा और बलिदान की पराकाष्ठा थी। उसी पीड़ा के बीच उन्होंने सात वचन बोले, जो आज भी मानवता के लिए प्रकाश स्तंभ बने हुए हैं। आज हम एक एक करके उन्हीं शब्दों की गहराई जानेंगे। चलिए फिर चलते हैं आज उस सलीब के पास जहां तीन लोग लटके हैं। बीच में यीशु दाएँ, बाएँ दो डाकू। दर्द का वह क्षण... जो शब्दों से परे है। सूली पर लटकना सिर्फ शारीरिक पीड़ा नहीं है। यह धीरे–धीरे मरने की प्रक्रिया है, जहां हर सांस एक संघर्ष बन जाती है, और उसी संघर्ष के बीच यीशु के सलीब से कहे सात वाक्य मानवता के इतिहास में विशेष महत्व रखते है।

सूली पर लटका हुआ वो लहूलुहान, दर्द से तड़पता हुआ। आस पास भारी जन सैलाब और उसी समय सूली से एक आवाज आती है–

“हे पिता, इन्हें क्षमा कर क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं"

यह वाकई मानवीय संवेदनाओं की पराकाष्ठा है। आज अगर कोई हमें छोटी–सी बात पर चोट पहुंचा दे, तो हम महीनों तक उसे याद रखते हैं। रिश्ते टूट जाते हैं, अहंकार दीवार बन जाता है और एक सलीब पर लटका हुआ वो व्यक्ति है जो अपने को सूली पर चढ़ाने

वालों के लिए भी क्षमा मांग रहा है। यह कोई सामान्य इंसानी प्रतिक्रिया नहीं है। यह उस स्तर की करुणा है, जहां 'मैं' और 'तुम' का फर्क मिट गया है। यह शब्द केवल एक प्रार्थना नहीं थी, यह एक शुरुआत थी, एक सीख थी जिसने हमें सिखाया कि सच्चा बल प्रतिशोध में नहीं, बल्कि माफ करने में है।

सलीब से दूसरा वाक्य– "आज ही तू मेरे साथ स्वर्ग में होगा।"

यह आशा की एक किरण थी। सलीब पर लटका हुआ एक डाकू जिसने यीशु मसीह पर विश्वास किया, ये वाक्य उसके लिए था। एक अपराधी, जिसने जीवन भर गलतियाँ कीं, पाप किए, उसे भी उन्होंने अंतिम क्षण में उसे आशा दी। इसमें मुख्य बात है "आज ही"। यह किसी लंबी प्रतीक्षा या कर्मों के जटिल लेखे जोखे को नहीं बल्कि सच्चे पश्चताप के बाद ईश्वर के सान्निध्य को दर्शाता है ईश्वर का प्रेम कभी खत्म नहीं होता, वो अनंत जीवन तक साथ रहता है। हर अंत में एक नई खूबसूरत शुरुआत छिपी होती है।

सलीब से तीसरा वाक्य– "स्त्री, देख यह तेरा पुत्र है... यह तेरी माता है"

सलीब पर लटका हुआ पुत्र, दर्द से बेहाल। सोचिए क्या बीत रही होगी उस माँ पर। जिसके कलेजे का टुकड़ा सलीब पर लटका है, और वह नीचे खड़ी हो कर उसे देख रही है। उसका दिल जरूर फटा जा रहा होगा और जब यीशु की भी नजर नीचे गई तो अपनी असहनीय पीड़ा के बीच भी उसे अपनी माँ की चिंता हुई। क्या होगा उनका। अपने दर्द से इतना परेशान नहीं, अपनी इतनी चिंता नहीं, जितना माँ के दुख से परेशान हैं। यह प्यार की गहराई है माँ के लिए। तब उन्होंने अपने एक शिष्य की ओर इशारा करके कहा कि स्त्री देख यह तेरा पुत्र है। माता को स्त्री कहना थोड़ा विचित्र लग सकता है परंतु यह वो क्षण था जब वो अपनी माता के दुख को कम करना चाह रहे थे, अपने से उनके जुड़ाव को कम करना चाह रहे थे। सलीब पर लटके हुए यीशु इतनी परेशानी की हालत में भी अपनी जिम्मेदारियों को नहीं भूले। वे नहीं भूले कि अपनी माता का ध्यान रखना उनका फर्ज है। प्राण छोड़ने से पहले उन्होंने अपनी माता की जिम्मेदारी अपने शिष्य को सौंप दी।अपनी असहनीय पीड़ा के बीच भी उन्होंने अपने प्रियजनों की चिंता की। यह हमें सिखाता है कि सच्चा प्रेम केवल भावनाओं में नहीं, बल्कि जिम्मेदारियों में भी प्रकट होता है।

सलीब से चौथा वाक्य– "हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?"

ये शब्द अकेलेपन की पुकार है। यह वह क्षण है, जब एक दिव्य आत्मा ने भी खुद को हमारे स्तर पर ला कर मानव पीड़ा को पूरी तरह महसूस किया। यह वचन मसीह के पूर्ण आत्म त्याग का प्रतीक है। उन्होंने स्वयं को इतना रिक्त कर दिया कि उन्हें ईश्वर की अनुपस्थिति महसूस हुई ताकि वो उन लोगों से जुड़ सकें जो परेशानी में खुद को ईश्वर से कटा हुआ महसूस करते हैं। उन्होंने विश्वास से परमेश्वर को पुकारा। यह हमें यह एहसास दिलाता है कि जब हमें लगे है कि हम अकेले हैं, तब भी ईश्वर हमारे साथ है।

सलीब से पांचवा वाक्य– "मैं प्यासा हूँ"

यह केवल शरीर की प्यास नहीं थी जो पानी पीने से बुझ जाती। उस दिन सलीब के चारों ओर एक भीड़ थी जो कभी उसकी "होशन्ना" (स्तुति) के नारे लगा रही थी, और आज "उसे सूली दो" चिल्लाने लगी थी। वो उसे सलीब पर लटका देख भी यूं खड़ी हुई थी कि जैसे कुछ हुआ ही न हो। उन्हें उस भीड़ से प्रेम और अपनत्व की प्यास थी, जो उस दिन उस भीड़ में कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। उन्हें आत्माओं को बचाने की प्यास थी। वे चाहते थे कि प्रेम और न्याय की स्थापना का कार्य पूर्ण हो।

सलीब से छठा वाक्य– "पूरा हुआ।"

यह नाद था कर्तव्य की पूर्णता का। वह कर्तव्य जो परम पिता परमेश्वर ने उन्हें सौंपा था। पूरे जगत के पापों की क्षमा के लिए अपना बलिदान दे कर उन्होंने पूरी मानवता के लिए प्रेम और मुक्ति का मार्ग खोल दिया। इसका एक अर्थ यह भी था कि मानवता पर पापों का जो कर्ज था वो उन्हों। ने अपना खून दे कर चुका दिया, अब कुछ नहीं बचा। यह शब्द हार के नहीं, बल्कि विजय के थे। सलीब पर उनकी मृत्यु एक त्रासदी नहीं बल्कि एक पूर्व निर्धारित मिशन की सफल समाप्ति थी। यह इस बात का प्रतीक है कि मानवता को अनुग्रह और क्षमा प्राप्त करने का मार्ग मिल गया है ॥

सलीब से सातवाँ वाक्य– "हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ।"

यह वाक्य जीवन के अंत में भी उनके परम पिता में अटूट विश्वास एवं समर्पण का प्रतीक है। शारीरिक कष्ट और पीड़ा के चरम सीमा पर होने पर भी ईश्वर के प्रति उनके मन में रंच मात्र भी द्वेष नहीं। वे ईश्वर को पिता कह कर पुकारते हैं और अपने जीवन को अपने अस्तित्व को उनके हाथों में सौंपते हैं। यह हमें सिखाता है कि जब हम सब कुछ छोड़कर खुद को ईश्वर के हवाले कर देते हैं, तभी हमें सच्ची शांति मिलती है।

दोपहर के लगभग तीन बजे का समय...आकाश जैसे अचानक गंभीर हो गया हो। हवा में एक अजीब–सी खामोशी घुल जाती है–न बहुत भारी, न बिल्कुल हल्की... बस ऐसी, जो दिल तक उतर जाए। भरी दोपहरी में भी अंधकार छा गया। इसी समय सूली पर लटका हुआ यीशु मसीह का शरीर धीरे–धीरे निश्चल हो गया था। पर सच पूछिए तो उस दिन केवल यीशु मसीह नहीं मरे थे ...कुछ और भी था, जो चुपचाप टूट गया था, शायद विश्वास, शायद साहस या शायद इंसानियत का एक हिस्सा। पर ये कहानी यहीं खत्म नहीं होती।हर अंधेरे के बाद एक सुबह आती है। यह केवल मृत्यु की कहानी नहीं है, यह पुनर्जागरण की भी कहानी है। एक नई शुरुआत की कहानी है। हर अंधेरे के बाद एक सुबह आती है। गुड फ्राइडे हमें यह भरोसा देता है कि भले ही सच कुछ समय के लिए दब जाए, पर वह कभी मरता नहीं है। जब भी जीवन में दर्द आए, जब भी दिल टूटे, जब भी उम्मीद कमज़ोर पड़े, तो सलीब से कहे गए इन वचनों को याद करना...क्योंकि इनमें छिपा है एक सच्चा वादा, "प्रेम कभी हारता नहीं, और विश्वास कभी टूटता नहीं।"

कुछ लोग कहते हैं कि यदि इस दिन किसी के प्राण गए तो यह दिन गुड कैसे ? क्या किसी की मृत्यु को "अच्छा" कहा जा सकता है? इसका उत्तर इसके आध्यात्मिक महत्व में निहित है। यीशु मसीह का बलिदान मानवता के उद्धार का मार्ग बना। उनके त्याग ने यह सिद्ध किया कि प्रेम और सत्य की शक्ति अंततः विजयी होती है। इसलिए, यह दिन दुख का नहीं, बल्कि आशा और मुक्ति का प्रतीक है। यह हमें यह भी सिखाता है कि कठिन परिस्थितियों में भी यदि हम सत्य और धर्म के मार्ग पर अडिग रहते हैं, तो अंततः अच्छाई की जीत होती है। इस दृष्टि से यह दिन "गुड" अर्थात् "श्रेष्ठ" और "पवित्र" बन जाता है।

गुड फ्राइडे ईस्टर (पुनरुत्थान)की उम्मीद है। जब यीशु तीसरे दिन जीवित हो कर इस धरती पर रहे और 40 दिन बाद सशरीर स्वर्ग में गए। बिना शुक्रवार के बलिदान के यह संभव नहीं था। मृत्यु पर विजय पाने की शुरुआत इसी शुक्रवार से हुई इसीलिए यह शुक्रवार पवित्र है, गुड है। गुड फ्राइडे हमें एक असहज सच्चाई से मिलवाता है कि अन्याय केवल अत्याचारियों से नहीं, बल्कि दर्शकों की चुप्पी से भी जन्म लेता है, गुड फ्राइडे हमें यही सिखाता है।यह दिन हमें यह नहीं कहता कि हम परिपूर्ण बन जाएं, यह सिर्फ इतना कहता है "थोड़ा और इंसान बनो, थोड़ा और प्रेम करो, थोड़ा जल्दी क्षमा करना सीखो।" क्योंकि अंत में, सूली पर लटका हुआ शरीर नहीं, बल्कि उसका संदेश जीवित रहता है।

भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में, जहां अनेक धर्म और संस्कृतियां सह–अस्तित्व में हैं, गुड फ्राइडे का विशेष महत्व है। यह दिन हमें "वसुधैव कुटुंबकम्" की भावना को सुदृढ़ करने का अवसर देता है। यह पर्व हमें यह याद दिलाता है कि चाहे हमारे धर्म या आस्थाएं भिन्न हों, लेकिन मानवता का मूल संदेश एक ही है–प्रेम, शांति और सह–अस्तित्व। भारत में विभिन्न समुदायों द्वारा इस दिन का सम्मान और सहभागिता हमारे सामाजिक समरसता का प्रतीक है।

गुड़ी पाड़वा

गोंजारे विनोद लक्ष्मन
नवी मुंबई

गुड़ी पाड़वा महाराष्ट्र का एक महत्वपूर्ण और पारंपरिक त्योहार है जिसे हिंदु नववर्ष के रूप में मनाया जाता है। यह पर्व चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि को आता है और भारतीय पंचांग के अनुसार नए साल की शुरुआत का प्रतीक माना जाता है। इस दिन से वसंत ऋतु का भी आगमन होता है, जो प्रकृति में नई उर्जा और ताजगी लेकर आती है। लोग इस त्योहार को बडे हर्ष और उल्लास के साथ मनाते हैं।

गुडी पाड़वा का धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व बहुत गहरा है। मान्यता है कि इसी दिन ब्रम्हा जी ने इस दुनिया की रचना की थी। इसके अलावा, यह दिन विजय और सफलता का प्रतीक के रूप में भी मनाया जाता है। कुछ लोग इसे भगवान राम के अयोध्या लौटाने और विजय के प्रतीक भी मनाते हैं।

इस दिन घर के बाहर "गुड़ी "स्थापित की जाती है, जो बुराई पर अच्छाई की जीत और समृध्दि का प्रतीक माना जाता है। गुडी को विजय ध्वज भी कहा जाता है जो सकारात्मक, उर्जा और खुशहाली का संकेत देती है।

गुड़ी पाड़वा के दिन लोग सुबह जल्दी उठकर अपने घरों की साफ–सफाई करते है। फिर घर के दरवाजे पर आम के पत्तों की तोरण लगाई जाती है और सुंदर रंगोली बनाई जाती है। महिलाएँ पारंपारिक साड़ी पहनती हैं और पुरुष धोती–कुर्ता या कुर्ता–पायजामा पहनते है।

गुड़ी तैयार करने के लिए एक लम्बी लकड़ी ली जाती है, जिस पर रेशमी या चमकीला कपडा बांधने के साथ नीम और आम के पत्ते, फुलों की माला और एक उल्टा कलश लकड़ी के ऊपरी भाग में रखा जाता है। इस गुड़ी को घर के बाहर या खिडकी के उंचा स्थान पर लगाय जाता है। इसके बाद विधि पूर्वक पूजा की जाती है और भगवान से सुख–समृद्धि की कामना की जाती है।

इस दिन विशेष प्रकार के व्यंजन बनाए जाते हैं, जिनमें पुरन पोली, श्रीखंड, बेसन के लड्डू और अन्य मिठाइयाँ शामिल होती है। इसके अलावा नीम के पत्ते और गुड़ की मिश्रित मिठाई बनाई जाती है, जो जीवन के सुख–दुख को समान रुप से स्वीकार करने का संदेश है। यह परम्परा हमें यह सिखाती है कि जीवन में कड़वाहट और मिठास दोनों का महत्व होता है।

गुड़ी पाड़वा केवल धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि सांस्कृतिक रुप से भी बहुत महत्वपूर्ण है। इस दिन लोग एक–दुसरे को शुभकामनाएँ देते हैं और समाज में भाईचारे एवं प्रेम को बढ़ावा देते हैं। कई स्थानों पर शोभा यात्राएँ और सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजित किया जाता है, जिनमें पारंपरिक नृत्य और संगीत का आयोजन शामिल है।

गुड़ी पाड़वा एक ऐसा त्योहार है, जो नई शुरुआत, आशा और सकारात्मकता का संदेशवाहक है। यह हमें जीवन में आगे बढ़ने और हर परस्थिति में अडिग रहने के लिए ऊर्जा प्रदान करता है। यह पर्व न केवल महाराष्ट्र की संस्कृति को दर्शाता है, बल्कि पूरे भारत में उत्साह और खुशी का वातावरण बनाता है, इसलिए हमें इस त्योहार को पूरे हर्षोल्लास और उमंग के साथ मनाना चाहिए।

ईद का त्योहार

संगेपल्ली सुरेंदर रेड्डी
हैदराबाद

भारत में ईद का त्योहार केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि एकता, सद्भावना और 'गंगा–जामुनी तहजीब' का एक जीवंत उत्सव है। भारत में ईद का आगमन केवल कैलेंडर की एक तारीख नहीं है; यह एक ऐसा उत्सव है जिसकी शुरुआत गहरे नीले आसमान में चांदी के धागे जैसे चांद के दीदार के साथ होती है। यह वह दिन है जब फिजाओं में इत्र की खुशबू और दिलों में मुहब्बत की मिठास घुल जाती है।

चाँद का इंतज़ार और रौनक–

ईद की असली हलचल 'चाँद रात' से शुरू होती है।

रमजान के तीस रोजों की इबादत के बाद जब आसमान के किसी कोने में बारीक सा सुनहरा चाँद नुमाया होता है, तो पूरे हिंदुस्तान में खुशियों की लहर दौड़ जाती है। दिल्ली के चांदनी चौक की तंग गलियों से लेकर हैदराबाद के लाड बाजार तक, हर तरफ रौनक का समंदर उमड़ पड़ता है। चूड़ियों की खनक, मेहंदी की महक और नए कपड़ों की खरीदारी में डूबी रात यह पैगाम देती है कि खुशी अब बस एक सुबह की दूरी पर है।

सुबह की इबादत और भाईचारा–

ईद की सुबह एक रूहानी सुकून लेकर आती है। सफेद कुर्ते–पाजामे और रंगीन टोपियां पहने हुए बच्चे, जवान और बुजुर्ग जब एक साथ ईदगाह की ओर बढ़ते हैं, तो वह दृश्य देखते ही बनता है। भारत की ऐतिहासिक मस्जिदों–जैसे दिल्ली की जामा मस्जिद या भोपाल की ताज–उल–मसाजिद–के सहन में जब हजारों सिर एक साथ खुदा के सजदे में झुकते हैं, तो वह मंजर इंसानियत और समानता की मिसाल पेश करता है। नमाज के बाद "ईद मुबारक" कहते हुए गले मिलना सिर्फ एक रस्म नहीं, बल्कि आपसी रंजिशों को भुलाकर एक होने का संकल्प है।

स्वाद का संगम–शीर–खुरमा और बिरयानी–

भारतीय ईद के जायके पूरी दुनिया में मशहूर हैं। हर घर में 'शीर–खुरमा' की मिठास और सेवइयों की महक मेहमानों का स्वागत करती है। सूखे मेवों और दूध के मेल से बनी यह डिश भारत की साझा संस्कृति का प्रतीक है। दोपहर होते–होते दस्तरखान पर लजीज बिरयानी, कबाब और फिरनी की जगह बन जाती है। दिलचस्प बात यह है कि इन दावतों में केवल मुस्लिम परिवार ही नहीं, बल्कि उनके हिंदू, सिख और ईसाई दोस्त भी उतने ही चाव से शामिल होते हैं, जो भारत की विविधता में एकता को दर्शाता है।

ईदी और बचपन की खुशियां–

बच्चों के लिए ईद का सबसे खूबसूरत हिस्सा 'ईदी' है। बड़ों से मिलने वाले वो कुछ रुपये उनके लिए किसी खजाने से कम नहीं होते। उन पैसों से मेलों में जाना, गुब्बारे खरीदना और झूले झूलना बचपन की सबसे अनमोल यादें बन जाती हैं।

भारत में ईद का मतलब सिर्फ जश्न मनाना नहीं, बल्कि मानवता की सेवा भी है। 'जकात' और 'फितरा' के जरिए गरीबों की मदद करना इस त्योहार का अनिवार्य हिस्सा है, ताकि समाज का कोई भी व्यक्ति भूखा न रहे और खुशियों से वंचित न रहे। संक्षेप में, भारत की ईद यहाँ की मिट्टी की खुशबू, रूहानी सादगी और दिलों को जोड़ने वाली वो डोर है, जो देश को एक सूत्र में पिरोती है।

- जिस यूनिट / कार्यालय के 80% से अधिक अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी का ज्ञान होता है, ऐसे यूनिट / कार्यालय को भारत सरकार द्वारा राजभाषा नियम 10(4) के तहत अधिसूचित किया जाता है। आज की तारीख में (मार्च 2026) चेन्नई यूनिट को छोड़कर, बीईएल की सभी यूनिटें / कार्यालय अधिसूचित हैं।
- प्रत्येक तिमाही की राजभाषा तिमाही प्रगति रिपोर्ट तिमाही के समाप्त होने के बाद के महीने की 10 तारीख तक यूनिट/कार्यालय प्रमुख के हस्ताक्षर से कार्पोरेट कार्यालय को और एमआईएस के ज़रिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय को भेजी जानी अनिवार्य है।

विषु

के हिमा बिंदु
सीआरएल, बेंगलुरु

जैसे ही वसंत की हवा दक्षिण भारत के हरे–भरे नज़ारों से होकर गुज़रती है, हवा में एक अनोखा जादू घुल जाता है। यह है विषु–मलयालम नव वर्ष का सवेरा। वसंत विषुव (vernal equinox) के दौरान आने वाला यह त्योहार, खगोलीय संतुलन के एक ऐसे क्षण का प्रतीक है–एक ऐसा छोटा सा अंतराल, जब दिन और रात बिल्कुल बराबर होते हैं। जो लोग "ईश्वर का अपना देश" (God's Own Country) को अपना घर मानते हैं, उनके लिए विषु कैलेंडर पर लिखी महज़ एक तारीख से कहीं बढ़कर है; यह प्रकाश, जीवन और एक समृद्ध वर्ष के वादे का एक गहरा उत्सव है, जो प्राचीन अनुष्ठानों और शाश्वत रीति–रिवाजों के ताने–बाने से बुना गया है।

हालांकि इस दिन की जड़ें गहरे खगोलीय तथ्यों से जुड़ी हैं, फिर भी ज़्यादातर लोग इसे उन प्राचीन कहानियों से जोड़कर देखते हैं, जिनमें प्रकाश की जीत और अंधकार की हार का ज़िक्र है। सबसे आम मान्यताओं में से एक यह है कि यह उस दिन का उत्सव है, जब भगवान कृष्ण ने राक्षस नरकासुर का वध किया था। एक और किंवदंती रावण के पतन की कहानी सुनाती है। कहा जाता है कि उस राक्षस राज ने सूर्य को पूरब दिशा से उगने से रोक दिया था; लेकिन अपनी हार के बाद, विषु के ही दिन भगवान सूर्य (सूर्य देव) ने आखिरकार अपने स्वाभाविक मार्ग पर वापस लौटना शुरू किया। ऐतिहासिक अभिलेखों से पता चलता है कि "नई शुरुआत" की यह भावना, कम से कम 9वीं शताब्दी ईस्वी से–चेर वंश के शासक स्थनु रवि के शासनकाल से ही–मलयाली संस्कृति का एक अभिन्न अंग रहा है।

इस दिन की शुरुआत असल में 'विषुक्कणि' से होती है–जिसका शाब्दिक अर्थ है, "विषु के दिन सबसे पहले दिखाई देने वाली चीज़।" मुख्य रूप से भगवान विष्णु और उनके अवतार, भगवान कृष्ण को समर्पित यह अनुष्ठानिक सजावट, आँखों के लिए एक अद्भुत और मनमोहक दृश्य होता है। त्योहार की पूर्व संध्या पर, घर की सबसे बुज़ुर्ग महिला सदस्य बड़ी ही बारीकी और श्रद्धा के साथ एक ऐसी थाली तैयार करती हैं, जो समृद्धि के प्रतीकों से भरी होती है–चावल, सुनहरे रंग के खीरे (कणि वेल्लारिक्का), पान के पत्ते, सिक्के, पवित्र ग्रंथ और एक धातु का दर्पण (आरनमुला कन्नाडी)। इस सजावट का सबसे मुख्य आकर्षण हमेशा चमकीले पीले रंग के 'कणि कोन्ना' (गोल्डन शावर) के फूल ही होते हैं। सुबह के शांत और एकांत समय में, एक–एक करके, परिवार के सदस्यों को 'कणि' की ओर ले जाया जाता है, जहाँ बड़े–बुज़ुर्ग अपने हाथों से बच्चों की आँखों को बड़े प्यार से ढक लेते हैं। आंखें खोलते ही भगवान के दर्शन से मन अभिभूत हो जाता है। दर्पण, जो भगवती (देवी) का प्रतीक है न केवल अपने प्रतिबिंब से विषुक्कणि की चमक बढ़ाता है, बल्कि हमारा अपना चेहरा भी दिखाता है, जो हमें याद दिलाता है कि भगवान स्वर्ग में स्वर्ण सिंहासन पर विराजमान कोई नहीं हैं, बल्कि हमारी सच्ची प्रकृति, शुद्ध चेतना हैं। दर्पण इस सत्य को शुद्ध रूप से ग्रहण करने के लिए मन को शुद्ध करने के महत्व की ओर भी इशारा करता है।

जैसे ही सूर्योदय होता है, घर का माहौल और उसकी ऊर्जा पूरी तरह से बदल जाती है। यही वह समय होता है, जब 'विषु कैनीट्टम' की रस्म निभाई जाती है–यह एक बेहद प्यारी और लोकप्रिय परंपरा है, जिसमें घर के बुज़ुर्ग, बच्चों और अपने से छोटे रिश्तेदारों को शगुन के तौर पर कुछ पैसे देते हैं। यह भाव केवल आर्थिक लेन–देन तक ही सीमित नहीं है; यह धन और मिल–बांटकर रहने वाले एक साल के लिए आशीर्वाद का प्रतीक है। सुबह की प्रार्थना और मंदिर दर्शन के बाद, ध्यान रसोई की ओर चला जाता है, जहाँ 'विषु सद्या' तैयार होती है। यह एक बहुत बड़ी और शानदार दावत होती है, जिसे केले के पत्तों पर परोसा जाता है। पायसम और विषु कट्टा (चावल के केक) की मिठास से लेकर अलग–अलग तरह की करी के नमकीन और तीखे स्वाद तक, यह भोजन जीवन के अलग–अलग "स्वादों" को दर्शाता है। जैसे–जैसे दिन ढलता हैं और शाम होती है, पटाखे फोड़ना विषु में एक अहम भूमिका निभाता है।

रीति–रिवाजों और भोजन से परे, विषु एक ऐसा त्योहार है जिसे आँखों से देखकर भी आनंद आता है। लोग जिस तरह से कपड़े पहनते हैं और अपने घरों को सजाते हैं, वह इस दिन की पहचान का एक बड़ा हिस्सा है; इसमें भड़कीले रंगों के बजाय सादगी भरी सुंदरता पर ज़्यादा ज़ोर दिया जाता है। महिलाओं के लिए, सबसे पसंदीदा पोशाक 'कसवु साड़ी' होती है। यह एक बहुत ही खास और मशहूर पहनावा है–मलाई जैसे हल्के–सफेद रंग का कपड़ा, जिसके किनारे पर सुनहरे रंग की मोटी और चमकीली पट्टी बनी

होती है। इसमें कुछ ऐसा है जो बहुत ही ज़मीन से जुड़ा हुआ लगता है; इसका हाथी–दांत जैसा रंग पवित्रता और सादगी को दर्शाता है, जबकि इसका सुनहरा रंग (यानी खुद कसवु) समृद्धि का प्रतीक है। इन किनारों पर अक्सर मोर या मंदिर की वास्तुकला से प्रेरित बारीक और सुंदर डिज़ाइन बने होते हैं। कम उम्र की लड़कियाँ पारंपरिक रूप से 'पट्ट पावाड़ा' पहनती हैं–जो कि रंग–बिरंगे रेशमी कपड़े से बनी एक स्कर्ट और ब्लाउज़ होती है–जबकि दो–टुकड़ों वाली पोशाक 'मुंडुम नेरियतुम' पारंपरिक सुंदरता की एक खास पहचान बनी हुई है। पुरुषों के लिए, पारंपरिक 'मुंड'–एक लंबा, हाथ से बुना हुआ कपड़ा जिसे कमर के चारों ओर लपेटा जाता है–हमेशा से ही मुख्य पहनावा रहा है। त्योहारों के खास मौकों पर, पुरुष 'कसवु मुंड' पहनना पसंद करते हैं, जिसके किनारे पर सुनहरे धागों की बुनाई होती है, जिसे 'करा' कहा जाता है। एक औपचारिक और गरिमामय रूप पाने के लिए, इसे आमतौर पर किसी शर्ट, कुर्ते या कंधे पर डाले जाने वाले 'मेल मुंडू' के साथ पहना जाता है।

जैसे विषु का त्योहार नज़दीक आता है, हर घर एक पवित्र स्थान जैसा बन जाता है। घर के दरवाज़ों पर फूलों की पंखुड़ियों से बने सुंदर और बारीक 'पूकलम' (सजावटी डिज़ाइन) बनाए जाते हैं, ताकि घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश हो सके। मंदिरों में, लयबद्ध मंत्रोच्चार, पीतल के दीयों (दीपम) की रोशनी और भव्य शोभायात्राओं के कारण एक बहुत ही उत्साहपूर्ण और जीवंत माहौल बन जाता है। विषु सिर्फ़ एक धार्मिक आयोजन ही नहीं है, बल्कि यह केरल की कभी न हार मानने वाली भावना और उसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का एक जीता–जागता प्रमाण है; यह हम सभी को याद दिलाता है कि हर नया साल, जीवन में रोशनी और सकारात्मकता को अपनाने का एक नया अवसर लेकर आता है।

हमारी पहचान हमारे पर्व

मेरा देश निराला है,
पर्वों का उजियाला है।
हर त्योहार है एक मोती,
इन मोतियों की सुंदर माला है।

ईद की मीठी सेवइयाँ,
लाए स्नेह अपार।
रक्षा बंधन से सजी कलाइयां,
लाते दिलों में प्यार।

होली के रंगों में,
मिट जाएं तकरार।
दशहरा सिखाता हमें,
सत्य की जीत अपार।

छठ पूजा का पावन अवसर,
भक्ति में डूबा हर द्वार।
करवा चौथ का व्रत कर,
प्रेम के डोर में बंदा परिवार।

बैसाखी में फसल लहराएं,
खुशी से झूमे ग्राम,
संक्रांति का समय आए, ,
पतंग उडे हर शाम।

दीवाली में दीपों से अर्चना,
करे तिमिर को भंग,
नवरात्रि में माँ की आराधना,
जगाए सबकी उमंग।।

गजानन की जयजयकार,
हर घर और पंडाल।
गणपति बप्पा मोरिया,
कहकर बुलाए हर साल।

हर त्योहार से हमने सीखा,
मिलजुल कर रहना है।
प्रेम, शांति और भाईचारा,
यही जीवन का गहना है।

हर उत्सव को साथ मनाएं,
देश का हर इंसान,
विविधता में भी हम एक रहेंगे,
यही हमारी पहचान,

वी सुरेश कुमार
हैदराबाद

युगादि–नव वर्ष का मंगल पर्व

डॉ गोपालकृष्ण एच एल,
निम्मलूरु

भारत पवित्र एवं पावन भूमि है जहाँ अनेक पर्व सार्थक रुप से मनाया जाता है। सांस्कृतिक संपन्नता से परिपूर्ण इस देश में, हिंदू कैलेंडर के अनुसार, सर्व प्रथम त्योहार युगादि है।

पृष्ठभूमि

युगादि शब्द, दो संस्कृत शब्दों "युग" और "आदि" के संयोजन से बना है। संस्कृत में, युग का अर्थ है काल और आदि का अर्थ है आरंभ; ये दोनों मिलकर युगादि या "नया आरंभ" बनाते हैं।

युगादि पर्व का महत्व उस मान्यता से भी जुड़ा है जिसके अनुसार युगादि उस युग को संदर्भित करता है जिसमें हम आज जी रहे हैं, जिसे कलियुग के नाम से भी जाना जाता है, जो भगवान कृष्ण के देह त्यागने के बाद शुरू हुआ था। महर्षि वेदव्यास द्वारा वर्णित "येस्मिन् कृष्णो दिवम्व्यत:, तस्मात् ईव प्रतिपन्नम् कलियुगम्" के अनुसार, चैत्र माह के पहले पखवाड़े में पहली अमावस्या के बाद और सूर्य के दक्षिण से उत्तर की ओर भूमध्य रेखा पार करने के बाद सूर्योदय के समय मनाया जाता है।

प्राचीन कथाओं के अनुसार, भगवान ब्रह्मा ने युगादि के दिन ही ब्रह्मांड की रचना की थी। समय का हिसाब रखने के लिए ही भगवान ब्रह्मा ने दिन, सप्ताह, महीने और वर्ष की व्यवस्था की। इसीलिए माना जाता है कि युगादि ब्रह्मांड की शुरुआत या पहला दिन है। हिंदू धर्मग्रंथों में, युगादिकृत भगवान विष्णु के अनेक नामों में से एक है, जिसका अर्थ है युगों का निर्माता। इसलिए, कन्नड़ और तेलुगु भाषी लोग भगवान विष्णु की पूजा करते हैं और अपने जीवन में सुख और समृद्धि के लिए सर्वशक्तिमान से आशीर्वाद मांगते हैं।

युगादि पर्व का विशेष महत्व है क्योंकि यह कावेरी नदी और विंध्य पर्वतमाला के बीच रहने वाले लोगों के लिए नव वर्ष की शुरुआत का प्रतीक है, जो दक्षिण भारत के चंद्र पंचांग का पालन करते हैं। यह पंचांग शालिवाहन युग से चला आ रहा है, जिसे महान षष्ठम शालिवाहन द्वारा स्थापित किया गया माना जाता है। राजा शालिवाहन, जिन्हें गौतमीपुत्र सातकर्णी के नाम से भी जाना जाता है, शालिवाहन युग की शुरुआत के लिए जिम्मेदार हैं।

इसके अलावा, यह त्योहार वसंत ऋतु के आगमन के साथ मनाया जाता है, जो प्रकृति के पुनर्जीवन का प्रतीक है और एक नए चक्र या वातावरण की शुरुआत करता है। ऐसा माना जाता है कि प्रकृति अपनी शीतकालीन नींद से जाग उठी है और अपने चारों ओर एक नया जीवन और स्फूर्ति सृजित करने लगी है। युगादि फूलों के खिलने, हरियाली और भरपूर फसल की आशा का उत्सव है। युगादि कई मायनों में नई शुरुआत का त्योहार है। इसलिए, इसे पारंपरिक रूप से अनुष्ठानों, प्रार्थनाओं और दावतों के साथ मनाया जाता है। यह केवल उत्सव का समय नहीं है, बल्कि नवीनीकरण और नई ऊर्जा प्राप्त करने का भी समय है। लोग अपने अतीत के कर्मों और कमियों को पीछे छोड़कर आने वाले वर्ष में एक सदाचारी जीवन की ओर अग्रसर होते हैं। यह नकारात्मकता को त्यागने और सकारात्मकता के साथ जीवन की शुरुआत करने का समय है।

युगादि त्योहार की विशेषताएँ

युगादि के दिन लोग सूर्योदय से पहले उठ जाते हैं और स्नान करके अपने दिन की शुरुआत करते हैं, नए वस्त्र पहनते हैं और बाद में अपने घरों के दरवाजों को ताजे आम के पत्तों से सजाते हैं। आम के पत्ते बांधने का महत्व एक पौराणिक कथा से जुड़ा है। ऐसा कहा जाता है कि भगवान शिव और पार्वती के दो पुत्र कार्तिक (या सुब्रमण्य या कुमार स्वामी) और गणेश को आम बहुत पसंद थे। कथा के अनुसार, कार्तिक ने लोगों को दरवाजे पर हरे आम के पत्ते बांधने के लिए प्रेरित किया, जो अच्छी फसल और सामान्य कल्याण

का प्रतीक है। दरवाजे पर ताजे आम के पत्ते किसानों के लिए अच्छी पैदावार का प्रतीक हैं। एक अनुष्ठान के रूप में, लोग अपने घरों और आसपास के वातावरण को ताजे गोबर से शुद्ध करते हैं, जिसे हिंदू रीति–रिवाजों के अनुसार पवित्र माना जाता है। युगादि का एक अन्य प्रचलित अनुष्ठान पंचांग श्रवणम है। इस त्योहार के अनुष्ठान के अनुसार, घर के प्रत्येक सदस्य के लिए वार्षिक भविष्यवाणी तैयार करने के लिए एक पंडित को बुलाया जाता है। यह अनुष्ठान युगादि के दिन भविष्य की भविष्यवाणी करने के लिए किया जाता है। युगादि की परंपराओं के तहत स्वादिष्ट और भव्य शाकाहारी भोजन की एक विस्तृत श्रृंखला तैयार की जाती है। उगादिपचड़ी बनाना युगादि का एक अनिवार्य रिवाज है। यह विशेष व्यंजन गुड़ (मीठा), नमक (नमकीन), इमली (खट्टा), नीम के फूल (कड़वा), कच्चा आम (खट्टा) और मिर्च पाउडर (तीखा) जैसी सामग्रियों से तैयार किया जाता है। यह इस बात का प्रतीक है कि नया साल शुरू होने पर जीवन सुख, दुख, क्रोध, घृणा, भय और आश्चर्य का मिश्रण है।

हालांकि सभी लोग युगादि को ऊपर बताए गए तरीके से मनाते हैं, लेकिन कुछ रीति–रिवाज हर राज्य में अलग–अलग होते हैं। आंध्र प्रदेश के लोग सुबह स्नान करने से पहले अपने शरीर और सिर पर तिल का तेल लगाते हैं, जिसके बाद ही वे भगवान का आशीर्वाद लेने के लिए मंदिरों में जाते हैं। कर्नाटक में युगादि की एक रस्म के रूप में, लोग चमेली की मालाएँ बनाते हैं और भगवान को अर्पित करते हैं। वे अपने घरों में शांति का स्वागत करने के प्रतीक के रूप में दरवाजों के पास रखे कलश पर नारियल रखते हैं।

सांस्कृतिक सजावट

त्योहारों के साथ ही नए साल की शुरुआत होती है, और सभी समुदायों की हर गली और घर को भव्यता और धूमधाम से सजाया जाता है ताकि एक समृद्ध और खुशहाल शुरुआत का जश्न मनाया जा सके। हर घर का प्रवेश द्वार रंगोली के रूप में रंगों और आकृतियों के जीवंत इंद्रधनुष से सज जाता है। तमिलनाडु में इसे कोलम और कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में रंगवल्ली के नाम से भी जाना जाता है। इसे चावल के आटे, रंगीन पाउडर और फूलों की पंखुड़ियों का उपयोग करके बड़ी कुशलता से बनाया जाता है।

युगादि के दौरान सांस्कृतिक सजावट का प्रत्येक तत्व प्रतीकवाद और परंपरा से ओतप्रोत होता है, जो एक ऐसा दृश्य ताना–बाना बुनता है जो त्योहार की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और आध्यात्मिक महत्व का सम्मान करता है।

दक्षिण भारत में युगादि के रूप में मनाया जाने वाला यह दिन शुभता से भरपूर होता है, क्योंकि देश के अन्य हिस्सों जैसे महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा मनाया जाता है, सिंधी समुदाय एक साथ मिलकर चेट्री चंद मनाता है और कुछ अन्य क्षेत्रों में इस दिन को चैत्र नवरात्रि के रूप में मनाया जाता है।

उगादि के दिन नीम (बेवु) और गुड़ (बेल्ला/पचड़ी) खाते समय पढ़ा जाने वाला श्लोक, जो जीवन के मिश्रित अनुभवों को स्वीकार करने का प्रतीक है, स्वास्थ्य, शक्ति और समृद्धि के लिए प्रार्थना है। यह श्लोक है–

शतायुर–वज्र–देहाय सर्व–सम्पत–काराय च।
सर्वारिष्ट–विनाशाय निम्बकण्ड–लाभक्षणम्।।

अर्थ–मैं इस नीम का सेवम इसलिए करता हूँ ताकि मुझे वज्र के समान बलवान शरीर प्राप्त हो, मैं सौ वर्ष तक जीवित रहूँ, सभी प्रकार के धन की प्राप्ति हो और सभी दुर्भाग्य / बुराइयों का नाश हो।

महत्व–नीम (कड़वा) और गुड़ (मीठा) खाने से हमें जीवम के सभी पहलुओं–सुख और दुख, सफलता और असफलता–को समान रुप से स्वीकार करने की याद आदी है।

स्वास्थ्य लाभ–ऐसा माना जाता है कि इस मिश्रण का सेवन करने से दीर्घायु प्राप्त होती है और बाधाओं और कष्टों को दूर करने में मदद मिलती है।

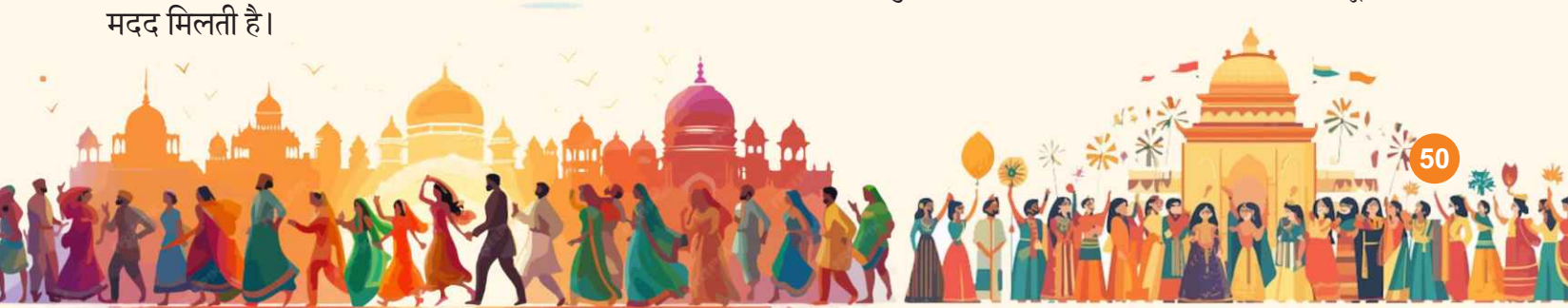

उपसंहार

तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक के दक्षिणी राज्यों में सूर्य की पहली किरणें पड़ते ही, हर घर नए साल के स्वागत में खुशी और समृद्धि की उम्मीद से जाग उठता है। भोर से ही एक शुभ वातावरण छा जाता है जो सभी इंद्रियों को मोहित कर लेता है। हर घर कर्नाटक संगीत की धुनों से गूंज उठता है, तरह–तरह के पकवानों की मनमोहक खुशबू हर रसोई में फैल जाती है और हर घर में बड़ों और बच्चों के बीच प्राचीन लोककथाओं और आशीर्वादों का आदान–प्रदान होता दिखाई देता है। साल के पहले सूर्यास्त के उपलक्ष्य में, समुदाय एक साथ इकट्ठा होकर प्रार्थना करते हैं और आने वाले वर्ष के लिए आशीर्वाद मांगते हैं, समृद्धि, शांति और खुशी का आह्वान करते हैं। युगादि के इस आनंदमय त्योहार के सभी पहलुओं को जानना अत्यावश्यक है।

युगादि लाए नव ऊर्जा, नव आशा, नव संकल्प–जीवन का हर दिन बने मंगलमय कल्प।

रंग–बिरंगा भारत

निकिता कुमारी
कार्पोरेट कार्यालय, बेंगलूर

एक भारत, अनेक भारत, सुनहरा अपना भारत
रौशनी सी जगमगाती दीवाली में
बैशाखी और होली में।

ईद की मिठास में, मस्जिद की अजान में,
पोंगल की खुशबू में, बिहू की उमंग में,
युगादि की नई सुबह की बहार में।

गणगौर की छटा में, तीज के श्रृंगार में,
राजस्थान की रेत से हिमालय की चोटी तक,
कश्मीर से कन्याकुमारी तक, भारत मनाता है अनेक त्योहार,
बदल जाती है वेश, भाषा, हर एक मोड़ गली चौराहे में।

एक हो जाते हैं सारे रंग, वेश और भाषा,
जब सरहद में खड़े होते हैं वीर जवान,
लहराता हुआ तिरंगा बन जाता है सबकी शान,
और रह जाती है सिर्फ एक ही पहचान,
हमारा भारत, हमारी शान, अनेक में एक भारत।।

"अभी शेष है"

अवधेश कुमार सिंह
कार्पोरेट कार्यालय, बेंगलूर

आज एक अप्रैल है, चारों तरफ जोश–ओ–जश्न का माहौल है,
गूंज रही है कहीं भार की मार, कहीं आभार भरमार,
कहीं भर–भर बधाइयां, तो कहीं धन्यवाद बारम्बार
कुछ अपनी वार्षिक उपलब्धियों पर इतरा रहे हैं,
जो लक्ष्य पूरा नहीं कर सके, नज़रों से कतरा रहे हैं–
उन्हें हौसला देना अभी शेष है।

सोचता हूँ कि क्या यही लक्ष्य है !
कल रात ही अल्साई आँखों में आंकड़ें जोड़ रहा था,
और ज़िदंगी का तज़ुर्बा पूछ बैठा–क्या यही सच है !
स्वयं को दे सुलभ सांत्वना, दूसरों में भरोसा जगा रहा था–
उस कल के लिए, जिसे मैंने आज तक देखा नहीं,
उस समय के लिए, जिसे मैंने कभी जिया नहीं,
उस परिस्थिति के लिए, जिससे होकर मैं अभी गुजरा नहीं,
उस गति के लिए, जिसे मैंने सपने में भी चुना नहीं।

बेखबर ज़िन्दगी है तू, सच का मुझे पता नहीं,
तू अपनी राह चल, इसमें तेरी कोई खता नहीं।
ज़िन्दगी की इस अनंत दौड़ में कुछ हसरतें अब भी अधूरी हैं,
कि, कुछ बेकरार तकरारों का इकरार अभी शेष है,
कुछ से तो मिल चुका मैं, पर काफी कुछ उस पार अभी शेष है,
कुछ सपने बनकर टूट गए हैं, कुछ अपने यूं ही छूट गए,
कुछ मिलते–मिलाते रूठ गए, कुछ हँसी–खेल में फूट गए।

हाँ, कुछ पाने की ज़िद में कुछ खोने का गम है,
ऐ वक्त, चल आहिस्ता, जन्म–जन्मों के ऋण चुकाने अभी शेष हैं,
वक्त बिता रहा है मुझको, पर अपनी हसरतों के वक्त बिताने अभी शेष है,
अमृत ही नहीं कुछ विष विशेष हैं, कितना पा चुके पर कितना अभी शेष है,
क्या सचमुच वही विशेष है, जो अब भी शेष है।

गौरी पूजा

मनोगरन,
बेंगलूर कॉमप्लेक्स

गौरी पूजा कई स्थानों पर मनाई जाती है। विशेष रूप से यह पर्व दक्षिणी राज्यों में इसे आदर और उल्लास के साथ मनाया जाता है। कर्नाटक में इसे गौरी हब्बा और स्वर्ण गौरी व्रत कहा जाता है। तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में इसे गौरी नोम्बु कहते हैं। महाराष्ट्र में इसे गणेश चतुर्थी के समान महत्व दिया जाता है। गौरी पूजा गणेश चतुर्थी से एक दिन पहले मनाई जाती है। गौरी पूजा की पौराणिक कथा बहुत रोचक है। यह पार्वती और भगवान शिव की प्रेम कहानी है। पार्वती देवी गौरी का अवतार हैं। कहा जाता है कि पार्वती ने भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए बहुत तपस्या और पूजा–अर्चना की। वह भगवान शिव से विवाह करना चाहती थीं। अंत में भगवान शिव पार्वती से बहुत प्रसन्न हुए और उनसे विवाह करने का निर्णय लिया। यह त्योहार विशेष रूप से महिलाओं द्वारा श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है। वे शांति, समृद्धि, सुखी वैवाहिक जीवन और पारिवारिक कल्याण के लिए प्रार्थना करती हैं। अविवाहित महिलाएं एक अच्छे और स्नेहशील पति और सुखी वैवाहिक जीवन के लिए प्रार्थना करती हैं। विवाहित महिलाएं अपने पतियों के अच्छे स्वास्थ्य, दीर्घायु और अपने बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए प्रार्थना करती हैं।

हमारी संस्कृति और परंपरा का संरक्षण

पारिवारिक बंधन–पूरा परिवार इस त्योहार की योजना बनाने, साफ–सफाई, सजावट और अन्य व्यवस्थाओं में शामिल होता है। वे पूरे परिवार और पड़ोसियों के लिए मिलकर भोजन तैयार करते हैं।

संस्कृति और परंपरा का संरक्षण

परिवार के बड़े–बुजुर्ग युवा पीढ़ी को पूजा की तैयारी करना, पारंपरिक गीत गाना, रीति–रिवाजों का पालन करना और पूरे आयोजन को सफल और यादगार बनाने में एक–दूसरे की मदद करना सिखाते हैं।

सामाजिक और सामुदायिक बंधन

परिवार के सदस्य, रिश्तेदार, मित्र और पड़ोसी एक–दूसरे के घर जाते हैं और मिठाई और उपहारों का आदान–प्रदान करते हैं। वे साथ में समय बिताते हैं जिससे सामाजिक बंधन और अपनेपन की भावना मजबूत होती है।

आध्यात्मिक और व्यक्तिगत अनुशासन

उपवास और नियमित गतिविधियों से परहेज को प्रोत्साहित किया जाता है। यह प्रार्थना, भक्ति, आंतरिक शक्ति, धैर्य और स्वस्थ जीवन शैली सीखने में सहायक होता है। यह सभी को अपने अंतर्मन से जुड़ने में मदद करता है।

आधुनिक युग में भी इस त्योहार का बहुत महत्व है। यह हमें कृतज्ञता के साथ जीवन पर चिंतन करने का अवसर प्रदान करता है। यह आधुनिक बहुलवाद के बीच सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करता है। यह महिलाओं को देवी गौरी के गुणों का अनुसरण करके अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सशक्त बनाता है।

निष्कर्ष

गौरी पूजा मात्र एक धार्मिक त्योहार नहीं है। यह भक्ति, पारिवारिक बंधन, मूल्यों, नारीत्व, वैवाहिक सुख और हमारी धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखने का उत्सव है। ये आज के बिखरे हुए और एकल परिवारों में एक बंधन का काम करते हैं।

वरलक्ष्मी व्रतम

पिंटु सिंह
हैदराबाद

वरलक्ष्मी व्रतम एक महत्वपूर्ण हिंदू त्यौहार है जो देवी लक्ष्मी को समर्पित है। देवी लक्ष्मी भगवान विष्णु की पत्नी हैं और उन्हें धन, समृद्धि और कल्याण की देवी माना जाता है। इस नाम का अर्थ है– 'वर' यानी वरदान और 'लक्ष्मी' यानी देवी, अर्थात "वरदान देने वाली देवी"।

यह त्यौहार मुख्य रूप से दक्षिण भारतीय राज्यों– आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक और तमिलनाडु में मनाया जाता है। यह मुख्य रूप से विवाहित महिलाओं (सुहागिनों) द्वारा अपने पति, बच्चों और परिवार के कल्याण के लिए मनाया जाता है।

समय और महत्व

यह व्रत हिंदू कैलेंडर के अनुसार श्रावण मास (आमतौर पर अगस्त) में पूर्णिमा से ठीक पहले आने वाले शुक्रवार को रखा जाता है।

ऐसी मान्यता है कि इस दिन देवी वरलक्ष्मी की पूजा करना अष्टलक्ष्मी (धन, पृथ्वी, विद्या, प्रेम, कीर्ति, शांति, सुख और शक्ति की आठ देवियाँ) की पूजा करने के समान है।

अनुष्ठान और पूजा विधि

इस त्यौहार की तैयारी बहुत ही श्रद्धा और शुद्धता के साथ की जाती है–

1. तैयारी

महिलाएं ब्रह्म मुहूर्त में उठकर घर की सफाई करती हैं और मुख्य द्वार पर सुंदर रंगोली (कोलम) बनाती हैं।

2. कलश स्थापना

पूजा का सबसे मुख्य भाग 'कलश' होता है।

- एक तांबे या चांदी के लोटे (कलश) को चावल, पानी या सिक्कों से भरा जाता है।
- इसके ऊपर आम के पत्तों के बीच में हल्दी और कुमकुम लगा हुआ नारियल रखा जाता है।
- नारियल पर अक्सर देवी का चांदी या पीतल का 'मुखौटा' लगाया जाता है।
- देवी को छोटी साड़ी और गहनों से सजाया जाता है और ताजे फूलों की माला पहनाई जाती है।

3. मुख्य पूजा

- पूजा की शुरुआत बाधाओं को दूर करने के लिए भगवान गणेश की प्रार्थना से होती है। इसमें शामिल हैं–
- आवाहन–देवी को घर में आमंत्रित करना।
- अंगपूजा–देवी के विभिन्न रूपों की पूजा।
- तोरम–पूजा में पवित्र किए गए नौ गांठों वाले पीले धागे को महिलाएं अपनी दाहिनी कलाई पर बांधती हैं।

4. नैवेद्यम (प्रसाद)

इस दिन पारंपरिक मिठाइयां और व्यंजन बनाए जाते हैं, जैसे–

- ओबट्टू / पूरन पोली–मीठी रोटी।
- परमान्नम–खीर।
- सुंडल–मसालेदार चने।
- वड़ा–दाल से बना नमकीन व्यंजन।

पौराणिक कथा (व्रत कथा)

इस त्यौहार की उत्पत्ति का उल्लेख 'स्कंद पुराण' में मिलता है। कहा जाता है कि भगवान शिव ने देवी पार्वती को चारुमती नाम की एक महिला की कथा सुनाई थी।

चारुमती एक अत्यंत समर्पित पत्नी और बहू थी। उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर देवी लक्ष्मी उसके सपने में आईं और उसे 'वरलक्ष्मी व्रत' करने का निर्देश दिया। चारुमती ने गांव की अन्य महिलाओं के साथ मिलकर यह पूजा की, जिसके फलस्वरूप उन सभी के परिवार धन–धान्य और सुख–समृद्धि से भर गए।

आधुनिक समय में उत्सव

आज के समय में वरलक्ष्मी व्रतम एक बड़ा सामाजिक उत्सव बन गया है।

- ताम्बूलम–पूजा के बाद पड़ोसियों और रिश्तेदारों को घर बुलाया जाता है। उन्हें उपहार के रूप में 'ताम्बूलम' दिया जाता है, जिसमें पान के पत्ते, सुपारी, फल, हल्दी, कुमकुम और कभी–कभी ब्लाउज पीस या अन्य उपहार होते हैं।
- सामुदायिक भावना–कई जगहों पर महिलाएं सामूहिक रूप से पूजा करती हैं, जिससे आपसी प्रेम और परंपरा को बढ़ावा मिलता है।

।।श्री गणेश चतुर्थी।।

संजय बबन बोहाडे
पुणे

रिम झिम, रिम झिम बारिश ने
अब आँख अपनी मुँद ली।
श्री गणेश के स्वागत में
धरनी ने फूलों की चादर ओढ़ ली।।१।।

श्री गणेश चतुर्थी के शुभ दिन
श्री गणेश का आगमन घर में हुआ।
भक्ति के इस उत्सव का आरंभ
आज प्राण प्रतिष्ठा से हुआ।।२।।

दस दिन का त्यौहार यह
ज्ञान की ज्योत जगाए।
बुद्धि के आराध्य देवता
बच्चों के प्रेरणा स्रोत बन जाए।।३।।

पार्वती नंदन श्री गणेश की भक्ति में
हर कोई तल्लीन हुआ।
तू सुख कर्ता, तू दुःख हर्ता
स्वरों से सारा जहाँ गूंज उठा।।४।।

ताल, मृदंग, बाँसुरी के स्वरों के संग
भक्त गणराज को मोदक का भोग चढ़ाए।
श्री विघ्नहर्ता के गुणगान में
आरती के पावन गीत भक्त गाएं।।५।।

अबाल, वृद्ध, नारी सम्मान का वचन लेकर
दस दिन बाद श्री गणेश अपने गाँव चले।
श्री गणेश की बिदाई में
भक्तों की आँखें नम कर गए।।६।।

एक वादा भक्तों से
आराध्य श्री गणेश का रहा।
अगले बरस फिर आने का
भरोसा सभी को दिया।।७।।

श्री गणेश चतुर्थी का पावन पर्व
भक्ति, शक्ति, चातुर्य का प्रतीक बने।
वसुदेव कुंटुंबकम और आत्म संस्कारों का पर्व
हर साल मनाने का सौभाग्य हमें मिले।।८।।

गणेशोत्सव सिर्फ एक त्यौहार नहीं
यह बाल गंगाधर तिलक कह गए।
अध्यात्म के साथ आधुनिकता, देशभक्ति
की प्रेरणा अगली पीढ़ी को दे गए।।९।।

।।जय श्री गणेश।।

गणेश चतुर्थी–भारत की जीवंत संस्कृति

हमारे त्योहार और भारतीय परंपरा को जीवित रखने की कला

सतीश गुंजाळ
पुणे

भारत को अक्सर केवल एक देश नहीं बल्कि एक उप महाद्वीप कहा जाता है–यह भाषाओं, व्यंजनों और परंपराओं की विविधता से भरा हुआ है। इस विशाल और विविधतापूर्ण देश को एक सांस्कृतिक सूत्र में बांधने का काम उसके त्योहार करते हैं। भारत में त्योहार केवल छुट्टियाँ नहीं हैं, बल्कि हमारी सभ्यता की प्रवाह धारा हैं। ये अतीत और वर्तमान, आध्यात्मिक और सांसारिक, व्यक्ति और समाज के बीच एक मजबूत संबंध बनाते हैं। आज के दौर में जब वैश्वीकरण, शहरीकरण और तकनीकी व्यस्तता तेजी से बढ़ रही है, तब त्योहार भारतीय संस्कृति को जीवंत, मजबूत और प्रासंगिक बनाए रखने का महत्त्वपूर्ण माध्यम हैं। इसका सबसे सुंदर उदाहरण गणेश चतुर्थी है, जो समय के साथ विकसित होकर समुदाय, पर्यावरण जागरूकता और सांस्कृतिक निरंतरता का प्रतीक बन गया है।

संस्कृति संरक्षण में त्योहारों की भूमिका

भारतीय परंपराएँ किसी संग्रहालय में रखी हुई स्थिर वस्तुएँ नहीं हैं, बल्कि जीवंत परंपराएँ हैं जो सहभागिता के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती हैं। त्योहार ऐसा अनुभव प्रदान करते हैं जिसे कोई पुस्तक नहीं सिखा सकती। त्योहारों के दौरान मिलने वाले अनुभव–जैसे रसोई में बनते हुए मोदक की खुशबू, जुलूस में बजते ढोल की आवाज़, सुंदर मूर्तियों का दर्शन और माथे पर लगाया जाने वाला कुमकुम–ये सब नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति से भावनात्मक रूप से जोड़ते हैं। इसके अलावा त्योहार सांस्कृतिक शिक्षा के केंद्र भी बन जाते हैं। बच्चों को पौराणिक कथाएँ, नैतिक मूल्य और कला–संस्कृति का ज्ञान अक्सर किताबों से नहीं बल्कि अपने परिवार और समाज से मिलता है।

गणेश चतुर्थी–सांस्कृतिक विकास का उदाहरण

गणेश चतुर्थी भारतीय संस्कृति की जीवंतता का एक शानदार उदाहरण है। भगवान गणेश–जो बुद्धि, समृद्धि और नई शुरुआत के देवता माने जाते हैं। गणेश की पूजा प्राचीन समय से होती आ रही है। लेकिन आज जिस भव्य रूप में यह त्योहार मनाया जाता है, वह समय के साथ हुए सामाजिक बदलावों का परिणाम है। गणेश चतुर्थी के आधुनिक सार्वजनिक स्वरूप का श्रेय स्वतंत्रता सेनानी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक को दिया जाता है। उन्होंने गणेश उत्सव को घरों से निकालकर सार्वजनिक उत्सव का रूप दिया और समाज को एकजुट करने का माध्यम बनाया।

समुदाय, अर्थव्यवस्था और कला का संगम

गणेश चतुर्थी कई स्तरों पर समाज को जीवंत बनाती है। दस दिनों तक समाज और मोहल्ले एक परिवार की तरह एक साथ आते हैं। इस दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम, सामाजिक सेवा और सामूहिक गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। यह त्योहार हजारों कलाकारों और कारीगरों के लिए रोजगार का स्रोत भी बनता है। मूर्तिकार महीनों पहले से गणेश की मूर्तियाँ बनाना शुरू कर देते हैं। फूल विक्रेता, मिठाई बनाने वाले और सजावट करने वाले सभी को इससे काम मिलता है।

आधुनिक समय में पर्यावरण की चिंता

पिछले कुछ वर्षों में इस त्योहार के सामने सबसे बड़ी चुनौती पर्यावरण प्रदूषण रही है। प्लास्टर ऑफ पेरिस की मूर्तियों और रासायनिक रंगों के कारण जल प्रदूषण बढ़ा है। अब लोग पर्यावरण–अनुकूल शाडू मिट्टी की मूर्तियों का उपयोग करने लगे हैं। कई जगह कृत्रिम विसर्जन टैंक बनाए जा रहे हैं और प्राकृतिक रंगों का प्रयोग बढ़ रहा है।

निष्कर्ष

हमारे त्योहार केवल उत्सव नहीं बल्कि हमारी सामूहिक आत्मा के संरक्षक हैं। गणेश चतुर्थी का सफर–एक पारिवारिक पूजा से लेकर स्वतंत्रता आंदोलन के साधन और अब पर्यावरण जागरूकता के मंच तक भारतीय संस्कृति की जीवंतता को दर्शाता है। जब हम हर साल भगवान गणेश का स्वागत करते हैं और विसर्जन करते हैं, तब यह हमें याद दिलाता है कि समय के साथ रूप बदल सकता है, लेकिन भारतीय संस्कृति की आत्मा सदैव जीवित रहती है।

उत्तराखण्ड का लोकपर्व–फूलदेई

माधुरी रावत
कोटद्वार

उत्तराखण्ड को अपने अप्रतिम प्राकृतिक सौंदर्य के लिए जाना जाता है। इसके चप्पे–चप्पे पर बिखरे छोटे–बड़े पहाड़, नदियां, झरने, जंगल, पेड़–पौधे एक अलग ही सम्मोहन उत्पन्न करते हैं, एक पावन भाव जगाते हैं, तभी इसे देवभूमि कहते हैं। बसंत ऋतु में तो यह प्राकृतिक सौंदर्य अपने चरम पर होता है क्योंकि प्रकृति रंग–बिरंगे फूलों जैसे बुरांस, फ़्योंली, बासिंगा, ढ़ाक, ग्वीराल, पैयां, सेमल, आड़ू, खुबानी आदि के फूलों से लदी रहती है तो खेत सरसों के पीले रंग से रंगे रहते हैं।

प्रकृति के प्रति आभार प्रकट करने के लिए उत्तराखण्ड में चैत्र माह में 'फूलदेई पर्व' मनाया जाता है। यह अत्यंत सुंदर और पारंपरिक लोक पर्व है। प्रकृति का यह उत्सव, यह त्यौहार नई ऋतु, फूलों और हरियाली के स्वागत में मनाया जाता है। यह चैत्र मास की संक्रांति से आरंभ होता है तथा बैसाख मास की संक्रांति अर्थात बैसाखी तक चलता है। यह 13/14 मार्च यानि चैत्र के प्रथम दिवस जिसे फूल–संग्रान्द (फूल संक्रांति) भी कहते हैं को आरंभ होता है।

फूलदेई विशेष रूप से बाल पर्व है जिसमें बच्चे पूरे चैत्र मास में सुबह–सुबह रिंगाल (स्थानीय बांस का एक प्रकार) की टोकरियों जिन्हें फूलकंडी कहते हैं, में फूल भरकर लाते हैं तथा परिवार की सुख–समृद्धि की कामना के साथ, सूर्योदय से पहले, अपने तथा अपने अड़ोस–पड़ोस के घरों की देहली (दहलीज) पर फूल डालते हैं। इस दौरान वो सुख–समृद्धि की कामना के साथ परंपरागत लोकगीत गाते हैं:

"फूलदेई, छम्मा देई, दैणी द्वार, भर भकार, यो देली सौं, बारंबार नमस्कार"

(इसका अर्थ है – आपकी देहली फूलों से भरी रहे, सबकी रक्षा हो और घर में अन्न का भंडार भरा रहे, इस देहली को बार–बार नमस्कार है।)

यह क्रम पूरे माह चलता है। सुबह–सुबह फूलों भरी देहरी दिन को खुशनुमा बना देती है। फूलों जैसे बच्चों को फूल डालते देखना एक अलग ही अनुभव होता है। देहरियों पर फूल डालने वाले इन बच्चों को फुलारी कहा जाता है।

झुंड बनाकर फूल लेने जाते समय बच्चे लोकगीत गाते हैं–

चला फुलारी फूलूँ कु, सौदा–सौदा फूल बिरौला
भौरों का जूठा फूल न तोडयां, म्वारियूं का जूठा फूल न ल्यां

(इसका अर्थ है – चलो फुलारियों, फूलों के लिए, ताजे–ताजे फूल बिनेंगे। भौंरों के जूठे फूल मत तोड़ना, म्वारियों (शहद की छोटी मक्खियाँ) के जूठे फूल मत लाना)

पूरे माह देहरियों पर फूल डालने के बाद समापन पर परिवारों द्वारा फुलारियों को उपहार, उड़द दाल की पकौड़ियाँ, गुलगुले, मिठाई तथा दक्षिणा दी जाती है। बच्चे घोघा माता अर्थात् प्रकृति देवी का आभार प्रकट करते हैं और उनकी डोली निकालते हैं।

उत्तराखण्ड की गौरवशाली संस्कृति में 'फूलदेई' केवल एक त्यौहार नहीं, यह प्रकृति और मनुष्य के अटूट प्रेम का जीवंत उत्सव है। यह उत्तराखण्ड की जीवंत संस्कृति और प्रकृति के प्रति अगाध प्रेम का प्रतीक है। यह पर्व समाज में प्रेम और परस्पर भाईचारे को बढ़ावा देता है। यह नई पीढ़ी को बचपन से ही प्रकृति से जोड़ने, उसके निकट लाने और पर्यावरण संरक्षण का महत्व बताने का उत्सव है।

कर्नाटक के प्रमुख त्योहार

रेखा एस हेरेंजाल
कार्पोरेट कार्यालय

कर्नाटक, जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और जीवंत परंपराओं के लिए जाना जाता है, कई तरह के त्योहार मनाता है जो इसके विविध इतिहास और समुदायों को दर्शाते हैं। कर्नाटक का हर त्योहार भव्य उत्सवों, रीति–रिवाजों और रंग–बिरंगे समारोहों से भरा होता है। कर्नाटक के त्योहार, भारत के अधिकांश अन्य त्योहारों की तरह ही, मौसमों (ऋतुओं) और महीनों (मासों) पर आधारित होते हैं। त्योहारों के दिनों/तारीखों को तय करने का तरीका उन दिनों में किसानों के काम के कार्यक्रम के अनुसार अपनाया गया था। ऐसा इसलिए है, क्योंकि हमारा देश हमेशा से ही कृषि–प्रधान देश रहा है, और किसानों की गतिविधियों तथा उनके खाली समय के आधार पर ही त्योहार मनाया जाता था। हमारे बुजुर्गों ने इन त्योहारों के दौरान बनाए जाने वाले व्यंजन भी मौसम के अनुसार उपलब्ध फलों और सब्जियों, और उस मौसम में मानव शरीर की सेहत की ज़रूरतों को ध्यान में रखकर बहुत सोच–समझकर तैयार किया है।

तो, आइए कर्नाटक के ऋतु/मास आधारित त्योहारों के बारे में एक–एक करके जानते हैं।

1. चैत्र मास – वसंत ऋतु – (मार्च/अप्रैल)

- चंद्रमान उगादी और सौरमान उगादी

उगादी कर्नाटक का पारंपरिक नव वर्ष और नई शुरुआत का प्रतीक है। यह त्योहार राज्य की सांस्कृतिक ताने–बाने में गहराई से जुड़ा हुआ है। बड़े उत्साह के साथ मनाया जाने वाला उगादी, हिंदू चंद्र–सौर कैलेंडर का पहला दिन होता है। इसे अक्सर पूजा – पाठ , दावतों और "बेवु बेल्ला" (नीम के पत्तों और गुड़ का मिश्रण) नामक एक विशेष व्यंजन को बनाकर मनाया जाता है। यह व्यंजन जीवन के खट्टे–मीठे अनुभवों का प्रतीक है, जिन्हें पूरे दिल से स्वीकार किया जाना चाहिए।

साथ ही, घर पूरन पोली, चनाडाल के वड़े, कच्चे आम के चित्रान्ना जैसे स्वादिष्ट व्यंजनों की महक से भर जाते हैं। उगादी नए संवत्सर का पहला दिन होता है, इसलिए मंदिर जैसे सामुदायिक केंद्र 'पंचांग–श्रवण' का आयोजन करते हैं, जिसमें 'पानक' और 'पनिवार' बांटा जाता है। यह प्रसाद गर्मी को संतुलित करने और शरीर में प्रोटीन की कमी को पूरा करने में सहायक होता है।

- राम नवमी

कर्नाटक में राम नवमी के उत्सव में घरों में राम की पूजा, मंदिरों के उत्सव और बेंगलुरु में एक महीने तक चलने वाला मशहूर शास्त्रीय संगीत समारोह (जिसमें कर्नाटक और हिंदुस्तानी संगीत परंपराओं के दिग्गज कलाकार अपनी प्रस्तुतियाँ देते हैं) शामिल हैं।

इस पर्व में स्थानीय लोग सड़कों पर आने वाले किसी भी व्यक्ति को मुफ़्त में अदरक, गुड़ और इलायची की 'पानक' और खीरे की 'कोसाम्बरी' देते हैं, जिससे आपसी भाईचारे और सामुदायिक भावना को बढ़ावा मिलता है। इस का मुख्य उद्देश्य तेज़ गर्मी से राहत दिलाना भी है।

- करगा उत्सव–चैत्र पूर्णिमा

करगा उत्सव विशेष रूप से बेंगलुरु शहर में मनाया जाने वाला सबसे प्राचीन और जीवंत उत्सवों में से एक है। यह अनोखा उत्सव महाभारत की द्रौपदी को समर्पित है, और इसे तिगला (वह्नि कुल क्षत्रिय) समुदाय द्वारा रात के समय एक भव्य शोभायात्रा के साथ मनाया जाता है। इस उत्सव का मुख्य आकर्षण 'करगा' है–एक पवित्र फूलों का कलश जिसे एक पुजारी बिना हाथों के सहारे के अपने सिर पर उठाकर चलता है; यह एक विस्तृत अनुष्ठान है जो गहरी भक्ति और परंपरा को दर्शाता है।

- वैरमुडी उत्सव वसंत ऋतु–मार्च–अप्रैल (फाल्गुन मास)

कर्नाटक के मेलुकोटे में स्थित चेलुवनारायण स्वामी (अर्थात सुंदर रूप के महा विष्णु) मंदिर में वार्षिक 13–दिवसीय ब्रह्मोत्सव मनाया जाता है जो देवता के भव्य श्रृंगार के लिए जाना जाता है, जिसमें उन्हें "वैरमुडी" (हीरों से जड़ा मुकुट) पहनाया जाता है। माना जाता है कि इस मुकुट की उत्पत्ति दिव्य है। हजारों भक्त इस मनमोहक शोभायात्रा को देखने के लिए एकत्रित होते हैं।

2. ज्येष्ठ–आषाढ़ (जून/जुलाई) – मॉनसून की शुरुआत

इन दो महीनों में शायद ही कोई त्योहार होता है, क्योंकि आध्यात्मिक रूप से यह माना जाता है कि इस महीने में महा विष्णु योग निद्रा में चले जाते हैं और यह समय सांसारिक उत्सवों के लिए नहीं होता। साथ ही, चूंकि कर्नाटक में यह मॉनसून की शुरुआत का महीना होता है, किसान अक्सर अपनी खेती–बाड़ी की गतिविधियों में व्यस्त हो जाते हैं। इस मौसम में होने वाली भारी बारिश के कारण लोगों के इकट्ठा होने की सलाह नहीं दी जाती।

ज्येष्ठ अमावस्या के दिन बैलों की पूजा और सम्मान करते हैं। इस दिन को 'मणेतिना अमावस्या' (मिट्टी के बैलों का त्योहार) कहा जाता है। यह उत्तरी कर्नाटक का एक महत्वपूर्ण कृषि त्योहार है।

3. श्रावण मास (जुलाई/अगस्त) – वर्षा ऋतु

- नाग पंचमी

कर्नाटक का एक महत्वपूर्ण त्योहार है और इसे अच्छे स्वास्थ्य, सुरक्षा और समृद्धि के लिए प्रार्थना करने के रूप में मनाया जाता है। विशेष रूप से कर्नाटक के तटीय (तुळुनाडु) क्षेत्र में, सुरक्षा और समृद्धि के लिए नागों (भगवान सुब्रह्मण्य का अवतार) की पूजा की जाती है। इस परंपरा के तहत, समर्पित मंदिरों (नागबन) या नागकट्टे पर स्थित मूर्तियों को दूध और हल्दी चढ़ाई जाती है। यह त्योहार प्रकृति पूजा का एक बड़ा उत्सव है, जिसमें पूर्वजों की पूजा और सर्प देवता के प्रति गहरी श्रद्धा का अद्भुत मेल देखने को मिलता है।

उत्तरी कर्नाटक नई शादीशुदा बेटियाँ अपने माता–पिता के घर लौट आती हैं और बहनें ठीक रक्षा बंधन की तरह अपने भाइयों की भलाई के लिए प्रार्थना करती हैं, पारंपरिक/लोक संगीत, नृत्य और झूलों (जोकाली) का आनंद लेते हैं, जो इन उत्सवों का एक अहम हिस्सा हैं।

- वरमहालक्ष्मी पर्व:

वरमहालक्ष्मी पर्व कर्नाटक में, खासकर राज्य के दक्षिणी हिस्से में, श्रावण महीने के दूसरे शुक्रवार को बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है। इस मौके पर देवी लक्ष्मी की पूजा एक जल–भरे कलश को स्थापित कर उस पर देवी का सुंदर सजा हुआ मुख लगाकर, साड़ी पहनाकर सोने के गहनों, सिक्कों और नोटों से सजाया जाता है। घर को पूरी तरह से साफ–सुथरा किया जाता है और मुख्य द्वार को रंग–बिरंगी रंगोली और तोरण से सजाया जाता है। घर की महिलाएँ पूजा करती हैं, जो खुद भी रेशमी साड़ियों और गहनों से सजी–धजी होती हैं। ऐसा माना जाता है कि अच्छे स्वास्थ्य व धन–संपत्ति के लिए प्रार्थना करने का सबसे उत्तम समय है। इस दिन देवी को ओब्बट्टु (पूरन पोली) जैसे खास पकवानों का भोग लगाया जाता है।

4. भाद्रपद मास – वर्षा ऋतु (अगस्त / सितंबर) – बारिश का मौसम – गौरी गणपति उत्सव

- गौरी उत्सव

कर्नाटक के प्रसिद्ध त्योहारों में से एक है और यह भगवान गणेश की माता, देवी गौरी को समर्पित है। यह त्योहार विशेष रूप से विवाहित महिलाओं के लिए महत्वपूर्ण है, जो इस दिन अपने परिवारों की भलाई और समृद्धि के लिए विभिन्न अनुष्ठान और प्रार्थनाएँ करती हैं। अत्यंत श्रद्धा के साथ मनाए जाने वाले इस पर्व में, सुंदर सजावट से सुसज्जित देवी गौरी की मिट्टी की प्रतिमा की पूजा की जाती है। 'बागिना' (जिसमें सौभाग्य/सुमंगल्य प्रदान करने वाली वस्तुएँ जैसे हल्दी–कुमकुम, पान–सुपारी, नारियल आयडी राखी जाती हैं) का आदान–प्रदान करती हैं।

- गणेश चतुर्थी

गणेश चतुर्थी कर्नाटक के सबसे व्यापक रूप से मनाए जाने वाले त्योहारों में से एक है, जो भगवान गणेश को समर्पित है, जिन्हें बाधाओं को दूर करने वाला और ज्ञान एवं समृद्धि का देवता माना जाता है। इस त्योहार के उपलक्ष्य में घरों और सार्वजनिक स्थानों पर भगवान गणेश की सुंदर मिट्टी की प्रतिमाएं स्थापित की जाती हैं, जिसके बाद प्रार्थना, अनुष्ठान और सांस्कृतिक प्रस्तुतियां होती हैं।

गणेश चतुर्थी का कर्नाटक के त्योहारों के कैलेंडर में विशेष स्थान है। अत्यंत श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जाने वाला यह

त्योहार समुदायों को एक साथ लाता है, विभिन्न इलाकों के बच्चे और युवा एक साथ आते हैं और सामुदायिक स्थानों पर गणेश प्रतिमाएं स्थापित की जाती हैं। परंपरा के अनुसार, बच्चे घर घर जाके कम से कम 108 गणेश प्रतिमाओं पर अक्षत डालकर भगवान के दर्शन करतें है।

गौरी और गणेश प्रकृति और मिट्टी से गहराई से जुड़े हुए हैं। अंत में जल निकायों में प्रतिमाओं का विसर्जन जीवन चक्र की पुनरावृत्ति का प्रतीक है। भगवान को 21 प्रकार के विशेष व्यंजन, जिनमें चक्कुली, कडुबू, लड्डू आदि अर्पित किए जाते हैं।

- अनंत चतुर्दशी–भाद्रपद मास की पूर्णिमा

कर्नाटक में अनंत चतुर्दशी के दिन परिवार भगवान विष्णु (अनंत) की विशेष पूजा करते हैं, जिसमें 14 प्रकार के फूलों, पत्तों और फलों का उपयोग किया जाता है। विशेष मिठाइयाँ, जिनमें 'अतिरस' या 'कज्जया' (चावल और गुड़ से बनी मिठाई) के 28 नग, नैवेद्य के रूप में अर्पित की जाती हैं।

- पितृ पक्ष – महालय अमावस्या–भाद्रपद मास

अनंत चतुर्दशी के बाद का पूरा पक्ष (15 दिन) 'महालय' के रूप में मनाया जाता है, जो दिवंगत आत्माओं और पूर्वजों को समर्पित होता है। पितृ पक्ष का समापन 'अमावस्या' (चंद्रविहीन दिन) के साथ होता है, विशेष पूजा या श्राद्ध कर्म किए जाते हैं।

5. आश्विज मास – शरद ऋतु – नवरात्रि / दशहरा

- नवरात्रि

महालय अमावस्या के अगले दिन से नवरात्रि शुरू होती है। कर्नाटक के अलग–अलग हिस्सों में दशहरा अलग–अलग तरीकों से मनाया जाता है। दशहरा को 'राज्य उत्सव' (नाड़ हब्बा) भी माना जाता है, और यह परंपरा मैसूर राज्य के तत्कालीन राजाओं–मैसूर वोडेयारों से चली आ रही है। राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शानेवाला यह 10–दिनों का उत्सव, बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है; यह जीत देवी चामुंडेश्वरी द्वारा राक्षस महिषासुर पर मिली विजय को दर्शाती है। भव्य जुलूसों में देवी चामुंडेश्वरी को एक हाथी के ऊपर बने हौदे (आसन) पर बिठाया जाता है; पूरे मैसूर के राज महल की मशहूर रोशनी भी इस उत्सव का हिस्सा है, जो दुनिया भर से आने वाले सैलानियों को अपनी ओर खींचती है।

इसके साथ मैसूर, बेंगलुरु आदि शहरों के हर घर में इसे 'गोम्बे हब्बा' (जिसका अर्थ है "गुड़िया उत्सव/ प्रदर्शन ") मनाया जाता है। परिवार "पट्टद गोम्बे" (रक्तचंदन की लकड़ी से बनी शाही जोड़े की गुड़िया), मिट्टी, हाल के वर्षों में प्लास्टिक से बनी गुड़ियों को सजाते हैं। ये गुड़िया अक्सर पीढ़ियों से चली आ रही होती हैं–और ये देवी–देवताओं, कहानियों तथा रोज़मर्रा के जीवन का प्रतिनिधित्व करती हैं। गुड़ियों को सीढ़ियों की विषम संख्याओं वाली पायदानों (आमतौर पर 3, 7, 9, या 11) पर सजाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि जब दुर्गा ने महिषासुर को हराया था, तब पृथ्वी पर मौजूद अन्य सभी देवी–देवताओं और जीवों ने अपनी शक्तियाँ उन्हें सौंप दी थीं; और खुद शक्तिहीन होकर इस तरह स्थिर खड़े रहे और देवी की विजय के साक्षी बने।

6. अश्विन और कार्तिक मास (अक्टूबर / नवंबर) के दौरान दीपावली

- दीपावली

यह कर्नाटक में 3 से ज़्यादा दिनों तक चलने वाला पारिवारिक मेल–जोल का एक जीवंत त्योहार है। परंपरा के अनुसार, शाम को पानी से भरे बर्तनों की पूजा की जाती है और दीपावली के पहले दिन, यानी नरक चतुर्दशी को, सुबह गर्म पानी से नहाने से पहले शरीर पर तेल लगाया जाता है। वैज्ञानिक दृष्टि से, सर्दियों की शुरुआत में तेल स्नान त्वचा को पोषण देने में मदद करता है। ऐसा माना जाता है कि इसी कार्तिक चतुर्दशी के दिन, भगवान राम 14 वर्षों के वनवास के बाद अयोध्या लौटे थे, और इसी दिन भगवान कृष्ण ने नरकासुर से युद्ध किया था और उस पर विजय प्राप्त की थी। इसी कारण दीपावली के दौरान बुराई/अंधकार पर प्रकाश की जीत के रूप में घर घर मे मिट्टी के दिए जलाए जातें हैं , पठाके फोड़े जातें हैं और घरों को रोशनी की लड़ियों से सजाया जाता है। क्योंकि यह सर्दियों का महीना है, दीपक जलाने से कार्तिक मास की अंधेरी शामें रोशन हो जाती हैं।

दूसरा दिन अमावस्या का होता है, जिस दिन देवी लक्ष्मी की पूजा की जाती है ताकि वे उत्तम स्वास्थ्य, धन–संपत्ति, सौभाग्य और समृद्धि प्रदान करें।

तीसरे दिन, जिसे 'बलि पड़वा' (Bali Padyami) कहा जाता है, ऐसा माना जाता है कि राजा बलि अपनी प्रजा से मिलने के लिए पृथ्वी पर आते हैं। कर्नाटक के घरों में इस अवसर पर विशेष पूजा–अर्चना का आयोजन किया जाता है।

- कार्तिक मास तुला संक्रांति

तुला संक्रांति या कावेरी संक्रांति, कर्नाटक में, विशेष रूप से कोडागु (कूर्ग) में मनाया जाने वाला एक प्रमुख और अत्यंत आध्यात्मिक त्योहार है। यह तलकावेरी में कावेरी नदी के पवित्र उद्गम का प्रतीक है, जहाँ हज़ारों लोग तलकावेरी स्थित ब्रह्म कुंडिके में 'तीर्थोद्भव' के चमत्कारिक रूप से प्रकट होने के साक्षी बनने के लिए एकत्रित होते हैं। कोडावा परिवार देवी कावेरी (कावेरम्मा) की पूजा करके इस त्योहार को मनाते हैं।

यह त्योहार नदी के प्रति गहरी श्रद्धा को दर्शाता है, जिसे इस क्षेत्र की जीवनदायिनी माँ माना जाता है। परिवार विशेष भोजन के लिए एक साथ इकट्ठा होते हैं, जिसमें खास कोडावा व्यंजन जैसे पोर्क करी और कडंबुट्टू (भाप में पके हुए चावल के खाद्य), होते हैं।

- कडलेकाई परिशे (मूंगफली मेला)

बेंगलुरु के बसवनगुडी (बैल या नंदी का मंदिर) में मनाया जाने वाला एक ऐतिहासिक, सालाना दो–दिवसीय उत्सव है, यह 500 साल पुरानी एक परंपरा है, जिसकी जड़ें 16वीं सदी से जुड़ी हैं। परिशे या उत्सव में मूंगफली की पहली फसल का जश्न मनाया जाता है। कार्तिक मास (नवंबर/दिसंबर) के आखिरी सोमवार को आयोजित की जानेवाला इस मेले में किसान अपनी पहली फसल नंदी को चढ़ाते हैं, ताकि उनकी फसलें सुरक्षित रहें और बैल फसलों को नुकसान नहीं पहुँचाए।

इस उत्सव के समय लगनेवाले मेले में मूंगफली की अलग–अलग किस्में बेचते हैं, स्थानीय खाद्य, खिलौने और सांस्कृतिक कार्यक्रम देखने को मिलते हैं। बेंगलूरू के दक्षिणी भाग इस समय भारी भीड़ (लगभग 12 लाख आगंतुक) से भरा होता है।

- कार्तिक या मार्गशीर्ष मास में–हुत्तरी (या पुथारी),

कर्नाटक के कोडगु का पारंपरिक फसल उत्सव, कार्तिक या मार्गशीर्ष मास–हुत्तरी (या पुथारी), भव्य समारोहों के साथ कोडवा समुदाय द्वारा मनाया जाता है। यह धान की पहली फसल की कटाई का प्रतीक है, हुत्तरी शब्द का अर्थ है "नया चावल"।

- तुलसी पूजा (तुलसी हब्बा) कार्तिक शुद्ध द्वादशी

(आमतौर पर नवंबर में) को मनाई जाती है, जो देवी तुलसी और भगवान विष्णु/कृष्ण के विवाह का प्रतीक है। यह मानसून के अंत का प्रतीक है, जिसमें वृंदावन में तुलसी को दुल्हन की तरह साड़ी, फूल, गन्ना और इमली/आंवला की शाखाओं से सजाने जैसे विशेष अनुष्ठान किए जाते हैं।

गुड़ से बना पोहा और फल चढ़ाई जाती हैं। यह पवित्रता और भक्ति की विजय का उत्सव है, जो घर–परिवार में शुभता, समृद्धि और आनंद लेकर आता है। हिंदू परंपराओं में यह विवाह के मौसम की शुरुआत का प्रतीक है।

7 . पुष्य/माघ मास – ठंड का मौसम – मकर संक्रांति

- मकर संक्रांति – जनवरी

मकर संक्रांति कर्नाटक में सबसे ज़्यादा मनाए जाने वाले त्योहारों में से एक है। यह सूर्य के मकर राशि में प्रवेश का प्रतीक है, जो सर्दियों के अंत और दिनों के लंबा होने की शुरुआत का संकेत देता है। खुशी और उत्साह के साथ मनाया जाने वाला यह त्योहार पतंग उड़ाने, अलाव जलाने और गुड़ व तिल से बनी मिठाइयों के आदान–प्रदान जैसी पारंपरिक गतिविधियों के लिए जाना जाता है,

जो एकता और अपनापन दर्शाती हैं। कर्नाटक में मनाए जाने वाले फसल त्योहारों में से एक होने के नाते, मकर संक्रांति के दिन नए चावल से मीठी और तीखी खिचड़ी पकाया जाता है, जिसका ग्रामीण समुदायों में एक विशेष स्थान है।

- कंबळा उत्सव

कंबळा हर साल सर्दियों में आम तौर पर नवंबर से मार्च तक मनाया जाता है। तटीय कर्नाटक (तुळु नाडु) में भैंसों की दौड़ का यह पारंपरिक उत्सव धान की कटाई पूरी होने के बाद शुरू होता है। यह उत्सव अच्छी फसल के लिए देवताओं का आभार व्यक्त करने और भैंसों की रक्षा के लिए मनाए जानेवाला एक अनोखा और रोमांचक त्योहार है। यह उत्सव लोगों और उनकी ज़मीन के बीच के गहरे जुड़ाव को यह त्योहार उजागर करता है।

- एळ्ळु अमावस्या

मार्गशिर मास के अमावास्य के दिन उत्तरी कर्नाटक (कलबुर्गी, यादगीर और बेलगावी जैसे ज़िलों) में मनाया जानेवाला एक पर्व दिवस है। यह एक धन्यवाद उत्सव है, जिसमें किसान अच्छी फसल के लिए प्रार्थना करते हैं और मिट्टी को तिल (एळ्ळु) और गुड़ चढ़ाते हैं।

8 . माघ/फाल्गुन मास – सर्दियों से गर्मियों की ओर बदलाव – शिवरात्रि

- महाशिवरात्रि

महाशिवरात्रि के दिन आध्यात्मिकता बिल्कुल ही एक अलग रूप ले लेती है। श्रद्धालु लोग अपने घरों में भगवान शिव की पूजा करते हैं, शिव मंदिरों में जाते हैं, पूरे दिन उपवास रखते हैं या केवल फल खाते हैं और पूरी रात जागरण करते हैं। कई धार्मिक स्थलों पर रात के चारों प्रहरों में विशेष पूजा–अर्चना और शिव नाम का जाप किया जाता है।

- महामस्तकाभिषेक

महामस्तकाभिषेक हर 12 साल में कर्नाटक के हासन जिले के श्रवणबेळगोळा में आयोजित किया जाता है। श्रवणबेळगोळा जैन धर्म का एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। यह उत्सव भगवान बाहुबली को समर्पित है और इसमें भगवान की 57 फुट ऊँची प्रतिमा का दूध, केसर और चंदन के लेप जैसी विभिन्न सामग्रियों से भव्य अभिषेक किया जाता है। दुनिया भर से हज़ारों जैन श्रद्धालु इस अद्भुत अनुष्ठान को देखने के लिए यहाँ एकत्रित होते हैं; यह अनुष्ठान शुद्धिकरण और आध्यात्मिक नवीनीकरण का प्रतीक है। कर्नाटक के सबसे प्रतिष्ठित उत्सवों में से एक होने के नाते, महामस्तकाभिषेक राज्य की समृद्ध जैन विरासत और आध्यात्मिक परंपराओं को प्रदर्शित करता है। पिछला समारोह फरवरी 2018 में संपन्न हुआ था, जबकि अगला समारोह फरवरी 2030 में निर्धारित है।

उपसंहार–त्योहार आधुनिक जीवन में खुशी और तनाव कम करने वाले कारक हैं। त्योहारों के उत्सव के माध्यम से, हमेशा यही कामना और आकांक्षा की जाती है कि प्रकृति का संरक्षण और पूजन हो, तथा मानवता के कल्याण के लिए आपसी मानवीय जुड़ाव बना रहे। कर्नाटक के ये त्योहार राज्य की गहरी जड़ों वाली परंपराओं की झलक दिखाते हैं ऊपर उल्लिखित त्योहारों के साथ और बहुत सारे पर्व कर्नाटक में है जिनका आचरण, राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं को दर्शाते हैं।

होली खुशियों और रंगों का त्योहार

अर्चना सिंह मलिक
गाज़ियाबाद कॉम्प्लेक्स

होली पर लेख लिखना एक चुनौती है, क्योंकि यह त्योहार स्याही से ज्यादा भावनाओं से लिखा जाता है। होली का त्योहार अपने आप में मानवीय, सामाजिक और दार्शनिक पहलुओं को समेटे हुए है।

मिट्टी की खुशबू, रंगों का दर्शन और मानवीय संवेदनाओं का महापर्व होली सिर्फ कैलेंडर की एक तारीख या फाल्गुन मास की एक पूर्णिमा भर नहीं है। यह भारत की उस साझा संस्कृति का धड़कता हुआ दिल है, जहाँ इंसान, प्रकृति और ईश्वर तीनों एक ही रंग में रंग जाते हैं। जब हम होली की बात करते हैं, तो हमारे जेहन में सबसे पहले गुलाल की महक और पकवानों का स्वाद आता है, लेकिन अगर हम थोड़ा गहराई में उतरें, तो पाएंगे कि होली मनुष्य के भीतर के 'अहं' को मिटाकर उसे 'अंश' (समष्टि का हिस्सा) बनाने की प्रक्रिया है। होली भारत का एक प्रमुख और अत्यंत लोकप्रिय त्योहार हैं। होली को "रंगों का त्योहार" कहा जाता है, जो पूरे भारत में हर्षोल्लास, प्रेम और भाईचारे के साथ मनाया जाता है। यह त्योहार केवल रंग खेलने का अवसर नहीं है, बल्कि यह जीवन में नई उमंग, सकारात्मकता और सामाजिक एकता का संदेश भी देता है। होली केवल रगों का त्योहार ही नहीं हैं, बल्कि यह बुराई पर अच्छाई की जीत पर प्रतीक भी हैं।

होली फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है, जो सामान्यत: फरवरी या मार्च महीने में पड़ता है। यह त्योहार बसंत ऋतु के आगमन का प्रतीक है। बसंत को ऋतुओं का राजा कहा जाता है, क्योंकि इस समय प्रकृति अपने सबसे सुंदर रूप में होती है। पेड़ों पर नए पत्ते और फूल खिलते हैं, खेतों में फसलें लहलहाती हैं और वातावरण में खुशबू फैल जाती है। होली इस प्राकृतिक परिवर्तन का उत्सव भी है। यह हमें जीवन में नई शुरुआत करने, पुरानी बातों को भूलने और सकारात्मकता को अपनाने की प्रेरणा देता है।

होली का इतिहास हजारों वर्षों पुराना है। प्राचीन समय में यह त्योहार मुख्यत: कृषि से जुड़ा हुआ था। जब किसान अपनी फसल काटते थे, तब वे इस खुशी को ईश्वर के प्रति आभार प्रकट करके मनाते थे। धीरे–धीरे यह त्योहार धार्मिक और सामाजिक रूप से भी महत्वपूर्ण बन गया। संस्कृत साहित्य में भी होली के उत्सव का वर्णन मिलता है, जहाँ लोग रंगों, फूलों और संगीत के साथ आनंद मनाते थे। यह स्पष्ट करता है कि होली केवल आधुनिक उत्सव नहीं, बल्कि भारत की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा है।

होलिका दहन–भीतर की सफाई का उत्सव

होलिका दहन होली का पहला चरण है, जिसे "छोटी होली" भी कहा जाता है। इस दिन लोग शाम के समय लकड़ियाँ और उपले इकट्ठा करके अग्नि प्रज्वलित करते हैं। लोग अग्नि की पूजा करते हैं और उसमें गेहूँ की बालियाँ, नारियल आदि अर्पित करते हैं। होली का उत्सव अग्नि से शुरू होता है। होलिका दहन का प्रतीकात्मक अर्थ बहुत गहरा है। प्रह्लाद (विश्वास और भक्ति) बच जाता है और होलिका (अहंकार और बुराई) जल जाती है। लेकिन आज के संदर्भ में, यह अग्नि हमारे भीतर की उन कुंठाओं को जलाने का अवसर है जो हमें दूसरों से अलग करती हैं।जब हम चौराहों पर लकड़ी का ढेर जलाते हैं, तो असल में हम अपने साल भर के तनाव, मनमुटाव और ईर्ष्या को उस अग्नि को सौंप रहे होते हैं। वह राख हमें यह सिखाती है कि अंत में सब कुछ मिट्टी होना है, इसलिए जब तक जीवन है, उसे राख की तरह बेजान नहीं, बल्कि आग की तरह तेजस्वी और रंगों की तरह जीवंत होना चाहिए।

रंगों वाली होली (धुलेंडी)–

होलिका दहन के अगले दिन रंगों की होली खेली जाती है, जिसे "धुलेंडी" कहा जाता है। इस दिन सुबह से ही लोग रंग, गुलाल, पानी और पिचकारियों के साथ एक–दूसरे को रंगते हैं। बच्चे, युवा और बुजुर्ग सभी इस दिन बहुत उत्साहित रहते हैं। लोग ढोल–नगाड़ों की धुन पर नाचते–गाते हैं और एक–दूसरे को मिठाई खिलाते हैं। "बुरा न मानो, होली है" जैसे वाक्य इस त्योहार की मस्ती को और बढ़ा देते हैं।

'बुरा न मानो'–एक मनोवैज्ञानिक सुरक्षा कवच

होली का सबसे प्रसिद्ध वाक्य है–"बुरा न मानो, होली है!" आधुनिक मनोविज्ञान की दृष्टि से देखें तो यह वाक्य एक 'सोशल हीलर'

(सामाजिक मरहम) की तरह काम करता है। हम इंसान अक्सर औपचारिकताओं के बोझ तले दबे रहते हैं। हम खुलकर हंसने, किसी को गले लगाने या अपनी नाराजगी जाहिर करने में झिझकते हैं।

रिश्तों की बुनावट और क्षमादान

होली रिश्तों के नवीनीकरण का पर्व है। अक्सर जीवन की आपाधापी में छोटे–छोटे मनमुटाव बड़ी खाइयों में बदल जाते हैं। सालों से बात न करने वाले दोस्त या रिश्तेदार भी होली के दिन एक–दूसरे के घर 'गुझिया' लेकर पहुँच जाते हैं।

यह त्योहार हमें 'Let Go' (जाने देने) की कला सिखाता है। किसी को गुलाल लगाना इस बात की मूक स्वीकृति है कि "जो बीत गया सो बीत गया, चलो एक नई शुरुआत करते हैं।" यह मानवीय संवेदना का वह चरम है जहाँ शब्द हार जाते हैं और स्पर्श (रंग मलना) जीत जाता है। यह परंपरा बुराई, नकारात्मकता और अहंकार को जलाने का प्रतीक है। लोग यह संकल्प लेते हैं कि वे अपने अंदर की बुराइयों को समाप्त करेंगे और एक अच्छे जीवन की ओर आगे बढ़ेंगे। होली का सामाजिक महत्व अत्यंत गहरा है। यह त्योहार समाज में प्रेम, भाईचारे और एकता का संदेश देता है। इस दिन लोग अपने पुराने गिले–शिकवे भूलकर एक–दूसरे को गले लगाते हैं और रिश्तों को मजबूत बनाते हैं। यह त्योहार हमें यह भी सिखाता है कि जीवन में खुश रहना और दूसरों को खुश रखना कितना जरूरी है। होली के दिन सभी लोग अमीर–गरीब, छोटे–बड़े एक समान हो जाते हैं, जिससे सामाजिक समानता का संदेश मिलता है।

प्रकृति का श्रृंगार और फाल्गुनी बयार

होली का समय वह है जब शीत ऋतु विदा ले रही होती है और ग्रीष्म का आगमन होने वाला होता है। टेसू (पलाश) के फूल जंगलों को केसरिया रंग से भर देते हैं। यह प्रकृति का अपना तरीका है उत्सव मनाने का।

मानव जीवन में भी यह बदलाव का संदेश है। जैसे पेड़ अपने पुराने पत्तों को त्याग कर नई कोपलों का स्वागत करते हैं, वैसे ही मनुष्य को भी पुरानी यादों और दुखों को त्याग कर नई आशाओं का स्वागत करना चाहिए। प्रकृति हमें सिखाती है कि उत्सव मनाने के लिए बहुत बड़े तामझाम की जरूरत नहीं, बस खिलने की इच्छाशक्ति होनी चाहिए।

ग्रामीण संस्कृति और लोक गीतों की मिठास

शहरों की होली भले ही 'पार्टी' और 'डीजे' तक सीमित हो गई हो, लेकिन भारत की असली आत्मा गाँवों की होली में बसती है। फाग के गीत, ढोलक की थाप और मंजीरों की झंकार यह वह संगीत है जो मिट्टी से पैदा हुआ है।ब्रज की लठमार होली हो या अवध की होली, हर क्षेत्र की अपनी एक कहानी है। ये लोकगीत सिर्फ मनोरंजन नहीं हैं, बल्कि ये हमारी पीढ़ियों के अनुभव हैं। इनमें राधा–कृष्ण का प्रेम भी है और आम आदमी का संघर्ष भी। जब लोग टोली बनाकर निकलते हैं, तो वह सामूहिकता का सबसे बड़ा उदाहरण होता है।भारत की विविधता होली के त्योहार में भी देखने को मिलती है। हर राज्य में होली मनाने का अपना अलग अंदाज होता है

ब्रज की होली–मथुरा और वृंदावन में होली का विशेष महत्व है, क्योंकि यह भगवान कृष्ण से जुड़ा हुआ है। यहाँ की होली कई दिनों तक चलती है और इसमें फूलों, रंगों और भक्ति का अद्भुत संगम देखने को मिलता है।

बरसाने की लठमार होली–बरसाना की होली विश्व प्रसिद्ध है, जहाँ महिलाएँ पुरुषों को लाठियों से खेल–खेल में मारती हैं और पुरुष ढाल से बचाव करते हैं। यह परंपरा राधा–कृष्ण की लीलाओं पर आधारित है।

उत्तर प्रदेश–मथुरा, वृंदावन और बरसाना की होली विश्व प्रसिद्ध है। बरसाना की "लठमार होली" में महिलाएँ पुरुषों को लाठियों से मारती हैं, जो एक विशेष परंपरा है।

पंजाब–यहाँ "होला मोहल्ला" के रूप में होली मनाई जाती है, जिसमें सिख समुदाय द्वारा युद्ध कौशल का प्रदर्शन किया जाता है।

पश्चिम बंगाल–यहाँ होली को "डोल जात्रा" कहा जाता है, जिसमें भगवान कृष्ण की पूजा की जाती है।

महाराष्ट्र–यहाँ लोग रंग खेलने के साथ–साथ "पुरण पोली" जैसे व्यंजन बनाते हैं।

गुजरात और राजस्थान–यहाँ होली के दौरान लोकनृत्य और संगीत का विशेष महत्व होता है।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण

होली हमें कई महत्वपूर्ण सीख देती है–बुराई पर अच्छाई की जीत, प्रेम और भाईचारे का महत्व, क्षमा और नई शुरुआत, सामाजिक समानता और एकता क्षमा और भूलने की भावना जीवन में खुशियाँ बाँटने का महत्व, मानसिक खुशी और तनाव में कमी होली के रंग, हँसी–मजाक और मेल मिलाप से मन प्रसन्न होता हैं, काम का तनाव कम होता हैं और सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती हैं, होली हमें गिले–शिकवे भूलने और लोगों से जुडने का अवसर देती हैं, दोस्ती और पारिवारिक रिश्ते मजबूत होते हैं, मनमुटाव खत्म करने का मौका मिलता हैं और लोगो के बीच अपनापन बढ़ता हैं। होली के दौरान हम दूसरों के साथ मिलकर आनंद लेते हैं। सहयोग और टीम भावना बढ़ती हैं।यह गुण हमारे दैनिक कार्यों में बहुत काम आते हैं। यह त्योहार हमें यह सिखाता है कि जीवन में रंगों की तरह विविधता और खुशियाँ भी जरूरी हैं।हमें अपने जीवन में प्रेम सहयोग और भाईचारे को बढ़ावा देना चाहिए। यह त्योहार हमें नकारात्मक छोडकर सकारात्मक अपनाने कि प्रेरणा देता हैं।

आधुनिक चुनौतियां और हमारी जिम्मेदारी

आजकल होली का स्वरूप बदलता जा रहा है। लोग डीजे, संगीत और बड़े आयोजनों के साथ होली मनाते हैं। हालांकि यह उत्सव को और आकर्षक बनाता है, लेकिन हमें अपनी पारंपरिक और सांस्कृतिक मूल्यों को भी नहीं भूलना चाहिए।हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि किसी पर जबरदस्ती रंग न डालें और सभी की भावनाओं का सम्मान करें। सुरक्षित और मर्यादित तरीके से होली मनाना ही सही तरीका है। जहां पहले लोग प्राकृतिक रगों का उपयोग करते थे, वहीं अब रसायनिक रगों का उपयोग बढ़ गया हैं, जो त्वचा और पर्यावरण के लिए हानिकारक हो सकते हैं। इसलिए हमें कोशिश करनी चाहिए कि हम प्राकृतिक रगों का ही उपयोग करें और पर्यावरण कि रक्षा करें। रासायनिक रंगों का प्रयोग और पानी की बर्बादी चिंता का विषय है। लेकिन मानवीयता का एक पहलू यह भी है कि हम अपनी खुशियों के लिए प्रकृति को दुख न पहुँचाएं।

प्राकृतिक रंगों (हल्दी, चंदन, फूलों के अर्क) का उपयोग करना न केवल हमारी त्वचा के लिए अच्छा है, बल्कि यह उस परंपरा की वापसी है जहाँ हम प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर रहते थे। इसके अलावा, होली का जश्न किसी की असुविधा का कारण न बने, इसका ध्यान रखना ही असली संस्कार है।

उपसंहार

एक स्थायी रंग की तलाश

अंततः, होली का सबसे बड़ा संदेश है– "समरसता"। रंग तो शाम तक धुल जाएंगे, लेकिन उस दिन जो अपनापन और उल्लास हम महसूस करते हैं, उसे साल भर अपने व्यवहार में बनाए रखना ही सच्ची होली है। अगर हम होली के बाद भी किसी जरूरतमंद की मदद कर सकें, किसी के उदास चेहरे पर मुस्कुराहट का रंग बिखेर सकें, तो समझिए कि हमारे जीवन में 'होली' उतर आई है। आइए, इस फाल्गुन में हम केवल अपने कपड़ों को नहीं, बल्कि अपनी सोच को भी नए और सकारात्मक रंगों से सराबोर करें।

होली वह दिन है जब समाज हमें 'बच्चा' बन जाने की अनुमति देता है। वह हुड़दंग, वह हंसी–मजाक और वह एक–दूसरे पर रंग डालना दरअसल हमारे भीतर दबी हुई मासूमियत को बाहर निकालने का तरीका है। जब चेहरे पर रंग पुत जाता है, तो व्यक्ति अपनी पहचान के बोझ से मुक्त हो जाता है। उस समय न कोई अफसर होता है, न कोई कर्मचारी, न कोई अमीर और न कोई गरीब। सब बस 'इंसान' होते हैं।

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

बीईएल राजभाषा गतिविधियां

कार्पोरेट कार्यालय

राजभाषाई निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप–समिति द्वारा 17 जनवरी, 2026 को हैदराबाद यूनिट का निरीक्षण किया गया।

रक्षा मंत्रालय के निरीक्षण

उप निदेशक (राजभाषा), रक्षा उत्पादन विभाग, रक्षा मंत्रालय द्वारा दिनांक 26.02.2026 को बीईएल पंचकुला यूनिट का, दिनांक 06.02.2026 को क्षे.का. दिल्ली का और दिनांक 05.03.2026 को क्षेत्रीय कार्यालय वैजाग का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन–बीईएल की प्रतिभागिता

दिनांक 20.01.2026 को इंदौर, मध्यप्रदेश और दिनांक 20.02.2026 को अगरतला, त्रिपुरा में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित दक्षिण मध्य, पश्चिम और उत्तरी क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में निदेशक (मानव संसाधन) के नेतृत्व में भाग लेते हुए बीईएल की राजभाषा टीम।

हिंदी अनुवाद टूल साथी पर तकनीकी वेबिनार

दिनांक 14.11.2025 को नराकास (उपक्रम), बेंगलूरु के सदस्य कार्यालयों के लिए बीईएल के वैज्ञानिकों द्वारा अभिकल्पित और विकसित हिंदी अनुवाद टूल साथी (सिस्टम असिस्टेंट फार ट्रांसलेशन इन हिंदी–SATHI) पर तकनीकी वेबिनार का आयोजन किया गया।

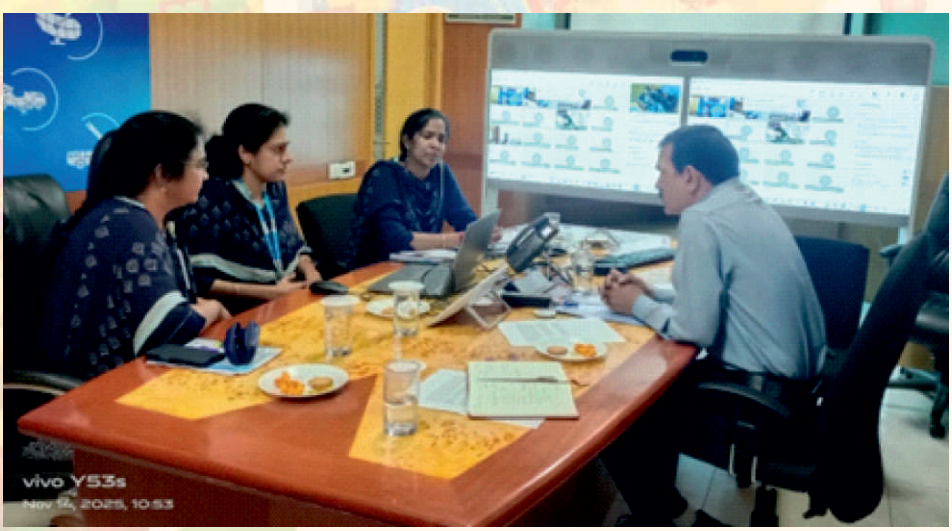

विश्व हिंदी दिवस

दिनांक 12.01.2026 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर कार्पोरेट कार्यालय के कर्मचारियों के लिए 'विविधा' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

कृष्णा सोबती व्याख्यानमाला

दिनांक 24.12.2025 को कृष्णा सोबती हिंदी व्याख्यानमाला के अंतर्गत श्री विश्वनाथ गुर्लहोसुर, टेडेक्स स्पीकर "परिवार और कार्यालय के बीच संतुलन" विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

दिनांक 13.03.2026 को कृष्णा सोबती हिंदी व्याख्यानमाला के अंतर्गत डॉ. के सी गुरुदेव, वरिष्ठ प्रोफेसर एवं प्रमुख– नेफ्रोलॉजी, फार्टिस अस्पताल, बेंगलूरु "क्या आप अपने गुर्दों के बारे में जानते हैं?" विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

दिनांक 11 मार्च, 2026 को बीईएल कार्पोरेट कार्यालय में कर्मचारियों के लिए अग्नि जागरूकता कार्यक्रम हिंदी और कन्नड़ भाषा में आयोजित किया गया।

- राजभाषा कार्यान्वयन के लक्ष्यों को प्राप्त करने की दृष्टि से भारत को 03 क्षेत्रों में (क, ख और ग) वर्गीकृत किया गया है। 'क' क्षेत्र में हिंदी भाषी राज्य, 'ख' क्षेत्र में हिंदी सरीखे राज्य और 'ग' क्षेत्र में हिंदीतर भाषी राज्य/ संघ शासित राज्य आते हैं।

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

बेंगलूरु कॉमप्लेक्स

दिनांक 10 जनवरी 2026 को गुणज्योति सभागार, क्यू ए भवन में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया। समारोह की अध्यक्षता श्रीमती कविता शर्मा, अपर महाप्रबंधक (प्रशासन/मा.सं.) ने की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रुप में डॉ. श्रीनारायण, निदेशक सेवानिवृत (हि.शि.सं.) उपस्थित थे।

दिनांक 21.02.2026 को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती गरिमा सक्सेना, लेखिका को आमंत्रित किया गया।

कार्यशाला की झलकियां

चेन्नई यूनिट

हिंदी शिक्षण योजना, चेन्नई के सहायक निदेशक कर्मचारियों को हिंदी प्रशिक्षण देते हुए

हिंदी परीक्षा नवंबर 2025 में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले कार्मिकों को महाप्रबंधक पुरस्कार प्रदान करते हुए

हिंदी कार्यशाला

हिंदी प्रोत्साहन योजना के विजेता प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

हैदराबाद यूनिट

दिनांक 10.01.2026 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी से संबंधित डॉक्युमेंट्री फिल्म दिखाया गया और मो. कमालुद्दीन (से.नि.) हि.शि.यो के संचालन में व्याख्यान का आयोजन करते हुए यूनिट में भव्य कार्यक्रम संपन्न हुआ इसमें लगभग 60 कर्मचारी उपस्थित हुए। दि.26.02.2026 को एनआईसी–एमएसएमई में आयोजित भारती–बहुभाषी टूल्स सारथी पर पूर्ण दिवसीय कार्यशाला में कार्यालय से उपप्रबंधक श्री सुरेश कुमार वी और परियोजना अधिकारी राजभाषा श्री पिंटु सिंह ने भाग लिया। दि. 13.03.2026 को आईआरओडीएआई, हैदराबाद में आयोजित राजभाषा तकनीकी संगोष्ठी में बीईएल से उप प्रबंधक (रा.भा.) और परियोजना आधिकारी राजभाषा ने प्रतिभागिता की और इसमें ध्येय वाक्य के लिए श्री सुरेश कुमार वी उप प्रबंधक(रा.भा) को द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। दिनांक 17.01.2026 को संसदीय राजभाषा समिति द्वारा भारत इलेट्रॉनिक्स लिमिटेड, हैदराबाद, का निरीक्षण सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

मचिलिपट्नम यूनिट

मचिलिपट्टणम यूनिट ने राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए 'राजभाषा–यन्त्र, तन्त्र, सर्वत्र' नामक पहल शुरू की हैं। इस पहल के तहत, विभागों के नामों के साथ–साथ प्रतिदिन तीन भाषाओं–क्षेत्रीय, राजभाषा और अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में एक शब्द सीखें को प्रदर्शित किया जाता है, ताकि सभी कर्मचारियों को रोज़ एक शब्द सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। इसके अलावा, भारतेन्दु हरिश्चंद्र, महादेवी वर्मा, अटल बिहारी वाजपेयी और निराला जैसे प्रसिद्ध हिंदी लेखकों के प्रेरणादायक उद्धरण विभागाध्यक्षों के कार्यालयों में प्रदर्शित किए जाते हैं। ये प्रयास हिंदी को बढ़ावा देने और भाषा सीखने की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए किए गए सार्थक प्रयास हैं।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का आयोजन

दिनांक 21.02.2026 को सम्पन्न अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस समारोह के दौरान गृह–पत्रिका दिव्य–दृष्टि का विमोचन किया गया।

नवी मुंबई यूनिट

राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों द्वारा इकाई की गृह पत्रिका 'नया सवेरा' का विमोचन।

दिनांक 07.11.2025 को आयोजित अखिल बीईएल राजभाषा सम्मेलन में उपस्थित राजभाषा अधिकारियों का यूनिट भ्रमण

कार्यशाला

पुणे यूनिट

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की झलकियां

इसके अलावा यूनिट में दि. 10.01.2026 को विश्व हिंदी दिवस का भव्य आयोजन किया गया। उक्त समारोह में कर्मचारियों द्वारा स्वरचित काव्यपाठ तथा भाषण हिंदी में किए गए। नवनियुक्त उप इंजीनियरों को दि. 11.12.2025 को 'राजभाषा जागरुकता' विषय पर विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया।

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

गाज़ियाबाद कॉमप्लेक्स

राजभाषा संगोष्ठी

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली द्वारा यूनिट में एक दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गई जिसमें लगभग 100 कार्मिकों ने भाग लिया।

कॉर्पोरेट राजभाषा निरीक्षण

दिनांक 01 दिसंबर, 2025 को कॉर्पोरेट कार्यालय द्वारा यूनिट का सफलतापूर्वक राजभाषा निरीक्षण किया गया।

नराकास छमाही बैठक

दिनांक 03 दिसंबर, 2025 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) गाज़ियाबाद की छमाही बैठक में बीईएल, गाज़ियाबाद को वर्ष 2024–25 के दौरान हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।

नराकास 'अंत्याक्षरी' प्रतियोगिता

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) गाज़ियाबाद के सदस्य कार्यालयों हेतु भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड, गाज़ियाबाद द्वारा 'अंत्याक्षरी' प्रतियोगिता का आयोजन कर विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

कोटद्वार यूनिट

यूनिट में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर 10.01.2026 को मानव संसाधन विकास केंद्र में स्वरचित कविता पाठ रखा गया जिसमें कार्मिकों, प्रशिक्षु / परियोजना इंजीनियरों तथा शिक्षुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। किस्सागोई की कला को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से दि. 17.12.2025 को राजकीय प्राथमिक विद्यालय, सिगड्डी, कोटद्वार के बच्चों के साथ 'कहो कहानी' हिंदी कार्यक्रम आयोजित किया गया। इससे संबंधित कुछ झलकियां–

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

पंचकुला यूनिट

पंचकुला यूनिट में राजभाषा कार्यकलाप की झलकियां–

केंद्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला– बेंगलूरु

प्रशासनिक कार्यों के साथ–साथ तकनीकी क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के उद्देश्य से, विश्व हिंदी दिवस–२०२६ के उपलक्ष्य पर दिनांक 10 जनवरी, 2026 को सीआरएल–बेंगलूरु द्वारा कार्यपालकों के लिए हिंदी में तकनीकी लेख प्रस्तुतीकरण संगोष्ठी का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य तकनीकी एवं वैज्ञानिक विषयों पर हिंदी भाषा में विचारों के आदान–प्रदान को प्रोत्साहित करना तथा राजभाषा हिंदी के प्रयोग को वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्र में बढ़ावा देना था।

उप महाप्रबंधक और उससे ऊपर के उच्चधिकारियों के लिए दिनांक 24.03.2026 को विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्री अनिर्बान कुमार विश्वास, उप निदेशक (कार्यान्वयन) दक्षिण, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गृह मंत्रालय इस कार्यक्रम के अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित थे। प्रधान वैज्ञानिक सीआरएल और मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी ने उप निदेशक का हार्दिक स्वागत किया तथा पीडीआईसी और केंद्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला द्वारा किए जाने वाले मुख्य कार्यों के बारे में जानकारी दी।

केंद्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला–गाज़ियाबाद

कार्यपालक निदेशक श्री अनूप कुमार राय दीप प्रज्वलन व नराकास गाज़ियाबाद उपक्रम के अध्यक्ष का स्वागत करते हुए

कार्यपालक निदेशक श्री अनूप कुमार राय, उपनिदेशक (कार्यान्वयन) तथा नराकास गाज़ियाबाद उपक्रम के अध्यक्ष व अन्य पदाधिकारी राजभाषा पत्रिका 'उत्कर्ष' के 26 वें अंक का विमोचन करते हुए

कार्यपालक निदेशक श्री अनूप कुमार राय व अन्य अधिकारी नराकास गाज़ियाबाद उपक्रम के अध्यक्ष से उत्कृष्ट राजभाषा कार्य हेतु द्वितीय पुरस्कार ग्रहण करते हुए

विश्व हिंदी दिवस पर आयोजित प्रतियोगिताओं में उपस्थित बच्चे, उनके परिजन व अधिकारीगण

आइए हिंदी माध्यम से कन्नड़ा सीखें...

उसे देखो	ಅವನನ್ನು ನೋಡು.	अवनन्नु नोडु
कभी मत भूलो	ಎಂದಿಗೂ ಮರೆಯಬೇಡ.	एंदिगू मरेयबेड़ा
ज़रूर आना	ಖಂಡಿತವಾಗಿ ಬಾ.	खंडितवागि बा
यह तुम्हारे लिए है	ಇದು ನಿನಗಾಗಿ.	इदु निनगागि
दूध लेकर आओ	ಹಾಲು ತಗೊಂಡು ಬಾ.	हालु तगोंडु बा
दूध गरम करके दो	ಹಾಲು ಬಿಸಿ ಮಾಡಿ ಕೊಡಿ.	हालु बिसि माडि कोडि
जोर से बोलो	ಜೋರಾಗಿ ಹೇಳು.	जोरागि हेळु
क्या कहना है?	ಏನು ಹೇಳಬೇಕು?	एनु हेळबेकु?
जो भी हो	ಯಾರೆ ಆಗಿರಲಿ.	यारे आगिरलि
हाथ छोड़ो	ಕೈ ಬಿಡು.	कई बिडु
हिम्मत से	ಧೈರ್ಯದಿಂದ.	धैर्यदिंदा।
क्या करें?	ಏನು ಮಾಡೋದು.	एनु माडोदु?
गुस्सा मत करो	ಕೋಪ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳ ಬೇಡ.	कोपा माडिकोळळ बेडा
कैसे करूं?	ಹೇಗೆ ಮಾಡಲಿ?	हेगे माडलि?
पूछो मत	ಕೇಳಬೇಡ.	केळबेडा
मैं घर जा रहा हूँ	ನಾನು ಮನೆಗೆ ಹೋಗುತ್ತಿದ್ದೇನೆ.	नानु मनेगे होगुत्तिद्देने
मेरी मदद करो	ನನಗೆ ಸಹಾಯ ಮಾಡು.	ननगे सहाय माडु
मुझे भूख लग रही है।	ನನಗೆ ಹಸಿವು ಆಗುತ್ತಿದೆ.	ननगे हसिवु आगुत्तिदे
मैं कॉलेज नहीं जाऊँगा।	ನಾನು ಕಾಲೇಜಿ ಗೆ ಹೋಗಲ್ಲ.	नानु कॉलेजिगे होगल्ला
वह घर पर नहीं है।	ಅವನು ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಇಲ್ಲ.	अवनु मनेयल्लि इल्ला
मुझे धमकी मत दो।	ನನಗೆ ಬೆದರಿಕೆ ಹಾಕಬೇಡ.	ननगे बेदरिके हाकबेड़ा
मैं जल्द बाजी में भूल गई / गया।	ನಾನು ಅವಸರದಲ್ಲಿ ಮರೆತು ಹೋದೆ.	नानु अवसरदल्लि मरेतु होदे
अभी अपना फोन रखो।	ಈಗಲೇ ನಿನ್ನ ಫೋನ್ ಇಡು.	ईगले निन्न फोन इडु

वर्ग पहेली भरें, शब्द ज्ञान बढ़ाएं...

1	2	3	■	4	5	6		■
7			■	8			■	9
10		■	11	■	12			
	■	13			■		■	
14	15	■		■	16		17	
■	18		■	19				■
20		■	21			■	22	23
24		25		■	26	27	■	
	■	28			■	29		

बाएं से दाएं...1. छोटा भाई (3), 4. सज्जनता, नम्रता (4), 7. गांव की सीमा (3), 8. चंदन, गंधसार (3), 10. बेल, वल्लरी(2), 12. बहुविध, अनेक प्रकार का (4), 13. जलाना (3), 14. लेवल, सतह (2), 16. गीलापन, ठंडक, नमी, शीतलता (4), 18. संग (2), 19. लूट का माल प्राप्त होना (4), 20. निशा, रजनी (2), 21. खोज (3), 22. आर्द्र, गीला (2), 24. नाश्ता, कलेवा (2–2), 26. नासिका (2), 28. नेत्र, आंख (3), 29. मनुष्य, मानव (3)

ऊपर से नीचे...1.दुर्भिक्ष पीड़ित, भूखमरी से पीड़ित (3–2), 2. उर्दू अक्षरों में लगाई जानेवाली बिंदी (3), 3. मूल नींव (2), 4. संध्या, सांझ (2), 5. निगलना, हड़प जाना (3), 6. जो देखने में सुंदर हो (6), 9. दाएं व बाएं बाजू लेटना (4), 11. भगिनी (3), 15. पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में छठा लोक (2–2), 16. काटना, कतरना (4), 17. बोलना, कहना (3), 19. मुसीबत, आफत (2), 20. राजाओं का सा (3), 21. पुत्र, बेटा (3), 23. केवल, मात्र (3), 25. बीड़ा, तांबूल (2), 27. अल्प, थोड़ा (2)

(उत्तर के लिए पृष्ठ सं. 86 देखें।)

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

नवप्रभा – हर अंक विशेषांक

6

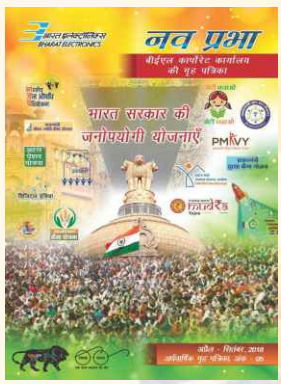

भारत सरकार की जनोपयोगी योजनाएं

7

बीईएल में महिला सशक्तिकरण

8

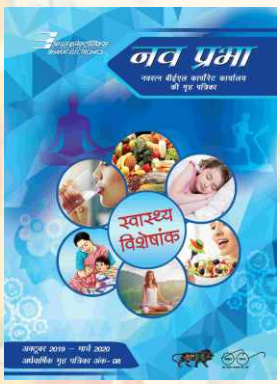

स्वास्थ्य

9

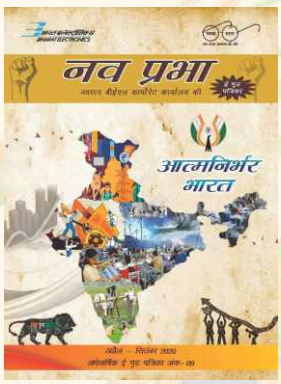

आत्मनिर्भर भारत

10

भारत की नई शिक्षा नीति

11

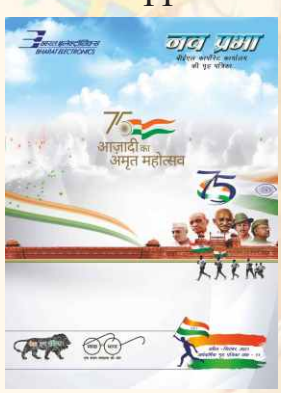

आज़ादी का अमृत महोत्सव

12

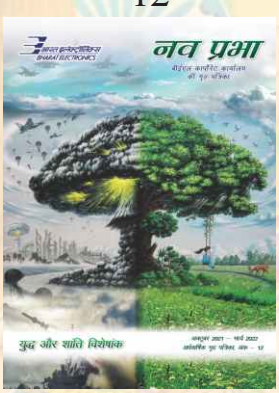

युद्ध और शांति

13

भारत की आज़ादी में हिंदी की भूमिका

14

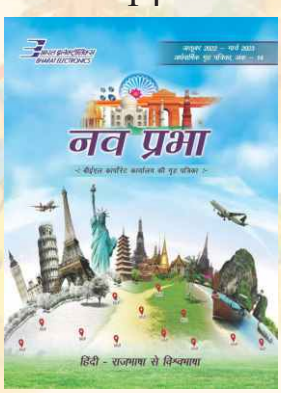

हिंदी राजभाषा से विश्वभाषा

15

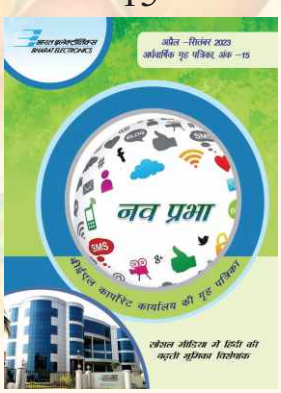

सोशल मीडिया में हिंदी की बढ़ती भूमिका

16

राजभाषा हिंदी और राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के महती प्रयास

17

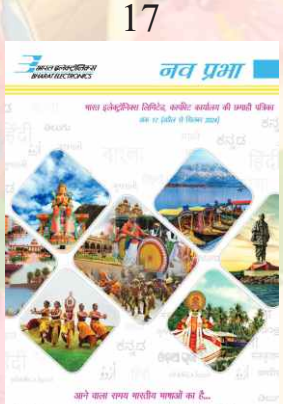

आनेवाला समय भारतीय भाषाओं का है...

18

हिंदी के प्रचार–प्रसार में हिंदी सिनेमा का योगदान

19

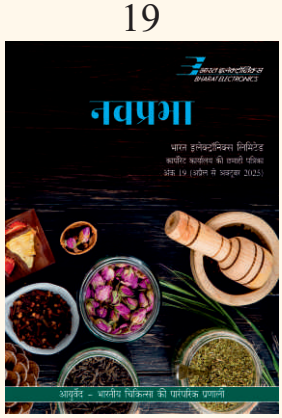

आयुर्वेद – भारतीय चिकित्सा की पारंपरिक प्रणाली

हमारे हिंदी साहित्यकार

मुंशी प्रेमचंद

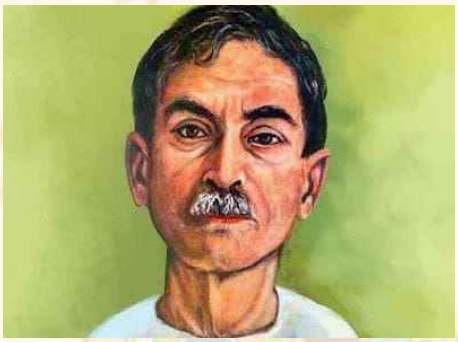

मुंशी प्रेमचंद भारत के उपन्यास सम्राट माने जाते हैं जिनके युग का विस्तार सन् 1880 से 1936 तक है। वे एक सफल लेखक, देशभक्त नागरिक, कुशल वक्ता, जिम्मेदार संपादक और संवेदनशील रचनाकार थे। बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में जब हिन्दी में काम करने की तकनीकी सुविधाएं नहीं थीं फिर भी इतना काम करने वाला लेखक उनके सिवा कोई दूसरा नहीं हुआ।

प्रेमचंद उनका साहित्यिक नाम था और बहुत वर्षों बाद उन्होंने यह नाम अपनाया था। उनका वास्तविक नाम 'धनपत राय' था। जब उन्होंने सरकारी सेवा करते हुए कहानी लिखना आरंभ किया, तब उन्होंने नवाब राय नाम अपनाया। बहुत से मित्र उन्हें जीवन–पर्यंत नवाब के नाम से ही संबोधित करते रहे। जब सरकार ने उनका पहला कहानी–संग्रह, 'सोजे वतन' जब्त किया, तब उन्हें नवाब राय नाम छोड़ना पड़ा। बाद का उनका अधिकतर साहित्य प्रेमचंद के नाम से प्रकाशित हुआ।

प्रेमचंद की रचनाओं में तत्कालीन इतिहास बोलता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में जन साधारण की भावनाओं, परिस्थितियों और उनकी समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया। उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा, लेख, सम्पादकीय, संस्मरण आदि अनेक विधाओं में साहित्य की सृष्टि की, किंतु प्रमुख रूप से वह कथाकार हैं। उन्हें अपने जीवन काल में ही उपन्यास सम्राट की पदवी मिल गई थी। उन्होंने कुल 15 उपन्यास, 300 से कुछ अधिक कहानियां, 3 नाटक, 10 अनुवाद, 7 बाल–पुस्तकें तथा हज़ारों पृष्ठों के लेख, सम्पादकीय, भाषण, भूमिका, पत्र आदि की रचना की। उन्होंने गोदान जैसे कालजयी उपन्यास की रचना की जो कि एक आधुनिक क्लासिक माना जाता है।

अपने जीवन के अंतिम दिनों के एक वर्ष को छोड़कर उनका पूरा समय वाराणसी और लखनऊ में गुजरा, जहां उन्होंने अनेक पत्र–पत्रिकाओं का संपादन किया और अपना साहित्य–सृजन करते रहे। 8 अक्टूबर, 1936 को जलोदर रोग से उनका देहावसान हुआ। प्रेमचंद ने अपने जीवन के कई अद्भुत कृतियां लिखी हैं। तब से लेकर आज तक हिन्दी साहित्य में ना ही उनके जैसा कोई हुआ है और ना ही कोई और होगा।

उत्तर

1 अ	2 नु	3 ज	■	4 शा	5 ली	6 न	ता	■
7 का	क	ड़	■	8 म	ल	य	■	9 क
10 ल	ता	■	11 ब	■	12 ना	ना	का	र
ग्र	■	13 द	ह	न	■	भि	■	व
14 स्त	15 र	■	न	■	16 त	रा	17 व	ट
■	18 सा	थ	■	19 ब	रा	म	द	■
20 रा	त	■	21 त	ला	श	■	22 न	23 म
24 ज	ल	25 पा	न	■	26 ना	27 क	■	ह
सी	■	28 न	य	न	■	29 म	नु	ज

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

बी ई एल गीत

देश की रक्षा अपना फर्ज़ है, भारत की है शान
बी ई एल ! बी ई एल !
भूमि जल हो या हो आसमान,
वीर जवानों के साथ खड़े हरदम,
अंधेरे में भी हम राह को रोशन करें
बी ई एल ! बी ई एल ! बी ई एल !
दशा दिशा का पता बताएं शान से खड़ी रेडारें,
कंधों पर सजते हैं संचार यंत्र हमारे,
जहाज़ हो या अंतरिक्ष यान उनमें तंत्र हमारे,
शिक्षण हो या प्रसारण साथ है यंत्र हमारे,
जन जन का सहयोग करें हम,
मतदान को आसान करें हम,
नावू बी ई एल ! मेमू बी ई एल !
आपण बी ई एल ! नांगल बी ई एल !
आमरा बी ई एल ! हम है बी ई एल !
बी ई एल ! बी ई एल ! बी ई एल !

71 YEARS IN TRANSFORMING TECHNOLOGY

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड
BHARAT ELECTRONICS LIMITED

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS
QUALITY, TECHNOLOGY, INNOVATION

अगली पीढ़ी की प्रौद्योगिकी के साथ

भारत के रक्षा क्षेत्र को

सशक्त बनाते हुए

• मिलिटरी कम्यूनिकेशन • रेडार • नेवल सिस्टम • सी4 आई सिस्टम
• मिसाइल सिस्टम • इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर • एवियोनिक्स • ऑप्टो इलेक्ट्रॉनिक्स
• टैंक इलेक्ट्रॉनिक्स • वेपन सिस्टम एवं गन अपग्रेड • इलेक्ट्रॉनिक फ्यूज़
• होमलैंड सुरक्षा और स्मार्ट सिटी

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड

पंजीकृत एवं कार्पोरेट कार्यालय - आउटर रिंग रोड,
नागवारा, बेंगलूरु, - 560 045, भारत
टेलीफोन +91 80 25039300 | फैक्स +91 80 25039291
टोल फ्री – 1800 425 0433 / सीआईएन L32309KA1954G0I000787
media@bel.co.in / www.bel-india.in

भारत की अग्रणी रक्षा कंपनी